हम सब एक दूसरे पर निर्भर

श्रीराम शर्मा आचार्य

हम सब एक दूसरे पर निर्भर

▼

लेखक :
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

▼

प्रकाशक
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-3
फोन:-(0565) 2530399,2530128

*

२००७

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	संतुलन और गतिशीलता का एकमात्र आधार	३
२.	अपनापन विकसित कीजिए	१४
३.	सुख, भोग में नहीं—त्याग, परोपकार में है	१६
४.	केवल स्वार्थ ही न सोचते रहिए	३०
५.	दृश्य जगत् की परमार्थ प्रेरणा	५२
६.	उपयोगिता नहीं, परमार्थपरायणता	७४
७.	प्राणि परिवार में सहयोग-सद्भाव बढ़ाया जाए	८८
८.	मानवेतर प्राणियों का संसार—पारिवारिक जीवन	६५

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतुलन और गतिशीलता का एकमात्र आधार

सृष्टि में चारों ओर, जिधर भी दृष्टि दौड़ाई जाए, एक ही बात दृष्टिगोचर होगी कि सब कुछ शांत, सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध ढंग से चल रहा है। इस सुव्यवस्था और क्रमबद्ध गतिशीलता का एक प्रमुख आधार है—दूसरों के लिए अपनी सामर्थ्य और विशेषताओं का उपयोग—समर्पण। सृष्टि का कण-कण किस प्रकार अपनी विभूतियों का उपयोग दूसरों के लिए करने की छूट दिए हुए हैं—यह पग-पग पर देखा जा सकता है। शरीर की व्यवस्था और जीवन चेतना किस प्रकार जीवित बनी रहती है—इसी का अध्ययन किया जाए तो प्रतीत होगा कि स्थूल शरीर के क्रियाकलाप स्वेच्छया संचालित नहीं होते, बल्कि कोई परमार्थ चेतना संपन्न, दूसरों के लिए अपना उत्सर्ग करने की प्रवृत्ति वाले कुछ विशिष्ट तत्त्व उसमें अपनी विशिष्ट भूमिका निबाहते हैं।

कुछ समय पूर्व यह समझा जाता था कि रक्त-मांस का पिंड शरीर आहार-विहार द्वारा संचालित होता है। यह तो पीछे मालूम पड़ा कि आहार शरीर रूपी इंजिन को गरम बनाए रहने के लिए ईंधन मात्र का काम करता है। उस आधार पर यह भी पाया गया कि पेट, हृदय और फेफड़ों को संचालक तत्त्व नहीं माना जा सकता। शरीर के समस्त क्रियाकलापों का संचालन मूलतः चेतन और अचेतन मस्तिष्कों द्वारा होता है, उन्हीं की प्रेरणा से विविध अंग अपना-अपना काम चलाते हैं। अस्तु, स्वास्थ्य बल एवं बुद्धिबल को विकसित करने के लिए मस्तिष्क विद्या के गहरे पर्तों का अध्ययन आवश्यक समझा गया है और अभीष्ट परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए उसी क्षेत्र को प्रधानता दी गई। पिछले दिनों जीव विज्ञानियों ने शरीर शोध अन्वेषण की ओर से विरत होकर अपना मुँह मनःशास्त्र की ऊहापोह पर केंद्रित किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब एक और नया रहस्य सामने आ खड़ा हुआ है—हारमोन ग्रंथियों का। उनसे अत्यंत स्वल्प मात्रा में निकलते रहने वाले स्राव ऐसे महत्त्वपूर्ण हैं, जो केवल शारीरिक ही नहीं, मानसिक स्थिति को भी प्रभावित करते हैं और उनमें आश्चर्यचकित करने वाले उतार-चढ़ाव उत्पन्न करते हैं। ये हारमोन, चेतन या अचेतन मस्तिष्क से भी प्रभावित नहीं होते। इनको घटाने-बढ़ाने में एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुँचाने के परंपरागत प्रयास प्रायः असफल ही हो चुके हैं। एक शरीर से निकालकर दूसरे शरीर में प्रवेश कराने पर भी इन हारमोनों की वृद्धि, न्यूनता अथवा नियंत्रण-संतुलन नहीं प्राप्त किया जा सकता। लगता है इनका उद्‌भव और विकास ही शरीर की पुष्टि, अभिवृद्धि, सुंदरता और संतुलन के लिए होता है। जीवन की सूक्ष्मतम सत्ता बड़ी विलक्षण और रहस्यपूर्ण है। अब तक ऐसी सूक्ष्म जीवन की इकाई का पता नहीं लगाया जा सका, जो अंतिम (एब्सोल्यूट) और शाश्वत (इंपार्शिअल) हो। किंतु उसका पता लगाते-लगाते वैज्ञानिकों ने जिन सूक्ष्मताओं का पता लगा लिया है, वह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है।

वैज्ञानिकों के संसार में जीवन की जिन सूक्ष्मतम इकाइयों का पता चल पाया है, उनमें से 'डायटम' सबसे छोटा होता है। किंतु इसमें भ्रमात्मक प्रक्रिया है। 'डायटम' को कुछ वैज्ञानिक जीवाणु मानते हैं, कुछ उसे वनस्पति जगत् का सबसे छोटा कोश (सेल) मानते हैं। इसके बाद सबसे सूक्ष्म इकाई विषाणु (वायरस) है, यह इतना छोटा होता है कि अब तक खोजे गए लगभग ३०० वायरसों में से पोलियो वायरस के १०००००००००००००००० (दस शंख) कण केवल एक छोटी-सी पिंगपोंग की गेंद में आ जायेंगे। विषाणु इतने सक्रिय होते हैं कि १९१८ में आए एन्फ्लूएंजा में उसने थोड़े ही दिनों में दो करोड़ स्त्री-पुरुषों और बच्चों को मृत्यु के द्वार पर पहुँचा दिया। सूक्ष्मतम की प्रबलतम शक्ति का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है। कदाचित् हमने भी अपने आपको बड़ा प्रदर्शित करने की भूल न की होती और इतने लघु होते गए होते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि संसार की सबसे छोटी इकाई में आत्मसात् हो गए होते, तो हमारी भी शक्ति ऐसी ही होती। उससे लाखों लोगों का हितकर सकने की स्थिति में होते।

बड़ी आकृति वाले थलचर प्राणियों से ही हमारा परिचय है। इससे आगे भी कहीं जीवधारियों का अस्तित्व है और उनकी भी कोई अपनी दुनिया है, इस तथ्य की बहुत कम लोगों को जानकारी होती है। पृथ्वी पर रेंगने वाले प्राणियों की कितनी अधिक जातियाँ और उप-जातियाँ हैं—उनकी आकृति-प्रकृति क्या है ? उनके सोचने और कार्य करने का उपक्रम क्या है ? उन्हें किन साधनों से गुजारा करना पड़ता है और किन परिस्थितियों में रहना पड़ता है, इसकी जानकारी रखना तो दूर, ठीक तरह कल्पना कर सकना भी हमारे लिए संभव नहीं।

हमारी चेतना मानवी मस्तिष्क—परिस्थिति एवं साधनों के अनुरूप ढली है, अस्तु उसे जो सीमित दृष्टिकोण एवं ज्ञान मिला है, उसी को लेकर काम चलाना पड़ता है, फिर अन्य प्राणियों की विलक्षण दुनिया के बारे में सही कल्पना कर सकना कैसे संभव हो ? यही बात जानकारियों के संबंध में भी है। आँखों से देखे जा सकने वाले जल-जीवों की जानकारी—उतनों तक ही सीमित है, जो आँखों के सामने आते और अपना परिचय देते रहते हैं। समुद्र तल में ही निर्वाह करने वाले जल-जीवों की नगण्य जितनी जानकारियाँ ही हैं। उनकी प्रकृति और परिस्थितियों का पता लगाने के लिए जैसा चिंतन चाहिए—जैसे उपकरणों और साधनों की आवश्यकता है, उन्हें जुटाना अंतरिक्ष यंत्रों से भी कठिन सिद्ध होगा। इतने पर भी यह एक तथ्य है कि अपनी धरती की 'दुनिया' उतनी छोटी नहीं है जितनी कि मनुष्यों द्वारा सोची और जानी गई है। इसी धरती पर असंख्य जाति के जीवधारी निवास करते हैं। उनकी संख्या भी इतनी बड़ी है कि तुलनात्मक दृष्टि से ६०० करोड़ मनुष्यों का संख्या बल बहुत ही नगण्य एवं उपहासास्पद प्रतीत होगा। संख्या बल के अतिरिक्त उनकी प्रकृति, आवश्यकता, पारस्परिक सहयोग व्यवस्था, निर्वाह, विनोद, वंश वृद्धि, प्रसन्नता, आयुष्य आदि की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियाँ इतनी विचित्र मिलेंगी, जिन्हें देखते हुए उन्हें मनुष्यों की 'दुनिया' से सर्वथा भिन्न एवं विलक्षण स्तर का कहा जा सकता है। आश्चर्य इस बात का है कि अपनी धरती पर असंख्य प्राणियों की, असंख्य स्तर की चित्र-विचित्र दुनिया बसी हुई है। असंख्य सभ्यताएँ फल-फूल रही हैं। असंख्य जीवन विधाओं का कार्यान्वयन हो रहा है, किंतु हम अपनी ही दुनिया तक सीमित हैं और उस सीमित क्षेत्र को ही सब कुछ मानकर मूर्खों की दुनिया में रहने की उक्ति चरितार्थ कर रहे हैं।

सत्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में वैज्ञानिक ऑनोंफान ल्यूवेनाक ने सूक्ष्म जीवों को स्वनिर्मित लैंसों से देखा। उन्नीसवीं शताब्दी में लुई पाश्चर ने सूक्ष्म जीवों की दुनिया की जानकारी प्राप्त कर उनकी भूमिका को प्रयोग द्वारा दिखाया। फिर यह सिलसिला बढ़ता ही गया। कोरव, मैक्निरवोव, फिनले, फ्लेमिंग द्वारा विकसित सूक्ष्म जीव विज्ञान आज विशाल अध्ययन-अन्वेषण का क्षेत्र बना है।

सूक्ष्म जीव इतने छोटे होते हैं कि आँखों से उन्हें नहीं देखा जा सकता। पास-पास रखने पर साधारणतः २५ हजार सूक्ष्म जीव एक इंच की जगह में समा जायेंगे। इनकी आकृति और वजन दोनों के आधार पर कई जातियाँ हैं। सामान्यतः बीस अरब सूक्ष्म-जीवियों का वजन एक खस-खस के दाने के बराबर होता है।

सूक्ष्मजीवी प्रत्येक जगह पर मिलते हैं। यहाँ तक कि ये ऐसे स्थानों पर भी पाए गए हैं, जहाँ जीवन की कोई संभावना नहीं मानी गई थी। पृथ्वी के वायुमंडल की ऊपरी तह में, दक्षिणी ध्रुवों की बर्फ में, गरम सोतों के खौलते प्रवाह में, नाभिकीय रिएक्टरों की शीतलन प्रणालियों में भी इन्हें पाया गया है।

'मृत सागर' से साफ पानी तक, स्तनपाइयों की आँतों से लोहे के जमींदोज नलों की सतहों तक इनका बोलबाला है। प्रतिदिन अनेक सूक्ष्मजीवी हमारे शरीर के भीतर नाक और मुँह के रास्ते से घुसते हैं। वे हमारी त्वचा पर भी प्रहार करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन सूक्ष्मजीवियों की असंख्य जातियाँ हैं। कुछ सूक्ष्मजीवी अम्लीय माध्यम में रहते हैं, तो कुछ क्षारीय। कुछ ऊँचे तापक्रम पर, तो कुछ नीचे तापक्रम पर। कुछ हवा के बिना नहीं जी सकते, तो कुछ हवा में ही नहीं जी सकते, बिना हवा के मजे में रह लेते हैं। यह माध्यम क्या है ? जीवाणु जिस वस्तु में जन्म लेते, पलते, पनपते हैं, वही उनका माध्यम है। ये छोटे इतने होते हैं कि किसी भी द्रव माध्यम के एक घन सेंटीमीटर में लगभग १ करोड़ जीवाणु आराम से रह लेते हैं। जिस माध्यम में ये जीवाणु रहते हैं, उसी से आहार प्राप्त करते हैं। उसी माध्यम में ये बढ़ते, बच्चे पैदा करते और बलवान् बनते हैं।

इनके बढ़ने और बच्चे पैदा करने का ढंग दिलचस्प है। प्रत्येक जीवाणु एक कोशिका भी है और एक जीव भी। इसीलिए यह एक कोशिकीय जीव कहलाता है। एक सूक्ष्मजीवी थोड़ा-सा लंबा होकर स्वयं दो भागों में विभक्त हो जाता है। ये दोनों ही भाग मूल कोशिका के ही समान दो पृथक्-पृथक् सूक्ष्मजीवी बन जाते हैं। इनकी बढ़ने की रफ्तार भी गजब की होती है। एक सूक्ष्मजीवी चौबीस घंटे में ७० पीढ़ियाँ पैदा कर सकता है। विषूचिका का एक सूक्ष्मजीवी एक दिन में५ अरब ८० करोड़ की संख्या में हो जाता है। तभी तो इस रोग के अधिकांश रोगी देर होने पर बच नहीं पाते। पोषक माध्यम की कुछ ही बूँदों में सूक्ष्मजीवियों की ७ अरब आबादी का आवास संभावित होता है। एक सूक्ष्मजीवी द्वारा स्वयं को दो भागों में बाँटकर फिर पृथक्-पृथक् यही क्रम अपनाते हुए बढ़ते जाने के कारण इनकी वंशवृद्धि की क्रिया को 'विखंडन-क्रिया द्वारा वंशवृद्धि' कहा जाता है।

अब तक मनुष्य के सहायकों में श्रम, दूध, बाल, चर्म, मांस आदि देने वाले प्राणियों की गणना होती थी और वनस्पति वर्ग को छाया, अन्न, शाक, फल, फूल, लकड़ी आदि देने वाले सहायकों में गिना जाता था। प्राणियों और वनस्पतियों के सहारे ही मानवजीवन की गाड़ी घिसटती दिखाई देती थी। अब सहायकों के वर्ग में सूक्ष्म जीवों की एक नई जाति सम्मिलित हुई है। विज्ञान ने धरातल की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूरी को ही समीपता में नहीं बदला है, वरन् प्राणियों की बीच की दूरी को भी घसीटकर एकता में परिणत कर दिया है। अब सूक्ष्म जीव हमारे लिए पशु और वृक्ष-वनस्पतियों से भी अधिक उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होने जा रहे हैं।

सतर्कता तो मित्रों से भी रखनी पड़ती है। अनियंत्रित और अव्यवस्थित छोड़ देने पर तो सुई भी काँटे का काम करेगी और संकट में फँसा देगी। संक्रामक रोग-कीटकों की हानि को ध्यान में रखते हुए उनसे सुरक्षा का प्रबंध भी करना होता है और उनके कारण-निवारण का सरंजाम भी जुटाना होता है। इतने पर भी समूची सूक्ष्म जीवों की दुनिया हमारे लिए शत्रु का नहीं, वरन् मित्र का ही काम करती है और निकट भविष्य में उनकी सहायता से भारी हित-साधन हो सकने की अपेक्षा है।

विषाणुओं से डरना और सतर्क रहना उचित है, पर यह भी ध्यान में रखा जाना है कि सूक्ष्मजीवियों की अधिकांश जातियाँ हमारी शत्रु नहीं, मित्र हैं, वे अनायास ही हमें बहुत लाभ पहुँचाती हैं, पर जब उनका सहयोग विधिवत् आमंत्रित किया जाएगा तब तो वे अपनी मित्रता का उससे भी बड़ा परिचय देंगी, जैसा कि अब तक उपयोगी प्राणियों और वनस्पतियों का मिलता रहा है।

कोई वस्तु देखने में बहुत ही छोटी हो सकती है। उसका आकार और विस्तार भी नगण्य दृष्टिगोचर हो सकती है। लेकिन औरों के लिए इस कारण वह कम उपयोगी नहीं हो जाती। यदि वह भी किन्हीं प्रयोजनों में घुल मिल जाए, तो उसका असाधारण महत्त्व हो जाता है। उदाहरण के लिए खमीर को ही लिया जाए। यह पौधों की दुनिया में सबसे छोटा है। इसे अंग्रेजी में 'यीस्ट' कहते हैं। इसकी संरचना अन्य वानस्पतिक जीवकोषों जैसी ही होती है। वह अंडाकार भी होता है और गोलाकार भी। आकार में वह एक इंच का पच्चीसवाँ भाग और वजन में एक ग्राम का दस अरबवाँ हिस्सा के बराबर होता है। इसे एक भिन्न वर्ग का पौधा मानना पड़ेगा, फफूंद की तरह पराश्रयी-परावलंबी। इसके अतिरिक्त खमीर एककोषीय है, जबकि हर पौधे की रचना अनेक कोषों से मिल कर हुई होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेड़ों पर, पत्थरों पर, पानी की सतह पर काई की तरह वनस्पतियाँ उगती हुई आमतौर से देखी जाती हैं, पर खमीर ऐसा पौधा है, जो फलों के छिलकों से लेकर पशुओं और मनुष्यों की त्वचा तक पर उगता है। कई दिन तक स्नान न किया जाए तो पसीनों की परत हवा, पानी और गर्मी के प्रभाव से वनस्पति की शकल में बदलने लगती है, और बैक्टीरिया की उपस्थिति के अनुरूप वह खमीर बनने लगता है। ऐसी स्थिति में उस शरीर को एक अच्छा खासा खेत भी कहा जा सकता है।

शराब बनाने में और रोटियों का फुलाव पैदा करने के लिए खमीर का उपयोग सबसे अधिक होता है। जौ, चावल, अंगूर, महुआ, शीरा आदि कितने ही पदार्थों को सड़ाकर उनमें खमीर पैदा किया जाता है और फिर उसे भट्टी द्वारा अर्क बनाकर शराब तैयार कर ली जाती है। आटे में इसका थोड़ा अंश मिल जाने से उसमें यह तत्त्व फैल जाता है। डबल रोटी, बिस्कुट, जलेबी, गोलगप्पे आदि में जो फुलाव दीखता है, वह खमीरजन्य ही होता है।

हालैंड के वैज्ञानिक ल्यूफेकन हाक से लेकर बैक्टीरियालाजी के सुप्रसिद्ध अन्वेषक लुई पाश्चर तक अनेकों शोधकर्ता 'खमीर' के संबंध में गहरी खोजें करते रहे हैं और इसके विकास-परिष्कार के अनेक आधारों का पता लगाते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मानवी उपयोग में खमीर की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

शराब का नशे के लिए उपयोग बुरा है, पर इस सड़न-प्रक्रिया' से जो अलकोहल बनता है, वह ओषधि जगत् की एक महती आवश्यकता है। खमीर का पौधा ही उस उत्पादन का आधार है। आटे में रहने वाली शर्करा का खमीर ही कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में बदलता है, जिससे रोटी फूलती है—सुपाच्य और स्वादिष्ट बनती है।

खमीर के छोटे-से कृमि-कीटक 'खमीर' की उपयोगिता बढ़ाते हैं। यदि उसे सही रूप में प्रयुक्त करने के लिए विशाल परिमाण में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्पन्न किया जाए, तो जीवनोपयोगी महत्त्वपूर्ण निधि हाथ लग सकती है, जिसके आधार पर आहार को पौष्टिक एवं सुपाच्य बनाने की आवश्यकता को सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

यही बात सामान्य समझे जाने वाले मनुष्यों पर भी लागू होती है। यदि उनकी उपयोगिता, समझी, बढ़ाई और काम में लाई जाए, तो क्षुद्र और नगण्य से दिखने वाले व्यक्ति भी महान् और देवता बन जाते हैं।

आत्मा के लिए भगवान् ने जितने भी शरीर बनाये हैं, उनमें से एक मनुष्य शरीर ही सर्वांगपूर्ण और सुंदर है। मनुष्य शरीर के एक-एक अवयव, चक्र, कोण और उपत्यिकाओं में भगवान् ने ऐसी-ऐसी शक्तियाँ भरी हैं, जिनके द्वारा वह संपूर्ण त्रैलोक्य में शासन कर सकता है। बुद्धि, विवेक, ज्ञान, श्रवण, दर्शन, घ्राण, संदेश, संप्रेषण के लिए वाणी, लेखनी आदि के ऐसे-ऐसे सुंदर साधन उसे मिले हैं, जैसे सृष्टि के किसी भी प्राणी को नहीं मिले। भगवान् की शक्तियाँ अनंत हैं, पर वह प्रकाश में नहीं आ सकतीं। मनुष्य को उसने अपना प्रतिनिधि बनाकर इस आशा से भेजा कि वह अपनी क्षमताओं का उपयोग विश्व-कल्याण और प्राणिमात्र के हित में करेगा। किंतु मनुष्य ने उन ईश्वरप्रदत्त शक्तियों का दुरुपयोग ही किया। बेईमान और रिश्वतखोर ऑफिसर की तरह उसने किया तो परपीड़न; शोषण और अत्याचार ढाए भी या फिर रोटी-बेटी, रुपया-पैसा वाले निकृष्ट जीवन में गलकर मर गया और अपने पीछे परमात्मा की दी हुई विभूति—मनुष्य शरीर को भी कलंकित कर गया।

मनुष्य से तो अच्छे रहे पेड़-पौधे जो अपने बंधन-युक्त मूक जीवन से भी प्रेरणाओं के स्रोत उँडेलते रहते हैं। योगवासिष्ठ में महर्षि वसिष्ठ ने भगवान् राम से तत्त्व-चर्चा करते समय कहा था—

ये च मध्यमधर्माणो मृतिमोहादनन्तरम्।
ते व्योमवायु बलिताः प्रयान्त्योषधि पल्लवम्।। ३। ५५। २४

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"हे राम ! ऐसे जीव जिनके पुण्य मध्यम श्रेणी के होते हैं, वह वायु द्वारा उड़कर ओषधि फल-फूल आदि वृक्षों की योनियों में जन्म लेते हैं। अपने-अपने कर्मों का फल भोगकर वे पुनः पुण्यार्जन के लिए मनुष्य शरीर में आते हैं।"

खेद है कि जिस मनुष्य को अपना जीवन पुण्य और परमार्थ की साधना में व्यतीत करना चाहिए था, वह निकृष्ट और हेय जिंदगी जीता है, जब कि निकृष्ट कहे जाने वाले पेड़-पौधों के आचरण बड़े प्रेरक और प्रकाश देने वाले होते हैं। मनुष्य चाहे तो इन तुच्छ जीवों से भी बड़ी महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ ग्रहण कर सकता है।

जैसे पिछड़े और दलित वर्ग को आगे बढ़ाने के लिए अपना समय व श्रम लगाना एक मानवीय कर्तव्य है। इस कर्तव्य को मनुष्य पूरा करते हों अथवा न करते हों, पेड़-पौधे जरूर इस प्रकृति-प्रेरणा का पालन करते हैं। वस्तुतः पिछड़े व्यक्ति इसलिए पिछड़े नहीं रह जाते कि उनमें कोई कमी अथवा त्रुटि होती है, बल्कि उसके लिए बहुत कुछ वातावरण और व्यवस्था भी उत्तरदायी होते हैं। कम फल देने वाले पौधों के बीज ऐसी जगह ले जाएँ, जहाँ उसे विकसित होने के लिए पर्याप्त जलवायु, ताप, खाद्य पदार्थ और हवा की नमी (मॉएश्चर) उपलब्ध हों, तो, वे बीज भी अधिक फल देने वाली जाति में बदल जाते हैं। वही सिद्धांत मानवीय जीवन में भी काम करता है। हमारे समाज में अनेक पिछड़े और पददलित लोग पड़े हैं, वह भगवान् के बनाए या कर्मभोग के दोषी नहीं। मनुष्य की योनि कर्मभोग प्राप्त कर लेने के बाद ही मिलती है, यहाँ जन्म लेने के बाद उसका अच्छा-बुरा होना, बढ़ना विकसित होना या दीनता, दरिद्रता की स्थिति में पड़े रहना अधिकांश परिस्थितिवश होता है। इसलिए विचारशील लोग अपनी योग्यता का थोड़ा भाग अपने स्वार्थ में लगाकर अधिकांश शक्तियाँ समाज सेवा में जुटाते हैं। शिक्षा, स्वाध्याय, स्वास्थ्य, सहयोग आदि के द्वारा कम शिक्षित और दलित लोगों को भी आगे बढ़ाते हैं, इसका सामूहिक फल प्रत्येक मनुष्य के लिए लाभदायक ही होता है। इसका एक दूसरा पहलू भी है और वह यह कि कमजोर मनुष्य,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अविकसित मनुष्य, बाह्य परिस्थितियों से सीखकर भी अपनी क्षमताएँ और योग्यताएँ इसी प्रकार बढ़ा सकता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह परस्पर सहयोग, दूसरों के अनुभवों और ज्ञान के सहारे से ही तो आज की इस विकसित अवस्था तक पहुँचा है। इसलिए वह भी केवल लेने का ही अधिकारी नहीं, वह जन्म से ही समाज का ऋणी है, इस ऋण का भुगतान उसे परस्पर सहयोग और सहानुभूति द्वारा करना चाहिए।

वृक्ष-वनस्पतियों में एक सिंबायसिस सिद्धांत काम करता है। द्विदल वनस्पतियों (लेग्यूम कार्प्स) जैसे—चना, मटर, अरहर, मूँगफली, मूँग, मोंठ आदि की जड़ों में एक प्रकार की गाँठें होती हैं, जिनमें गुलाबी रंग का एक विशेष रस (सिरप) भरा होता है। उस रस में जीवाणु (बैक्टीरिया) होते हैं, जो एरियेशन क्रिया के द्वारा वायुमंडल से बहुत-सा नाइट्रोजन एकत्रित करते रहते हैं। यह संचित नाइट्रोजन उस पौधे के ही काम आता हो, जिसकी वह जड़ है, ऐसा नहीं। ऊपर की पौध काट ली जाती है, तब वह जड़ें मिट्टी में ही रह जातीं हैं। गाँठों के रूप में सुरक्षित नाइट्रोजन अब मिट्टी में मिल जाती हैं और उसकी खोई हुई उर्वरता को फिर से जगा देती है। सामाजिक जीवन में मनुष्य जन्म उनका सराहा जाता है, जो अपने संचय का थोड़ा लाभ ही अपने लिए रखते हैं, शेष समाज की उपयोगिता और समर्थता बढ़ाने में व्यय कर देते हैं।

यह क्रिया परस्पर आदान-प्रदान द्वारा भी संभव है। धान के खेतों में चना बहुत अच्छा उगता है, क्योंकि धान अपना वह अंश छोड़ जाता है, जो चने के लिए उपयोगी होता है, बदले में चना भी वैसा ही करता है, जिससे दुबारा उस खेत में धान की फसल अच्छी होती है। दोनों एक दूसरे की कृतज्ञता निबाहते हैं और मनुष्य से कहते हैं कि और अधिक नहीं तो जितना दूसरों से ग्रहण करता है, अपनी योग्यताओं, विशेषताओं के अनुसार कम से कम उतना तो औरों के विकास में योगदान दिया ही जाना चाहिए। अरहर और ज्वार साथ-साथ बोए जाते हैं, दोनों दो जाति के पौधे हैं, पर परस्पर सहयोग से दोनों फलते-फूलते रहते हैं। अरहर नाइट्रोजन खींचती है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उसका थोड़ा-सा अंश अपने काम में लेकर ज्वार को दे देती है और इस तरह दोनों ही विकसित होते रहते हैं।

आम की सघन छाया में पान की बेलें बड़ी आसानी से विकसित हो लेती हैं, आम ऐसा करने से इनकार कर दें, तो पानों का अस्तित्व ही कहाँ रहे ? नारियल की छाया में ही इलायची फलती-फूलती है। छोटों को बड़े खा जाते हैं, यह सिद्धांत गलत है। सच्ची बात यह है कि छोटों को बड़ों से संरक्षण, प्रेम, स्नेह और उदारता मिलनी चाहिए। प्रभाव (रेजिड्यूएल इफेक्ट) वनस्पति पर ही नहीं, मनुष्य जीवन पर भी लागू होता है। यदि हम उसका पालन करें, तो समाज की शांति और व्यवस्था में भारी योगदान दे सकते हैं।

वृक्षों में सामूहिकता की भावना का आदर्श चीकू के पेड़ में देखने को मिलता है। लोग कहते हैं कि अकेला हो तो शक्ति का मनमाना उपभोग करने को मिलता है, पर उससे मनुष्य की प्रसन्नता नहीं बढ़ सकती। एकाकी मनुष्य न किसी से प्रेम कर सकता है, न उदारता व्यक्त कर सकता है। न्याय-नीति, सेवा और सदाचार के फलितार्थ भी अकेले में नहीं भोगे जा सकते, यह बात मनुष्य को चीकू से सीखनी पड़ेगी। अकेला चीकू फल तो देता है, पर कम, लेकिन जब उसके बहुत-से साथी भी आ जाते हैं तो यद्यपि उसकी खुराक के साझीदार बढ़ जाते हैं, तो भी वह अधिक फल देने लगता है। उसकी आत्मिक प्रसन्नता बढ़ती, सौजन्य और सौहार्द्र को आधार मिलता है, तब चीकू अधिक फल देने लगता है। यदि मनुष्य भी उस धरातल पर विचारपूर्वक काम कर सका होता तो आज संसार में जो अशांति और संघर्ष है, वह न होता उसके स्थान पर परस्पर प्रेम, सहयोग, उदारता, सहानुभूति की परिस्थितियाँ होतीं। स्थायी विश्व-शांति के यही आधार हैं, यदि उन्हें हम अपने अंदर से विकसित नहीं कर सकते तो अब पेड़-पौधों से शिक्षाएँ ग्रहण करनी होंगी और उनकी तरह अपना संपूर्ण जीवन सेवा एवं उत्सर्ग में ही बिताना पड़ेगा।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनापन विकसित कीजिए

कितने लोग कहाँ इकट्ठे होते हैं, इसका कोई महत्त्व नहीं। भीड़ तो सदा अड़चन, गंदगी और अव्यवस्था ही उत्पन्न करती है। मेलों-ठेलों में अधिक लोग जमा होते हैं, पर इससे कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। इसके विपरीत जहाँ थोड़े-से लोग भी पारस्परिक सहयोगपूर्वक आदान-प्रदान करने और किसी निर्धारित लक्ष्य की ओर मिल-जुलकर चलने के लिए एकत्रित होते हैं, वे सम्मेलन जो निश्चय करते हैं, उनके दूरगामी परिणाम उत्पन्न होते हैं। बड़ी संख्या में जमा होते हुए भी यदि लोगों में स्नेह, सहयोग और सामंजस्य नहीं है, तो वे सभी अपने आपको एकाकी अनुभव करते रहेंगे। जहाँ घनिष्टता की मनःस्थिति होगी, एक दूसरे के दुःख-सुख में सहायक बनकर रहे होंगे—जिनमें एक दूसरे के हित साधन और कष्ट निवारण में जितना उत्साह होगा, उनमें उतनी ही प्रसन्नता और निश्चिंतता दिखाई पड़ेगी। वे उसी अनुपात में समर्थ, संपन्न, निर्भय और प्रभावशाली बनकर रह रहे होंगे। उस समूह का भविष्य उज्ज्वल ही बनता जा रहा होगा।

जिसका 'अपनापन' जितना संकुचित है, वह आत्मिक दृष्टि से उतना ही छोटा है। जिसने अपनेपन की परिधि जितनी बड़ी बना ली है, उसे उतना ही विकसित-परिष्कृत माना जाएगा। स्वार्थी व्यक्ति समाज की चिंता तो दूर, अपने परिवार के हित-अनहित तक का विचार नहीं करते और मात्र अपनी ही सुविधा समेटने में लगे रहते हैं। ऐसे लोग अपनी शरीर सुविधा और क्षणिक प्रसन्नता पा सकते हैं, पर उनकी अंतरात्मा इस क्षुद्रता के लिए कचोटती ही रहती है। परिचित लोग घृणा करते हैं और संबद्ध व्यक्ति रुष्ट रहते हैं। उन्हें न कभी कहीं से सच्चा सम्मान मिलता है और न आड़े वक्त में किसी का कारगर सहयोग। जो दूसरों के दुःख-दर्द में शामिल नहीं होता, उसे अपने आपत्तिग्रस्त होने पर किसी की सहायता नहीं मिलती। जिसे दूसरों से कुछ सहानुभूति नहीं, उसके साथ भी सहानुभूति कौन व्यक्त करेगा ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदारचित्त मनुष्य देखने में घाटा उठाते दिखते हैं, क्योंकि उन्हें दूसरों की सहायता करने में अपना समय, मस्तिष्क और धन खर्च करते हुए देखा जाता है। मोटे तरीके से यह घाटा उठाने का चिह्न है। पर ध्यानपूर्वक देखा जाए तो बात ठीक उलटी दिखाई पड़ती है। बीज गलता है, तो लगता है वह घाटे में रहा, पर जब उसका अंकुर फूटता है, पौधा बनता है, विशाल वृक्ष होकर फूलों-फलों से लदता है, तो प्रतीत होता है बीज का गलना मूर्खतापूर्ण नहीं था। उसने जितना खोया, उसकी तुलना में पाया कहीं अधिक है। दूसरों के साथ उदार सहयोग का बरतना—अपनी अन्य आत्मिक सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाना है, ऐसा व्यक्ति दूसरों के मन में अपने लिए श्रद्धा, सम्मान का स्थान बनाता है और अपने चुंबकत्व से अन्य लोगों का स्नेह-सहयोग आकर्षित करता है। इस प्रकार उदार व्यक्ति घटता नहीं, बढ़ता ही है। सहयोग की प्रतिक्रिया सुखद सहायता बनकर चारों ओर से बरसती है।

धर्मशास्त्रों में दान-पुण्य की बहुत महिमा गाई गई है और उसे हर शुभ कार्य के साथ जोड़ा गया है। इसका कारण मात्र धन को एक से दूसरे के हाथ में पहुँचाना नहीं, वरन् उदार सहयोग की सत्प्रवृत्ति को विकसित करना है। हम अपने ही दुःख को दुःख न समझें, वरन् दूसरों के कष्टों में भी समान समवेदना अनुभव करें। किसी की पीड़ा अपने अंतःकरण में करुणा और दया उत्पन्न करती हो, तो समझना चाहिए, आत्मा की कोमलता जागरूक है और व्यक्ति आत्मोत्कर्ष के मार्ग पर चल रहा है। जो जितना कठोर है, उसे दूसरों को कष्ट-पीड़ित देखकर तनिक भी दया नहीं आती, ऐसे लोग परपीड़ा का क्रूर-कर्म स्वयं भी करते रहते हैं और दूसरों को करते देखकर प्रसन्न होते हैं अथवा निरपेक्ष बने रहते हैं। इस आंतरिक स्थिति को ही असुरता कहते हैं। ऐसे लोग अपने लाभ के लिए ही नहीं, अकारण भी परपीड़ा का आनंद लेते हैं और उस दुष्टता को वीरता का नाम देते हैं। कसाई, शिकारी, डाकू, हत्यारे प्रायः ऐसी ही असुर मनोवृत्ति के होते हैं। अपराधी मनोवृत्ति इसी कठोरता की पृष्ठभूमि पर पनपती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य असुरता छोड़े और देवत्व की दिशा में अग्रसर हो, इसका एक ही उपाय है, उदार सहकारिता की मनोवृत्ति का विकास—उसे अंतःभूमि में परिपक्व करने वाले क्रियाकलापों का अभ्यास। दान-पुण्य की महिमा इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर गाई गई है। आज तो इस क्षेत्र में भी मूढ़ मान्यताओं का साम्राज्य है। लोग अमुक वंश या वेश के लोगों को दान लेने का ठेकेदार मानते हैं और देवी-देवताओं तथा पितरों को प्रसन्न करने की दृष्टि से पैसा पानी की तरह बहाते हैं। कुछ लोग अपने को उदार दानी होने का प्रचार-विज्ञापन करने की दृष्टि से तीर्थयात्रा, ब्रह्मभोज, स्मारक आदि में धन खर्च करते हैं। यह आज के घटिया मनुष्य के घटिया चिंतन का घटिया स्वरूप है। वस्तुतः दान एक सत्प्रवृत्ति है, जो मात्र धन देकर ही नहीं, श्रम समय, प्रोत्साहन, स्नेह, सत्परामर्श, सहानुभूति आदि के माध्यम से भी उसे चरितार्थ किया जा सकता है। दानी के लिए धनी होना आवश्यक नहीं। निर्धन भी अपने उदार चित्त के आधार पर धन कुबेरों से भी बढ़ी-चढ़ी सेवा-सहायता कर सकते हैं। सद्भावना की कमी न हो, स्वभाव में उदारता सम्मिलित हो, दूसरों के दुःख में सहायता करने की कसक उठती हो, किसी को सुखी बनाने में रस आता हो, तो समझना चाहिए दानशीलता के अनेकानेक आचरण स्वयमेव होते चले जायेंगे और उसके लिए व्यस्त एवं त्रस्त स्थिति में भी पग-पग पर सुअवसर मिलते रहेंगे।

आवश्यक नहीं कि कोई पीड़ित या पतित मिले, उनके लिए दान की प्रतीक्षा में बैठे रहा जाए अथवा उन्हें खोज-खोजकर बुलाया जाता रहे। यह तो आपत्ति धर्म है कि कभी कोई दुःखी व्यक्ति दिखाई पड़े, तो उसकी उचित एवं शक्य सहायता विवेकपूर्वक की जाए। भावावेश में अनुचित सहायता करने से तो भिक्षावृत्ति पनपती है और कुपात्रों के लिए एक घिनौना व्यवसाय अपनाकर अकर्मण्य बनने का दुर्भाग्य पल्ले पड़ता है। इस क्षेत्र में पूरे विवेक का प्रयोग करने की आवश्यकता है। विवेकपूर्ण सहृदयता ही लाभदायक सिद्ध होती है। माता को बच्चे के फोड़े का आपरेशन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कराते समय जो कठोरता धारण करनी पड़ती है, वस्तुतः वह भी विवेकपूर्ण करुणा का ही एक अंग है।

अपने स्वजन, संबंधियों, पड़ोसी, परिचितों में कोई हारी-बीमारी हो तो उसकी दवादारू, परिचर्या, पूछताछ, सहानुभूति, आश्वासन के लिए कुछ समय या प्रयत्न करके अपनी सद्भावना का परिचय दिया जा सकता है। अन्य प्रकार की मुसीबतें तथा कठिनाई भी लोगों के सामने आती रहती हैं। ऐसे अवसरों पर लोग अक्सर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और औंधे-सीधे विचार करके अवांछनीय मार्ग अपनाने लगते हैं, यह मनःस्थिति भी शारीरिक बीमारी से कम भयंकर नहीं। अपने संपर्क क्षेत्र में अक्सर कई व्यक्ति ऐसी आपत्ति में फँसे होते हैं। उनके साथ सहज आत्मीयता विकसित करनी चाहिए और अपने विश्वास क्षेत्र में लेना चाहिए। इतना कर सकने पर ही स्नेहसिक्त, तर्क और तथ्यों से भरा परामर्श प्रभावी बनता है। ऐसा मार्गदर्शन कर सकना—धन-दान करके किसी दीन-दुःखी की सहायता करने से किसी भी प्रकार कम महत्त्व का नहीं है। साधारण वार्तालाप में भी संपर्क में आने वालों को बिना उसके स्वाभिमान को चोट पहुँचाए—बिना निंदा, भर्त्सना किए सहज सत्परामर्श दिए जा सकते हैं और उनसे भी धन दान जैसे ही सत्प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं। अपना चरित्र आदर्श बनाकर उसे अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद बना लिया जाए तो वह भी प्रकारांतर से संपर्क क्षेत्र में बखेरा गया अयाचित अनुदान ही माना जाएगा।

घर में ऐसी परंपरा प्रचलित करनी चाहिए जिसमें सभी को एक दूसरे की सहायता करने की उत्सुकता बनी रहे। इसके लिए उन्हें बराबर अवसर भी मिलते रहने चाहिए। बड़ी क्लास के लड़के अपने से छोटी कक्षा के भाई-बहिनों को पढ़ाने के लिए नियमित रूप से हर रोज समय निकालें और उन्हें खिलाने, हँसाने, अच्छी आदतें अपनाने, ज्ञान बढ़ाने आदि में सहायता करें। छोटी आयु के बच्चे बड़ों के कामों में हाथ बँटाने में, उनकी छोटी-मोटी आवश्यकताएँ स्वयं जुटा देने में रुचि रखें, बराबर वालों के साथ जी खोलकर हँसने, बोलने और मिल-जुलकर साथ-साथ काम करने का क्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाएँ। दूसरों की बिखरी चीजों को यथा स्थान रख देना, एक छोटा सा काम है, पर उससे यह छाप पड़ती है कि हमारे प्रति कितना ध्यान है ? ऐसे छोटे-छोटे सहयोग देकर साथ वालों की सद्भावना एवं कृतज्ञता अर्जित की जा सकती है।

सार्वजनिक हित के सामूहिक कार्यों में सदा अग्रणी रहना चाहिए। लोकमंगल के लिए चल रहीं गतिविधियों में पूरे उत्साह के साथ भाग लेना चाहिए। इन सत्प्रवृत्तियों में भाग लेने से विश्वसेवा के विशाल क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर मिलने से आत्म-विस्तार का लाभ मिलता है—साथ ही समाज को समुन्नत बनाने का जीवनोद्देश्य भी प्राप्त होता है। जिस प्रकार व्यक्तिगत एवं पारिवारिक लाभ के कार्यों में रुचि रखी जाती है, उसी प्रकार समाज को भी बड़ा परिवार मानकर उसे समुन्नत बनाने वाले सामूहिक-सार्वजनिक कार्यों में हमारा भाव भरा अनुदान एवं सहयोग सदा ही सम्मिलित रहना चाहिए।

अंतःकरण की उदारता को विकसित करना—अपना स्तर बढ़ाना और दूसरों का सम्मान-सद्भाव अर्जित करना है। यह लाभ जो कमाता है, वह देने की अपेक्षा प्रकारांतर से कहीं अधिक प्राप्त कर लेता है। स्वार्थपरायण व्यक्ति चतुर दिखता है, पर वह एकाकी रहकर खोता ही अधिक है। अस्तु, हर विवेकवान् का प्रयत्न यह होना चाहिए कि वह अपनी आत्मीयता का क्षेत्र विस्तृत करे, दूसरों के दुःख को बँटाने और अपने सुख को बाँटने में उत्साह रखें। सहयोग का स्वभाव बनाएँ और जहाँ भी आवश्यकता हो, अवसर हो, सहकारिता की सत्प्रवृत्ति चरितार्थ करने में पूरी तत्परता बरतें। सद्भाव और सहयोग के बल पर ही संगठन बनते, सुदृढ़ होते और बढ़ते हैं। संगठन का मूल तत्त्व यही है। मानवी प्रगति सहयोग के आधार पर ही संभव हुई है; उस मनुष्य को दिए गए ईश्वरीय अनुदान का हमें अधिकाधिक विकास करना चाहिए, ताकि सुख-शांति का अधिकाधिक संवर्धन संभव हो सके।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख, भोग में नहीं—त्याग, परोपकार में है

मनुष्य जैसे विकसित प्राणी के लिए सुख पाने की लालसा स्वाभाविक है। सुख पाने की चेष्टा प्रत्येक प्राणी करता है। यह चेष्टा ही एक ऐसी चाबी है, जिससे जीवन रूपी घड़ी निरंतर क्रियाशील रहती है। घड़ी में चाबी नहीं देने पर वह बंद हो जाती है, उसी प्रकार यदि सुख पाने की चेष्टा समाप्त हो जाए तो वह जीवित रहते हुए भी मर जाता है।

सुख का आधार व्यक्ति की मनोभूमि पर आधारित होता है। इस कारण यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक वस्तु के उपभोग में सुख मिलता है। सुअर के लिए गंदगी, कीचड़, दुर्गंध सुखदायक है, क्योंकि उसकी मनःस्थिति इसी प्रकार की है; किंतु मनुष्य के लिए वही सब दुःखदायी होती है। यही नहीं भिन्न-भिन्न मनःस्थिति के मनुष्यों में भी सुख-सामग्रियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। शराब पीने वाले व्यक्ति के लिए शराब सुख प्रदान करती है, किंतु जो इस विभीषिका से परिचित है, वह तो इसे छूना भी पाप समझता है।

ईश्वर ने जितनी सुख-सुविधाएँ मनुष्य को प्रदान की हैं उतनी किसी अन्य जीव को प्रदान नहीं की। मनुष्य का अंतःकरण विवेक से परिपूर्ण है। वह इन क्षमताओं तथा उपलब्धियों का प्रयोग उसकी सृष्टि को सुंदर, सुखी तथा संपन्न बनाने में लगाए, इसी हेतु उसे यह सब प्राप्त हुआ है। इसी के आधार पर मनुष्य तथा पशुओं में सीमा रेखा निर्धारित की जानी चाहिए, तभी मानव जीवन की उत्कृष्टता तथा सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

मानवोचित सुख को पशुओं के सुख से कुछ भिन्न अवश्य होना चाहिए। भोग से जो सुख मिलता है, वह केवल इंद्रियों को तृप्त करता है। यह तृप्ति क्षणिक होती है। आग में घी डालने की तरह मरुभूमि में प्यास बुझाने की लालसा से मृगतृष्णा के भुलावे में भटकाने वाली यह इंद्रियजन्य वासना पाशविक सुख से भी निकृष्ट एक छलावा मात्र है। जो मनुष्य को अपनी गरिमा तथा कर्तव्य से भ्रष्ट करती है। मनुष्य विवेकशील प्राणी है, वह अंतरात्मा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवाज को सुनता है। उसको सच्चा सुख सेवा-साधना में ही मिलता है। इससे बढ़कर कोई ऐसा कर्म नहीं, जो मानव को अपनी गरिमा का भान कराता हो।

मेरे पास चार रोटी हैं, इनसे मैं अपनी क्षुधापूर्ति कर लेता हूँ। मेरी इंद्रियों को क्षणिक सुख मिल जाता है, किंतु इससे मेरी भूख सदा के लिए मिट नहीं जाती। मुझसे भी अधिक भूखा कोई है और उसे उनमें से दो रोटियाँ दे देता हूँ, तो मेरी आत्मा में उस भूखे की तृप्ति देखकर जो आनंद मिलेगा वही सच्चा है।

भगवान् ने इसी कारण मनुष्य को सामर्थ्य इतनी अधिक दी है कि वह इतना उपार्जित कर सकता है, जिसके दसवें हिस्से में उसकी शारीरिक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। शेष नौ भाग को यदि वह उस समाज के हित में, लोक-मंगल के लिए प्रयुक्त करे जिसका कि वह चिरऋणी है, तभी वह सुख पा सकता है। समाज का ऋण उतारने का कुछ प्रयास न करें, तो हम सच्चे अर्थों में सुखी हो भी नहीं सकते।

किसी ने ठीक ही कहा है कि ईश्वर ने उपार्जन के लिए हाथ दो दिए हैं तथा उदर पोषण के लिए मुँह एक ही दिया है। इसके पीछे जो एक सिद्धांत छिपा है, वह यह है कि हम जो कुछ उपार्जित करें, उसका आधा भाग स्वयं के शरीर तथा परिवार के लिए तथा शेष आधा भाग लोक-मंगल के लिए प्रयुक्त करें।

अपने उपार्जन और शक्तियों का एक अंश लोक-मंगल के लिए लगाते रहने का नाम ही परमार्थ साधना है। इस संबंध में शंका उठ सकती है कि अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना तथा लोकमंगल के लिए समय, साधन और शक्ति लगाते रहना दो अलग-अलग मार्ग हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए तो स्वार्थ और परमार्थ को एक साथ भी साधा जा सकता है। स्वार्थ और परमार्थ को एक साथ भी पूरा किया जा सकता है। मनीषियों ने इस संबंध में एक सुनिश्चित मार्ग निर्धारित किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमार्थ का नाम सुनते ही लोग बहुधा यह समझकर घबरा उठते हैं कि परमार्थ की प्रेरणा देने वाले उन्हें अपने आवश्यक स्वार्थों से छुड़ाकर कुछ इस प्रकार परोपकार तथा पर सेवा के कार्यों में लगा देना चाहते हैं कि उनका परिवार छूट जाए। वे जीवन में आर्थिक उन्नति से वंचित रहकर न तो कोई तरक्की कर पाएँगे और न किसी ऊँचे पद पर पहुँच पाएँगे। वे गरीब रहकर सारे सुख से रहित हो जाएँगे।

कहना न होगा कि इस प्रकार का विचार करने वाले लोग वस्तुतः परमार्थ का वास्तविक अर्थ नहीं समझते। मनुष्य का सच्चा स्वार्थ परमार्थ ही माना गया है। जो भी काम ऊँचा और उज्ज्वल स्वार्थ लेकर किया जाता है, उसका अंतर्भाव एक प्रकार से परमार्थ ही होता है। स्वार्थसिद्धि का परिणाम संतोष, आत्मसुख और आत्मकल्याण ही तो हो सकता है। यही परिणाम परमार्थ का भी माना गया है। अंतर केवल इतना ही है कि स्वार्थ का सुख अस्थायी एवं अंत दुःखद होता है। किंतु परमार्थ से प्राप्त सुख स्थायी और विक्षोभरहित होता है। कोई भी बुद्धिमान्, किन्हीं ऐसे स्वार्थों द्वारा सुख क्यों न पाना चाहेगा, जिनमें परमार्थ का भी अंतर्भाव भरा हुआ हो।

आत्मा का स्वार्थ जिन विचारों और कार्यों द्वारा सिद्ध होता है उन्हीं के माध्यम से संसार का कल्याण करने वाले परमार्थ की भी सिद्धि होती है। फिर क्यों न ऐसी गतिविधि ही अपनाई जाए, जिससे स्वार्थ की भी सिद्धि हो और परमार्थ का भी साधन बने। उदाहरण के लिए स्वार्थ का सबसे स्थूल रूप उपार्जन का ले लिया जाए। उपार्जन का यहाँ पर अर्थ है धन कमाना। धन कमाने के लिए लोग खेती करते हैं, व्यवसाय करते हैं और नौकरी करते हैं।

यों तो खेती, व्यवसाय अथवा नौकरी करना मूलतः स्वार्थ है। पर यदि इसमें ऊँची भावना का समावेश कर दिया जाए, तो इसी स्वार्थ के साथ परमार्थ का भी लाभ होने लगे। जो खेती करते हैं, सोचते हैं, इससे जो उपज होगी, उससे अपना काम चलेगा, बच्चों का पालन होगा, जीवन में सुख-सुविधा की प्राप्ति होगी। इसके साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह भाव भी शामिल कर लिया जाए कि खेती करना हमारा पुनीत कर्तव्य है, इससे राष्ट्र को, समाज को और प्राणियों को अन्न मिलेगा। इससे जो हमें लाभ होगा, उससे हम संसार के एक अंश परिवार का पालन करेंगे, बच्चों को पढ़ा-लिखाकर इस योग्य बना सकेंगे कि वे समाज और संसार का कुछ हित कर सकें, अपनी आत्मा का उद्धार कर सकें।

ऐसा भाव जागते ही खेती का वह स्वार्थपूर्ण काम, परमार्थ कार्य बन जाएगा। उसका आनंद उस सुख से स्थायी, उदात्त तथा अधिक होगा, जो कि केवल संकीर्ण स्वार्थ रखने पर होता। विचारों की उदात्तता मनुष्य के कार्यों को भी ऊँचा बना देती है। खेती जैसे कार्य में भी परहित की परमार्थ भावना का समावेश हो जाने पर मनुष्य उसे अधिक लगन और अधिक गौरव के साथ करेगा। इससे आनंद भी आएगा, संतोष भी मिलेगा और लाभ भी होगा। स्वार्थ में ही परमार्थ की साधना हो जाएगी।

इसी प्रकार व्यवसाय अथवा नौकरी की भी बात है। हम व्यवसाय करते हैं—इसलिए कि लोगों को वस्तुओं की सुविधा हो, राष्ट्र और देश की संपत्ति बढ़े, बहुत-से आदमियों को काम मिले। व्यक्तिगत व्यवसाय को इस प्रकार सार्वजनिक सेवा कार्य मानकर चलने पर स्वार्थ परमार्थ बन जाएगा। व्यवसाय में ऊँची भावना के जुड़ते ही मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार अथवा चोर बाजारी और मिलावट की प्रवृत्ति पर आघात होगा और वे स्वयं ही नष्ट होने लगेंगी। ज्यों-ज्यों व्यवसायी निष्कलंक व्यवसाय का सुंदर स्वरूप देखता जायेगा त्यों-त्यों वह उसे दृढ़तापूर्वक अपनाता चला जाएगा। ज्यों-ज्यों वह इस क्षेत्र में उन्नत बनता जाएगा त्यों-त्यों उसका भय आशंका और संशय दूर होता जाएगा और आत्मिक सुख मिलता जाएगा। इस प्रकार स्वार्थ भी बनेगा और परमार्थ भी।

नौकरी में जब तक संकीर्ण स्वार्थ का भाव साथ बँधा रहता है, मनुष्य अपने को पराधीन, दूसरों की चाकरी करने वाला और दीन-हीन समझता रहता है। पर ज्यों ही वह उसमें ऊँचे भावों को सम्मिलित करता है, उसकी सारी दीनता चली जाती है। उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोचने का दृष्टिकोण इस प्रकार हो जाता है कि, हम किसी एक व्यक्ति की चाकरी नहीं कर रहे हैं, हम पूरे राष्ट्र या पूरे समाज की सेवा कर रहे हैं। अपना काम पूरी जिम्मेदारी से करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। जिनका पालन पूरी तत्परता से करना है और मैं कर भी रहा हूँ, ऐसा भाव आते ही वह स्वार्थपरक कार्य भी परमार्थपरक बनकर अधिकाधिक संतोष, सुख और उत्साह देने लगेगा। मनुष्य अपने को पराधीन नहीं स्वावलंबी अनुभव करने लगेगा। यही स्वाधीनता, यही अभय और यही आत्मगौरव तो परमार्थ का परिणाम है। ऊँचे स्वार्थ में उन्नत भावों का समावेश स्वयं एक परमार्थ है, जो हर प्रकार से सरल एवं सुगम है, जो संसार का कोई भी व्यक्ति बिना कठिनाई के कर सकता है।

अब आइये, इसी न्याय द्वारा कुछ आगे बढ़िए। स्वार्थ की सिद्धि किसलिए की जाती है ? आत्म संतोष और आत्म सुख के लिए। कोई व्यक्ति यदि अपने स्वार्थ के लिए यदि किसी दूसरे के स्वार्थ का हनन करता है, तो क्या यह आशा की जा सकती है कि उसे सुख, संतोष और शांति मिलेगी ? दूसरों को हानि अथवा कष्ट पहुँचाकर कितने ही बड़े स्वार्थ की सिद्धि क्यों न कर ली जाए, उससे शांति नहीं मिल सकती। सबसे पहले तो जिसको कष्ट हुआ है, वह शांति से बैठने न देगा, दूसरा शासन, समाज और लोक निंदा का भय बना रहेगा। जहाँ भय वहाँ शांति की संभावना असंभव है। तीसरे, मनुष्य में जो परमात्मा का निष्कलंक एवं न्यायशील अंश आत्मा को प्रिय मानता है, वह उसे सोते-जागते किसी समय भी चैन न लेने देगी। हर समय टोकती ही रहेगी कि तुमने अमुक को कष्ट पहुँचाकर जो स्वार्थ की सिद्धि की है, वह ठीक नहीं, इसके लिए लोक अथवा परलोक में तुम्हें दंड का भागी बनना पड़ेगा। ऐसी दशा में स्वार्थ की वह सिद्धि सुखदायक तो नहीं, आशादायक अवश्य बन जाएगी। तब कहाँ तो स्वार्थ का मंतव्य पूरा हुआ और कहाँ परमार्थ का उद्देश्य ?

स्वार्थ परमार्थ बने, इसका एक सरल सा उपाय यह है कि केवल अपने उचित स्वार्थ की सीमाओं तक ही नियंत्रित रहा जाए,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी परिधि इतनी न बढ़ाई जाए कि वह दूसरों की मर्यादाओं का उल्लंघन करने लगे। वह संभव किस प्रकार हो ? वह इस प्रकार कि अपने स्वार्थों में लोभ, लिप्सा और तृष्णा को स्थान न लेने देना चाहिए। स्वार्थ में जब इन विकारों का दोष आ जाता है, तब अच्छा स्वार्थ भी निकृष्ट वासनाओं में बदल जाता है, जिससे सारे पापों-संतापों का श्री गणेश होने लगता है। मनुष्य का लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। ऊँचा स्वार्थ-परमार्थ ही है। अस्तु, एक स्वार्थ और परमार्थ के दोहरा काम निकालने के लिए स्वार्थ भावना को ऊँचा उठाइए, उसे अपनी मर्यादा तक ही सीमित रखिए और उसमें लोभ, लिप्सा अथवा तृष्णा का विकार कदापि न आने दीजिए।

अब आइए, यहीं से एक कदम और आगे बढ़ा जाए। फिर दोहरा लीजिए कि स्वार्थ का उद्देश्य सुख और शांति ही होता है। यदि ऐसा न हो तो फिर स्वार्थ का कौड़ी बराबर मोल न रह जाए। हमने उचित रूप से स्वार्थ लाभ किया। अब उस लाभ का यदि एक अंश लोक-सेवा में लगाते रहें, तो जानते हैं कि इसका क्या फल हो ? वह यह कि हमें एक अनिवर्चनीय सुख, शांति और उल्लास मिले। यह ऐसे कि जब हम अपनी उपलब्धियों से किसी का कुछ हित संपादन करेंगे, तो दूसरे लोग हमारी उपलब्धियों को आदर की दृष्टि से अपनत्व के भाव से देखेंगे और चाहेंगे कि उनकी दिन-दिन उन्नति एवं वृद्धि हो, इतना ही नहीं, वे अपनी-अपनी तरह उससे सहयोग तथा सहायता भी करेंगे। इस लोकायतन से आने वाला सुख कितना शीतल, कितना संतोषप्रद और कितना महान् होगा ? क्या इसका अनुमान लगाया जा सकता है ? जब किसी के हित और सेवा में हमारा भी भाग होगा, तो क्या समाज में प्रशंसा तथा पात्रता का अवसर नहीं मिलेगा ? जब यह संभव है, तब कौन कह सकता है कि हमारा सुख-शांति के परिणाम वाला स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा। इसलिए लोकसेवा लोकहित और लोक कल्याण के परमार्थ कहे जाने वाले कामों को भी स्वार्थ ही समझना चाहिए। परमार्थ भी वस्तुतः स्वार्थ ही है, एक ऊँचा स्वार्थ और बुद्धिमान् व्यक्ति उसकी सिद्धि करने में कभी भी नहीं चूकते। परमार्थपरक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वार्थ ही सच्चे सुख, वास्तविक संतोष और यथार्थ कल्याण का हेतु है, निकृष्ट अथवा निंदित स्वार्थ नहीं।

अब यहाँ पर छोटा प्रश्न और उठता है। वह यह कि आखिर निकृष्ट स्वार्थ भावना से निकलकर ऊँचे स्वार्थ की परिधि में किस प्रकार जाया जाए ? उसका एक साधारण-सा उपाय यह है कि अपने व्यक्तित्व को उज्ज्वल उन्नत और विस्तृत बनाया जाए। जब तक हम इस आत्म-गरिमा में नहीं प्रतिष्ठित होते कि हम समाज के एक उत्तरदायी अंग हैं, परमात्मा के पवित्र अंश और संसार के प्राणीमात्र के सिरमौर मानव हैं, तब तक हमें अपनी निकृष्टताओं पर न तो लज्जा आयेगी और न आत्म ग्लानि होगी। हम अपने व्यक्तित्व की महानता से अपनी निकृष्टताओं की तुलना करें और देखें कि कौन-कौन से दोष हमारी प्रतिष्ठा के अनुरूप हमें नहीं बनने देते हैं। जिन वासनाओं, जिन अभीप्साओं और जिन भावनाओं को हम अपने व्यक्तित्व के अनुरूप न देखें उन्हें तुरंत ही निकालकर फेंक दें। हमारा व्यक्तित्व मूल रूप से उज्ज्वल एवं उत्कृष्ट ही है। दोष, पाप और मल ही उसे मलीन तथा निकृष्ट बना देते हैं। जिस दिन हम अपने इन विकारों को निकालकर फेंक देंगे, उस दिन ही हमारा व्यक्तित्व दूध के समान उज्ज्वल तथा निर्विकार हो उठेगा। अपने मूल व्यक्तित्व का दर्शन पाते ही हमारे निकृष्ट स्वार्थ स्वयं ही हमें छोड़कर चले जाएँगे और उनके स्थान पर परमार्थपरक ऊँचे स्वार्थ स्थापित हो जाएँगे। तब न तो जीवन में अशांति की संभावना होगी और न असंतोष का समावेश।

मनीषियों ने इसलिए कहा है कि मनुष्य को अपना व्यक्तित्व विकसित करने, लोक मंगल तथा परमार्थ भावना को जीवन में उतारने के लिए निरंतर सचेष्ट रहना चाहिए। निश्चित ही इसके लिए मनुष्य को अपने कई स्वार्थों पर प्रतिबंध लगाना पड़ेगा और उसे ऐसे कार्यों का परित्याग करना पड़ेगा, जो उसके स्वार्थ की पूर्ति भले ही करते हों परंतु उनसे समाज का अहित होता है।

परमार्थ के आदर्श को अपने व्यक्तित्व का अंग बनाने के लिए आवश्यक है कि मन में जब-जब सत्कर्मों की पुण्य-प्रवृत्ति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदय होता हो तब-तब तुरंत संपन्न कर लिया जाए। सत्कर्मों की पुण्य प्रवृत्ति मन में कभी-कभी ही उत्पन्न होती है। ऐसा उत्साह भगवान् की प्रेरणा और संचित शुभ कर्मों का उदय होने पर ही जाग्रत् होता है। अन्यथा मनुष्य अधिकांश समय तो स्वार्थ और संकीर्ण परिधि में ही सोचते, संकल्प-विकल्प करते गुजार देता है। इसलिए परमार्थ की पुण्य-प्रवृत्तियाँ जब कभी उत्पन्न हों, तो उसे कार्यान्वित करने में किंचित् भी विलंब नहीं करना चाहिए।

यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे पिछड़े हुए देश में अगणित समस्याओं और कठिनाइयों से मनुष्य समाज बुरी तरह संत्रस्त है और उसकी दुष्प्रवृत्तियों से लोगों को भारी विपत्ति का सामना करना पड़ रहा है। इन उलझनों को सुलझाने और कठिनाइयों को हल करने के लिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ कर ही सकता है। सच्चे और विवेकपूर्ण परमार्थ के अवसर भी संसार में कम नहीं है।

यह सोचना ठीक नहीं कि जब ऐसा अवसर आवेगा तब यह करेंगे। हो सकता है कि हमारा इच्छित अवसर जीवन में कभी भी न आवे और वे आकांक्षाएँ कल्पना ही बनकर रह जाएँ। जो साधन आज प्राप्त हैं उन्हीं के आधार पर वर्तमान परिस्थितियों में संभव हो सकने वाले सत्कर्मों के लिए हमें प्रयत्नशील हो जाना चाहिए। हजार मन सोचने से एक मन करना अच्छा है। आज जो परमार्थ भावना किसी सत्प्रेरणा या सौभाग्य से प्राप्त हुई है, यदि उसे पीछे के लिए धकेल दिया गया, तो कौन जाने कब वैसा उत्साह पुनः हो या न हो ? अमुक सुविधा मिलने पर अमुक कार्य करने की शर्त लगाना, एक प्रकार की बहानेबाजी है, जिससे अपनी उस उठी हुई सत्प्रवृत्ति को बहकाकर या बहलाकर पीछे के लिए टाल दिया जाया करता है। उचित यही है कि आज की परिस्थितियों में अपने लिए जो संभव है उतना ही सोचें और जो उपयुक्त प्रतीत हो, उसे कार्यान्वित करने का भी साहस प्रदर्शित करें।

सत्यनारायण व्रत कथा में साधु-वैश्य का उपाख्यान आता है, जिसमें संतान होने पर व्रत कथा के लिए प्रतिज्ञा की बात थी। पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब कलावती कन्या उत्पन्न हो गई, तो फिर उसकी पूर्व रुचि हल्की पड़ गई, आजकल करते-करते कन्या का विवाह हो गया, जमाता व्यापार करने लगा। तब भी वह संकल्प अपूर्ण ही बना रहा। इसी प्रकार एक कथा है कि कोई व्यक्ति खजूर पर चढ़ गया। नीचे उतरते हुए उसे मृत्यु भय दिखने लगा तो उसने मनौती मनाई कि नीचे उतरने पर इतना दान करूँगा। आधी दूर नीचे उतर आया तो उसने वह दान की राशि मन-ही-मन आधी कर ली और आधा नीचे उतरा तो उसे घटाकर चौथाई कर लिया और नीचे जमीन पर उतरते-उतरते वह दान एक बहुत छोटी चिह्न पूजा जैसा रह गया।

सत्कर्म करने में परिस्थितियाँ नहीं, भावना प्रधान होती है। भावना प्रबल हो तो निर्बल और असमर्थ दिखने वाले व्यक्ति भी वह कर-गुजरते हैं, जो असाधारण एवं आश्चर्यजनक होता है। इसके विपरीत जिनके पास बहुत कुछ है, वे बड़ी कठिनाई से कभी-कभी राई-रत्ती सत्कर्म कर पाते हैं। श्रेष्ठ सत्कर्म मनुष्य से सदा नहीं बन पड़ते। उनमें कितनी ही बाधाएँ आ खड़ी होती हैं। अपना स्वार्थी-मन कम बाधक नहीं होता। ऊँच-नीच, आगा-पीछा सोचकर वह यह निष्कर्ष निकालता है कि अभी अमुक आवश्यक कार्य करने को पड़े हैं, पहले उन्हें पूरा कर लें, यह दान-धर्म तो पीछे भी कभी हो सकते हैं, अभी जल्दी ही क्या है ?

इसी प्रकार कुटुंब-परिवार वाले तथा मित्र-हितैषी कहलाने वाले व्यक्ति आमतौर से यही चाहते हैं कि इस व्यक्ति के धन, श्रम, सहयोग या व्यक्तित्व का पूरा लाभ हमें ही मिलता रहे। यदि सत्कर्म में उसका धन या श्रम लगता है, तो उसमें उन्हें अपनी प्रत्यक्ष हानि दिखती है। ऐसी दशा में वे अनेक बहाने, अनेक तर्क उपस्थित करके उस ओर से विरक्ति पैदा करने का प्रयत्न करते हैं।

आज यदि सत्कर्म करने की परिस्थिति है, तो कल भी वह बनी ही रहेगी, इसका कोई ठिकाना नहीं। उलटती-पलटती छाया की तरह मनुष्य के दिन फिरते रहते हैं। आज का युवा कल बूढ़ा होगा ही, आज के निरोग को कल रोग घेर सकता है। आज का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धनी कल निर्धन हो जाए तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, आज की चैन की जिंदगी बिताने वाले के सामने कल अनेकों चिंताएँ और समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसी दशा में यह भी संभव है कि तब उस सत्कर्म कर सकने में सचमुच ही विवशता उत्पन्न हो जाए और मनोरथ अधूरे के अधूरे ही पड़े रहें।

रावण चाहता था कि स्वर्ग के लिए सीढ़ी बना ले, समुद्र के खारे जल को मीठा बना ले और देवताओं से लड़कर अमृत छीन लावे, पर वह आजकल-आजकल टालता रहा। दैनिक जीवन के 'जरूरी' काम उसे घेरे रहे और यह महत्त्वाकांक्षा पीछे पड़ती गई। मौत का दिन आ पहुँचा। लक्ष्मण जी उससे राजनीति पढ़ने गये तो रावण ने कहा—"लक्ष्मण ! मनुष्य की भारी भूल यह है कि वह महत्त्वपूर्ण सत्कर्मों की उपेक्षा करे और साधारण जीवनयापन के कार्यों में ही लगा रहे। मैंने यही भूल की और अपनी तीनों आकांक्षाएँ अधूरी छोड़कर इस संसार से विदा हो रहा हूँ।"

ईसा मसीह ने कहा है कि "जो तेरा दाहिना हाथ करना चाहे उसकी बाएँ हाथ को खबर न होने दे।" इस मंत्र का एक अर्थ यह है, अपने शुभ कर्मों का विज्ञापन न करो, वाहवाही लूटने और धर्मात्मापन जताने के लिए ढोल न पिटवाओ। वहाँ दूसरा अर्थ यह भी है कि जितनी जल्दी हो सके, उतनी तत्परता से सत्कर्म संपन्न कर लिया जाए। हो सकता है दाहिने हाथ के कार्य में बायाँ हाथ कोई अड़ंगा लगा दे। मनीषियों ने कहा है—"दुष्कर्म करना हो, तो उसे करते हुए कितनी ही बार विचारो और उसे आज की अपेक्षा कल-परसों पर छोड़ो। किंतु यदि कुछ शुभ करना है तो पहले ही भावना तरंग को कार्यान्वित होने दो। कल वाले काम को आज ही निपटाने का प्रयत्न करो। पाप तो रोज ही अपना जाल लेकर हमारी घात में फिरता रहता है, पर पुण्य तो कभी-कभी ही होता है। उसे निराश, खाली हाथ लौटा दिया, तो न जाने फिर कब आए ?

यदि अपना मन कुछ सत्कर्म करने की बात सोचे, तो विचारणा का क्षेत्र इतना ही रहना चाहिए कि आज की परिस्थिति में हम क्या कर सकते हैं ? जो कर सकते हों, वही कर डालने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयत्न करना चाहिए। पीछे कभी धन वैभव होगा, तो उस समय बड़े-बड़े सत्कर्म करने की भावना भी बन सकती है, जो परिणति मात्र नहीं है, या जो कर करना संभव नहीं है। इसके लिए कल्पना के बड़े-बड़े पुल बाँधने से क्या लाभ ?

जिस प्रकार कमाना, खाना, सोना, नहाना, जीवन के आवश्यक नित्य कर्म होते हैं, उसी प्रकार परमार्थ भी मानव जीवन का एक अत्यंत आवश्यक धर्म-कर्तव्य है। इसकी उपेक्षा करते रहने से अपनी आध्यात्मिक पूँजी घटती है, आत्मबल नष्ट होता और अंतः भूमिका दिन-दिन निम्न स्तर की बनती चली जाती है। यही तो पतन है।

सद्भावनाओं की कमी स्वार्थ एवं निष्ठुरता कहलाती है। यह दुष्प्रवृत्ति बढ़ते-बढ़ते पाप का रूप धारण कर लेती है। जिसके अंतःकरण में परमार्थ बुद्धि विकसित है, जो उद्दात्त दृष्टिकोण के अनुसार सोचता रहता है, उसके लिए कोई बड़े पाप कर्म बन पड़ने संभव नहीं। पापी मनुष्य मूलतः संकीर्ण और स्वार्थी होता है। धन के अभाव में मनुष्य गरीब कहलाता है, उसी प्रकार सत्प्रवृत्तियों के स्रोत सूख जाने पर, उसके चरितार्थ कर सकने का अवसर न मिलने पर हमें पापी बनना पड़ता है। जहाँ प्रकाश न होगा, वहाँ अंधकार का रहना स्वाभाविक है। पाप से मुक्त होने के लिऐ पुण्य-प्रवृत्तियों का चरितार्थ करते रहना आवश्यक है और वह तभी संभव है, जब वैसा उत्साह उत्पन्न होने पर उसे कार्यान्वित करने के लिए भी साहस किया जा सके।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल स्वार्थ ही न सोचते रहिए

मनुष्य इच्छाओं का पुतला है। उसके व्यावहारिक जीवन में हर क्षण अनेकों आकांक्षाएँ उठा करती हैं। स्वास्थ्य की, धन की, पुण्यपरिवार और यश की अनेकों कामनाएँ प्रत्येक मनुष्य में होती हैं। इसके विविध काल्पनिक चित्र मस्तिष्क में बनते-बिगड़ते रहते हैं। जैसे ही कोई कामना स्थिर हुई कि मानसिक शक्तियाँ उसकी पूर्ति में जुट जाती हैं, शारीरिक चेष्टाएँ उसी दिशा में कार्य करने लगती हैं। संसार की विभिन्न गतिविधियाँ व क्रियाकलाप चाहे भौतिक हों अथवा आध्यात्मिक, इच्छाओं की पृष्ठभूमि पर निर्धारित होते हैं। रचनात्मक कदम तो पीछे का है, पहले तो सारी योजनाओं को निर्धारित कराने का श्रेय इन्हीं इच्छाओं को ही है।

स्थिर तालाब के जल में जब किसी मिट्टी के ढेले या कंकड़ को फेंकते हैं, तो उसमें लहरें उठने लगती हैं। पत्थर के भार व फेंकने की गति के अनुरूप ही लहरों का उठना, तेजी व सुस्त गति से होता है। ठीक इसी प्रकार हमारी इच्छाएँ क्या हैं? यह हमारी शारीरिक चेष्टाएँ, चेहरे के हाव-भाव बताते रहते हैं। व्यभिचारी व्यक्ति की आँखों से हर क्षण निर्लज्जता के भाव परिलक्षित होंगे। चेहरे का डरावनापन अपने आप व्यक्त कर देता है कि यह व्यक्ति चोर, डाकू, बदमाश है। कसाई की दुर्गंध से ही गाय यह पहचान लेती है कि वह वध करना चाहता है।

इसी प्रकार सदाचारी, दयाशील व्यक्तियों के चेहरे से सौम्यता का ऐसा माधुर्य टपकता है कि देखने वाले अनायास ही उनकी ओर खिंच जाते हैं। विचारयुक्त व गंभीर मुखाकृति बता देती है कि यह व्यक्ति चिंतनशील व दार्शनिक है। उनकी आत्मीयता की भावना से किसी जीव-जंतु को देखें, वह भयभीत होकर आपके उदार भाव की अंतर्मन से प्रशंसा करने लगेगा।

अनंत आनंद के केंद्र परमात्मा के हृदय में एक भावना उठी—**"एकोऽहं बहुस्यामि"** और इसी का मूर्तिमान् रूप यह मंगलमय संसार बनकर तैयार हो गया। यह उनकी सदिच्छा का ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फल है कि संसार में मंगलदायक और सुखकर परिस्थितियाँ अधिक हैं। यदि ऐसा न होता, तो यहाँ कोई एक क्षण के लिए भी जीना न चाहता। पर अनेकों दुःख-तकलीफों के होने पर भी हम मरना नहीं चाहते, इसीलिए कि यहाँ आनंद अधिक है।

इच्छा एक भाव है, जो किसी अभाव, सुख या आत्मतुष्टि के लिए उदित होता है। इस प्रकार की इच्छाओं का संबंध भौतिक जगत् से होता है। इनकी आवश्यकता या उपयोगिता न हो, सो बात नहीं। दैनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन चाहिए ही। सृष्टि-संचालन का क्रम बना रहे, इसके लिए दांपत्य जीवन की उपयोगिता से कौन इनकार करेगा ? पर केवल भौतिक सुख के दाँव-फेर में हम लगे रहें, तो हमारा आध्यात्मिक विकास न हो पाएगा।

हमें सौमनस्यता व सौहार्दपूर्ण सदिच्छाओं की आवश्यकता दिखाई देती है। प्रेम आत्मीयता और मैत्री की प्यास किसे नहीं होती ? हर कोई दूसरों से स्नेह और सौजन्य की अपेक्षा रखता है। पर इनका प्रसार तो तभी संभव है, जब हम भी शुभ इच्छाएँ जाग्रत् करें। दूसरों से प्रेम करें, उन्हें विश्वास दें और उनके भी सम्मान का ध्यान रखें। इन इच्छाओं के प्रगाढ़ होने से सामाजिक व नैतिक व्यवस्था सुदृढ़-सुखद होती है, पर इनके अभाव में चारों ओर शुष्कता का ही साम्राज्य छाया दिखाई देगा।

मानव जीवन गतिमान् बना रहे, इसके लिए स्वप्रधान इच्छाएँ उपयोगी ही नहीं आवश्यक भी हैं। पर इनके पीछे फलासक्ति की प्रबलता रही, तो उसकी तृप्ति न होने पर अत्यधिक दुखी हो जाना स्वाभाविक है। इच्छाओं के अनुरूप परिस्थितियाँ भी मिल जाएगी, ऐसी कोई व्यवस्था यहाँ नहीं। कोई लखपति बनना चाहे पर व्यवसाय में लगाने के लिए कुछ भी पूँजी पास न हो, तो इच्छापूर्ति कैसे होगी? ऐसी स्थिति में दुखी होना ही निश्चित है। हम जो भी इच्छाएँ करें, वह पूरी ही होती रहें, यह संभव नहीं। इनके साथ ही आवश्यक श्रम, योग्यता एवं परिस्थितियों का भी प्रचुर मात्रा में होना आवश्यक है। किसी की शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक हो और वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलक्टर बनना चाहे, तो यह कैसे संभव होगा ? इच्छाओं के साथ वैसी ही क्षमता भी नितांत आवश्यक है। विचारवान् व्यक्ति सदैव ऐसी इच्छाएँ करते हैं, जिनकी पूर्ति के योग्य साधन व परिस्थितियाँ उनके पास होती हैं।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम जिन परिस्थितियों में आज हैं उन्हीं में पड़े रहें, जितनी हमारी क्षमता है उसी से संतोष कर लें। तब तो विकास की गाड़ी एक पग भी आगे न बढ़ेगी। आज जो प्राप्त है, उसमें संतोष अनुभव करें और कल अपनी क्षमता बढ़े, इसके लिए प्रयत्नशील हों, तो इसे शुभ परिणिति कहा जाएगा। नेपोलियन बोनापार्ट प्रारंभ में मामूली सिपाही था। चीन के प्रथम राष्ट्रपति सनयात सेन अपने बाल्यकाल में किसी अस्पताल के मामूली चपरासी थे। इन्होंने अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए क्रमिक विकास का रास्ता चुना और अपना लक्ष्य पाने में सफल भी हुए।

इस व्यवस्था में लंबी अवधि की प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है, पर व्यक्तित्व के निखार का यही रास्ता है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले आप उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में कर लें। पीछे सारी मानसिक शक्तियों को उसमें लगा दें, तो सफलता की संभावना बढ़ जाती है। दृढ़ इच्छा शक्ति से किए गए कार्यों को विघ्नों बाधाएँ भी देर तक रोक नहीं पातीं। संसार में जिन लोगों ने भी बड़ी इच्छाओं की पूर्ति की उन्होंने पहले उसकी पृष्ठभूमि को अधिक सुदृढ़ बनाया, पीछे उन कार्यों में जुट पड़े। तीव्र विरोध के बावजूद भी सिकंदर झेलम पार कर भारत विजय दृढ़ मनस्विता के बल पर ही कर सका। शाहजहाँ की उत्कट अभिलाषा का परिणाम ताजमहल आज भी इस धरती पर विद्यमान है।

जीवन लक्ष्य की प्राप्ति भी ऐसे ही महान् कार्यों की श्रेणी में आती है। दूसरों से सिद्धियों-सामर्थ्यों की बात सुनकर आवेश में आकर आत्म साक्षात्कार की इच्छा कर लेना हर किसी के लिए आसान है। पर पीछे देर तक उस पर चलते रहना, तीव्र विरोध और अपने स्वयं के मानसिक झंझावातों को सहते हुए इच्छापूर्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की लंबे समय तक प्रतीक्षा की लगन हममें बनी रहे तो परमात्मा की प्राप्ति के भागीदार बन सकना भी असंभव न होगा।

इसके विपरीत यदि हमारी इच्छाशक्ति ही निर्बल, क्षुद्र और कमजोर बनी रही, तो हमें अभीष्ट लाभ कैसे मिल सकेगा ? अधूरे मन से ही कार्य करते रहे, तो लाभ के स्थान पर हानि हो जाना संभव है। इच्छाएँ जब तक बुद्धि द्वारा परिमार्जित होकर संकल्प का रूप नहीं ले लेतीं, पूर्ति संदिग्ध ही बनी रहेगी। इच्छाशक्ति यदि प्रबल न हुई तो वह लगन और तत्परता कहाँ बन पाएगी, जो उसकी सिद्धि के लिए आवश्यक है?

मनुष्य इच्छाएँ करे, यह उचित ही नहीं, वरन् आवश्यक भी है। इसके बिना प्राणि जगत् निश्चेष्ट एवं जड़वत् लगने लगेगा। किंतु इसका एक विषाक्त पहलू भी है, वह है इनकी अति और अनौचित्यता मनुष्य को क्लेशपूर्ण स्थिति में ले जा पटकने के लिए इच्छाओं की अति और उनकी अनौचित्यता ही प्रमुख कारण है।

अच्छी या बुरी जैसी भी इच्छा लेकर हम जीवन क्षेत्र में उतरते हैं वैसी ही परिस्थितियाँ व सहयोग भी जुटते चले जाते हैं। हमारी इच्छा होती है एम० ए० पास करें, तो स्कूल की शरण लेनी पड़ती है। अध्यापकों का साहचर्य प्राप्त करते हैं। पुस्तकें जुटाते हैं। तात्पर्य यह है कि इच्छाओं के अनुरूप ही साधन जुटाने की आदत मानवीय है। पर यदि यह इच्छाएँ अहितकारी हों, तो दुराचारिणी परिस्थितियाँ और बुरे लोगों का संग भी स्वाभाविक ही समझिए। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी कामना भले ही पूर्ण कर ले, पर उसे निंदा, परिताप एवं बुरे परिणाम ही भोगने पड़ेंगे। व्यभिचारी व्यक्ति अपयश और स्वास्थ्य की खराबी से बचा रहे, यह असंभव है। चोर को अपने कुकृत्य का दंड न भोगना पड़े, यह हो नहीं सकता। तब आवश्यकता इस बात की होती है कि अच्छी कामनाएँ ही करें।

शास्त्रकारों और मनीषियों ने इसलिए अपने स्वार्थहित की आवश्यकता भर चिंता करते हुए परमार्थ प्रयोजनों के लिए अधिक से अधिक प्रयास करते रहने का निर्देश दिया है। अपने निर्वाह और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हित के लिए स्वार्थ रखना और उसे पूरा करना भी आवश्यक है, पर उसे एक सीमा तक ही उचित कहा जा सकता है।

मनुष्य की अधिकांश इच्छाओं का केंद्र उसका स्वयं का हित और स्वयं का स्वार्थ है। अधिकांश व्यक्ति यह सोचते और प्रयत्न करते हुए अपनी जिंदगी गुजार देते हैं कि हम सुविधापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करें तथा जितना हो सके उतनी सुख-सुविधाएँ अर्जित करें।

लोग सोचते हैं कि हमें कोई बड़ा आदमी तो बनना नहीं और न कोई नामवरी कमाने की कामना है, फिर क्यों अपने को विभिन्न विधि-निषेधों में बाँधा जाए ? क्यों दूसरों के लिए अपने आपको कष्ट दिया जाए? वस्तुतः यह सोचने-समझने का एकांगी दृष्टिकोण है और स्वार्थपरता का परिचायक है।

अध्यात्म की दृष्टि से सारा विश्वं-ब्रह्मांड ही एक है। समग्र विश्व की चेतना का अधिष्ठाता विश्वात्मा है। बिखरी हुई आत्माएँ इसी के छोटे-छोटे घटक हैं। जब तक ये इकाइयाँ परस्पर मिलकर रहती हैं और एक दूसरे के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हैं, तभी एक दृश्यमान सौंदर्य का अस्तित्व है। यदि इनका विघटन होने लगे तो केवल धूलिमात्र ही इस संसार में शेष रह जाएगी। विश्वमानव की विश्वात्मा यदि अपनी समग्र चेतना से विघटित होकर संकीर्ण स्वार्थपरता में बिखरने लगे, तो समझना चाहिए विश्व-सौंदर्य की समाप्ति का समय निकट आ गया।

शरीर एक है। उसमें उँगलियाँ, उनके पोरुवे, जोड़, हड्डियाँ, मांसपेशियाँ आदि अनेक हैं। उन सबका मिला-जुला स्वरूप ही शरीर है। इन सभी का समन्वय जीवन-क्रम को चलाता है। वे सभी बिखरने लगें, अपनी अलग इकाई को ही सब कुछ मानें, दूसरे अंगों को सहयोग करने की बात सोचना छोड़ दें, तो फिर समझना चाहिए कि उन्हें भी दूसरों के सहयोग से वंचित होना पड़ेगा। ऐसी दशा में जिस स्वार्थ को साधने की उनकी इच्छा थी वह भी न सध सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ तभी तक सक्रिय रहेगा जब तक वह अपनी कमाई मुँह को देगा—मुँह पेट को देगा—पेट हृदय को और हृदय का अपने उपार्जित रक्त का वितरण समस्त शरीर को सौंपने का अर्थ प्रकारांतर से अनेक गुना लाभ अपने लिए उपार्जित करना। हाथ अपनी मुट्ठी में रखे रहें—मुँह या पेट को देने से इनकार कर दें, तो फिर भूखा शरीर सूखता जाएगा और वे हाथ भी उस विपत्ति में संत्रस्त हुए बिना न रहेंगे। अपनी कमाई वे मुँह को देते हैं, तो बदले में बहुमूल्य रक्त प्रवाह का लाभ लेते हैं और जितनी शक्ति कमाने में खर्च की थी उसकी भरपाई कर लेते हैं।

उँगली यदि शरीर की क्रमबद्ध सत्ता-व्यवस्था में भाग लेने से इनकार कर दें और अपने को अलग-अलग काटकर स्वतंत्र रहने में विश्वास करें, तो वह घाटे में रहेगी। कटी हुई उँगली देखते-देखते निर्जीव हो जाएगी और सड़ने लगेगी। कट जाने पर मनमर्जी करने का जो लाभ सोचा था, वह इसलिए न मिल सकेगा कि रक्त प्रवाह के लिए उसे दूसरे अंगों पर निर्भर रहना पड़ता था। सहयोग देने से इनकार करने का अर्थ सहयोग पाने का द्वार बंद कर देना भी है। हमारे एक के सहयोग न देने से भी समाज और शरीरक्रम चलता रहेगा, पर अपने को स्वार्थी एवं असामाजिक सिद्ध करने के बाद समाज का सद्भाव खो देने की जो हानि उठानी पड़ेगी, उससे अपनी ही क्षति अधिक होगी।

मनुष्य-शरीर विविध अंगों एवं अवयवों से मिलकर बना है। क्या शरीर का कोई अंग व्यक्तिगत रूप से इस बात का अधिकारी है कि वह अपना विकास त्याग दें और यह कहकर स्वस्थ रहना छोड़ दे कि यह तो हमारी इच्छा है कि हम उन्नत अवस्था में रहते हैं या गिरी दशा में? निश्चय ही शरीर के किसी अंग अथवा अवयव को ऐसा अधिकार नहीं है। उसकी दशा केवल उसकी अपनी व्यक्तिगत दशा नहीं है, उसकी दशा का संबंध पूरे शरीर से है। उसका अस्वस्थ अथवा अविकसित रहना—पूरे शरीर पर प्रभाव डालेगा, उसकी अनुपयुक्तता समग्र शरीर को या तो अस्वस्थ कर देगी अथवा उसकी सुघढ़ता-सुंदरता को बिगाड़ देगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसी प्रकार हर मनुष्य समाजरूपी शरीर का एक अभिन्न अंग अथवा अवयव है। उसकी व्यक्तिगत कोई सत्ता नहीं है और न समाज में उसका अस्तित्व ही अलग है। उसकी हर दशा का प्रभाव शरीर पर पड़ना ही है। समाज के सदस्य जितने स्वस्थ, शिक्षित, शिष्ट और उन्नत अवस्था वाले होंगे, समाज भी उतना ही स्वस्थ, शिष्ट और उन्नत होगा और उसके सदस्य जितनी अवनत अवस्था के होंगे, समाज भी उतना ही पतित और निकृष्ट अवस्था वाला होगा। हममें से जिस प्रकार किसी को अपना अलग अस्तित्व मानने का अधिकार नहीं है, उसी प्रकार यह भी अधिकार नहीं है कि हम उन्नत दशा में रहकर समाज को नीचे घसीटने की चेष्टा करें, हम समाज के अभिन्न अंग हैं और इसके लिए नैतिकताबद्ध हैं कि आत्मोन्नति द्वारा समाज की स्थिति में उच्चता का समावेश करें।

उन्नत दिशा की ओर अग्रसर हुए बिना जीवन में सुख-संतोष कहाँ ? सुख-संतोष तो व्यक्तिगत जीवन का लक्ष्य है ही। इसके विषय में तो कोई यह कह ही नहीं सकता कि हमें सुख-संतोष की कामना नहीं है। हम दुःख-दर्द का ही जीवन व्यतीत करते रहेंगे। यह हमारी व्यक्तिगत वस्तु होगी। इससे किसी का कोई संबंध नहीं। सुख-संतोष के लिए हम जीवन पर कोई प्रतिबंध अथवा नियम आरोपित करना पसंद नहीं करते। कहने को कोई भले ही मुख से बकवास कर दें, किंतु सुख-संतोष संसार का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। इसके अथवा इसकी आशा के बिना कोई जीवित ही नहीं रह सकता।

जो उन्नति की ओर बढ़ने का प्रयत्न नहीं करेगा, वह पतन की ओर फिसलेगा। यह स्वाभाविक क्रम है। कोई भी उन्नति अथवा अवनति के बीच खड़ा नहीं रह सकता। इस संसार में मनुष्य-जीवन की दो ही गतियाँ हैं, उत्थान अथवा पतन। तीसरी कोई भी माध्यमिक गति नहीं है। मनुष्य उन्नति की ओर न बढ़ेगा तो समय उसे पतन के गर्त में गिरा देगा। उस अवस्था में उसके जीवन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुःख पश्चात्ताप, आत्मग्लानि अथवा कष्ट-क्लेशों के सिवाय सुख-शांति की एक क्षीण किरण भी पास न आ सकेगी।

इतना ही नहीं, हम सब आध्यात्मिक दृष्टि से भी उन्नति की ओर बढ़ने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं। यह शरीर, यह जीवन और यह सारी सुविधाएँ हमारी व्यक्तिगत संपत्तियाँ नहीं हैं कि हम इनका जिस प्रकार चाहें सदुपयोग अथवा दुरुपयोग करते रहें। यह सब वस्तुएँ किसी दूसरे की संपदा है, जो हमें एक विशेष प्रयोजन के लिए प्रदान की गई हैं। यह सारी वस्तुएँ ईश्वर की धरोहर हैं और जीवात्मा का उद्धार करने के लिए, प्रयोग करने के लिए दी गई है। हम इनको विषयों के भोग में समाप्त कर डालें, किसी प्रकार भी हमें यह अधिकार प्राप्त नहीं है। जो कोई इस संबंध में अनधिकार चेष्टा करता है, उसे लोक से लेकर परलोक तक उसका समुचित दंड भोगना पड़ता है। यदि विषय-भोग ही इसका उद्देश्य रहा होता, तो परमात्मा हमें पशु-योनियों से श्रेष्ठ मनुष्य की योनि में जन्म देकर क्यों बुद्धि, विवेक, विचार और भावनाओं की अनुपम विभूतियाँ ही अनुग्रहित करता ?

हम आज मनुष्य हैं। यह स्थिति यों ही अनायास हमें प्राप्त नहीं हो गई है। यह सुफल है, जो हमें निरंतर उन्नति करने के पुण्य प्रयास में दिया गया है। कीट-पतंगों और पशु-पक्षियों की चौरासी लाख योनियों को क्रमशः पार करते हुए इस जीवात्मा को मनुष्य शरीर में ला सकने में सफल हो सके हैं। निम्न एवं साधनरहित कीट-पतंगों की स्थिति से उन्नति करते-करते मनुष्य जैसे महान् जीवन में आकर हम उस अभियान को बंद कर पतन की ओर जाने लगे, इसमें कोई बुद्धिमानी जैसी बात तो समझ में नहीं आती। जबकि यही वह अवसर है, जिसमें उन्नति का प्रयास सबसे अधिक करने की आवश्यकता है।

सामाजिक हित, सुख-शांति अथवा आत्मोद्धार कोई भी उद्देश्य लेकर क्यों न किया जाए, हम उन्नति की ओर अग्रसर होने को बाध्य हैं और हमें यह हितकर बंधन स्वीकार ही करना चाहिए। इन सभी उन्नतियों की ओर एक साथ अग्रसर होने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक ऐसा समन्वित मार्ग निकाला जा सकता है, जिसमें सामान्य जीवन से हटकर किसी विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है। वह मार्ग है—किसी सदुद्देश्यपूर्वक जीवन की धारा को मर्यादित मार्गों में चलाना और ऐसे मार्ग न अपनाना, जिस पर चलने से आत्मा निषेध करे।

स्वार्थपूर्ण जीवन सबसे दुःखदायी जीवन है। इसका परिणाम नरक जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता है। संघर्ष, द्वेष-ईर्ष्या, लोभ, लिप्सा आदि दोषों का मूल कारण स्वार्थपरता के कारण ही मनुष्य चोर, छली, बेईमान और दुष्ट बन जाता है। ऐसा नहीं कि लोग इसको जानते न हों। लोग जानते हैं, फिर भी इसी विभीषिका में गिरते चले जाते हैं। स्वार्थ की ओर पैर बढ़ाने से उन्हें आशंका होती है, आत्मा धिक्कारती है और लोग उसकी आवाज अनसुनी करके उस ओर बढ़ते रहते हैं। यह अप्राकृतिक प्रवृत्ति है, मनुष्य को इस निंदनीय दुर्बलता को त्याग देना चाहिए। निःस्वार्थ भाव से अपने स्वत्वों की रक्षा और कर्तव्यों का पालन करने से सुंदर शीतल और संतोषपूर्ण अंतः—शांति मिलती है।

स्वार्थ त्याग देने से परमार्थ का भाव स्वतः आ जाता है। परमार्थपूर्ण जीवन स्वर्गीय सुख-शांति का आगार है। किसी का हित करना, आवश्यकता-पीड़ितों की सेवा करना, किसी की सहायता में तत्पर रहना और किसी को दुःख न देना आदि ऐसी वृत्ति है, जिसमें आनंद की अनिवर्चनीय पुलक समायी रहती है।

परमार्थी व्यक्ति बाहर से भले ही साधारण स्थिति का दिखाई दे, वह जोर-जोर से हँसता, खिलखिलाता भले ही दृष्टिगोचर न हो, तथापि उसका अंतःकरण परिपूर्ण ही बना रहता है। उसमें एक अहेतुक संपन्नता, गरिमा और गौरव की अनुभूति बनी रहती है। परमार्थी की आत्मा ही संतुष्ट नहीं रहती, बल्कि उसके संपर्क में आने वाला हर आदमी संतुष्ट और प्रसन्न रहता है, जिससे उसकी स्वयं आत्मा का आनंद बढ़ जाता है। सारे लोग उसे प्यार करते हैं, उस पर श्रद्धा के फूल बरसाते हैं और प्रशंसा किया करते हैं। समाज का यह अनुदान किसी के लिए भी सदा-सर्वदा वांछनीय है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमार्थ बुद्धि रखने वाले व्यक्ति का सामाजिक ही नहीं पारिवारिक जीवन भी बड़ा सुखी व संतुष्ट रहता है। परिवारों में अधिकतर कलह का कारण स्वार्थपरता ही होती है। लोग अपनी-अपनी लगाए रहते हैं। अपने लिए ही अधिक से अधिक वस्तुएँ और अपेक्षा चाहते रहते हैं। हर कोई यह चाहता है कि परिवार में उसकी महत्ता और नेतृत्व ही बना रहे, प्रौढ़ सदस्य प्रौढ़ों के बीच और अवयस्क सदस्य समवयस्कों के बीच इसी भावना से प्रेरित रहकर कलह उत्पन्न करते रहते हैं। इस स्थिति में तू-तू, मैं-मैं होना स्वाभाविक ही है। जिस पारिवारिक जीवन को स्वर्ग तुल्य सुखदायक बतलाया गया है, वह नरक तुल्य कष्टदायक बन जाता है।

जिन परिवारों के प्रमुख गृहस्थ परमार्थ दृष्टिकोण के होते हैं, वे सबसे पहले अपने स्वार्थ का त्यागकर अधिकारों को कर्तव्यों में समाविष्ट कर लिया करते हैं। सबके साथ समान प्रेम करते और सबको यथोचित आदर देते हैं। अपना कोई भाग न रखकर सारा का सारा परिजनों को बाँट देते हैं। ऐसे समभावी मुखिया को कष्ट पहुँचाने वाला कोई काम करना किसी परिजन को पसंद न होगा। फिर जिस परिवार में त्याग, निःस्वार्थ और स्नेह का त्रिविध समीर बहता हो, वहाँ के किसी सदस्य का चित्त अवांछनीय ताप से व्याकुल रह भी कैसे सकता है ? सुगंध का स्वभाव है कि वह जिसके संपर्क में आती है, उसे भी अपने समान ही सुगंधित कर देती है। गुणों का संपर्क दूसरों को भी गुणी बना देता है। परिवार नायक की त्यागमय गतिविधि अन्य सदस्यों को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती। एक बार अस्वार्थ का सुख अनुभव कर लेने पर फिर कोई भी व्यक्ति स्वार्थ को पास नहीं ठहरने देगा।

इस प्रकार जिसने स्वार्थ के त्याग और परमार्थ के ग्रहण की महानता स्वीकार कर अपना जीवन तदनुरूप ढाल लिया, उसके लिए मानो इसी संसार में स्वर्ग का द्वार उद्घाटित हो गया। जिसके परिवार में सुख-शांति बनी रहे और समाज जिसके लिए स्नेह एवं श्रद्धा के सुमन लिए खड़ा रहे, उसके लिए इससे बढ़कर स्वर्ग अन्यत्र कहाँ हो सकता है ? हम सब देवताओं के जिस अनदेखे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्ग की कल्पना करते हैं, उसमें भी तो इस प्रकार के सुख-संतोष, हर्ष और प्रसन्नता का आरोप किया करते हैं। वहाँ भी इससे अधिक और क्या होता है ? और उसे पाने के लिए भी तो स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ का ही पथ अपनाना पड़ता है।

परमार्थपरायण व्यक्ति का दृष्टिकोण यह रहता है कि परमात्मा की कृपा और माता-पिता का उपकार ही साकार होकर हम सबको शरीर रूप में मिला है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि मानव जीवन की आधारशिला उपकार ही है। इसलिए हमारा यह जीवन परोपकार में ही लगाना चाहिए। इसी में इसकी सार्थकता है और इसी में कल्याण।

परोपकार के सदृश इस संसार में कोई दूसरा धर्म नहीं है। अपने अस्तित्व को संसार के हित में बलिदान कर देने से जिस महान् धर्म-फल की प्राप्ति होती है, उसकी तुलना अन्य कर्मकांडों से नहीं की जा सकती है। प्रसिद्ध संत मोओत्से कहा करते थे कि—"यदि मेरे शरीर को पीसकर चूर्ण बना लेने में संसार के एक भी प्राणी का भला हो सकता है, तो मैं उसके लिए सहर्ष तैयार हूँ।"

परोपकार के समान पुण्यदायक कोई भी दूसरा धर्म नहीं है। यदि ऐसा होता तो तपस्या में निरत महर्षि दधीचि देवों की भलाई के लिए अपना शरीर नहीं दे देते। वे शरीर की रक्षा करते और तपस्या करके बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ प्राप्त करते और मुक्ति के लिए प्रयत्न करते रहते। किंतु अवसर पाते ही उन्होंने तुरंत ही परोपकार में अपना शरीर दान कर दिया। वे जानते थे कि हजारों वर्ष तप करने पर भी जो मुक्ति कठिनता से मिलती है, वह परोपकार में शरीर त्याग देने से तत्काल सरलतापूर्वक मिल जाती है।

परोपकार में सर्वस्व दे देने वाले एक दधीचि ही नहीं थे। भारत में तो शिवि, हरिश्चंद्र, मोरध्वज, कर्ण, दिलीप आदि न जाने कितने महापुरुष ऐसे हुए हैं, जिन्होंने परोपकार को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म माना और अवसर आने पर उसका सहर्ष निर्वाह भी किया। वह सारे मनीषी इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं थे कि यह शरीर कल्याण का साधन होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर भी नाशवान् है। मानव जीवन का कोई ठिकाना नहीं कि किस समय समाप्त हो जाए ? यह तब तक भी चल सकता है जब तक साधना पूरी हो और बीच में भी समाप्त हो सकता है। जीवन का रहना सदा संदिग्ध बना रहता है। शरीर से जहाँ पुण्य कर्म बनते हैं, वहाँ कभी प्रमादवश इससे कोई त्रुटि भी हो सकती है। यही साधना के बीच में व्यवधान भी खड़ा कर सकता है।

जीवन-प्रवाह तो ऊँचे-नीचे मार्गों के बीच से होकर बहता है। अस्तु, इस शरीर, इस जीवन को परोपकार में समर्पित करना साधना का सबसे निरापद मार्ग है। इसी विवेचना के आधार पर उन्होंने अवसर पाते ही अपना जीवन परोपकार में लगा दिया और ऐसे ही सत्पुरुष क्षण-क्षण अपना जीवन परोपकार में ही लगाये चलते हैं। परोपकार से बढ़कर निरापद दूसरा कोई धर्म नहीं है।

प्राणिमात्र का हित, उपकार और कल्याण में रत रहना तथा मन, वचन, कर्म से दूसरे का हित चाहना और करना, किसी के अहित अथवा पीड़ा का विचार न करना और विश्व-बंधुत्व की भावना को विकसित और विस्तृत करते रहना आदि सारी सदाशयताएँ परोपकार ही मानी गई हैं। तथापि इनमें आध्यात्मिक शांति और निष्कलंक धर्मफल का समावेश तभी होता है, जब इसके पीछे कोई स्वार्थ-भाव निहित न हो। अन्यथा यही पुण्य-कर्म आत्मा के लिए एक प्रवंचना बन जाएगा।

परोपकार का भाव तो प्रकृति के समान निःस्वार्थ होना चाहिए। सूर्य, चंद्र, वायु, नदी, वन, पहाड़ नित्य निरंतर संसार के उपकार में ही लगे रहते हैं, किंतु उसके बदले में न कुछ माँगते हैं और न चाहते हैं, चुपचाप अपना सर्वस्व दान करते रहते हैं। सूर्य नित्य नियम से अपना प्रकाश और ऊष्मा संसार को देने के लिए पृथ्वी की परिक्रमा करते रहते हैं, किंतु उसके बदले में किसी से कुछ चाहते नहीं। चंद्रमा नियम से संसार को आलोक और शीतलता दान करते रहते हैं, किंतु सर्वथा निःस्वार्थ भाव से। इसी प्रकार वन-वृक्ष, नदी और पर्वत भी सदैव निःस्वार्थ भाव से ही अपने फल-फूल, काष्ठ, जल और वनस्पतियाँ संसार को देते हुए कभी कोई प्रतिकार नहीं चाहते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोग जाते हैं और अधिकारपूर्वक उनकी संपत्ति का भाग लेकर चले आते हैं। उनके भंडार, उनकी संपत्ति सदा-सर्वदा संसार हित के लिए खुली पड़ी रहती है। वे उसके लिए न तो किसी का हाथ रोकते हैं और न प्रतिदान के लिए हाथ फैलाते हैं। धन्य हैं ऐसे निःस्वार्थ, निष्काम और उदार परोपकारी जो परमात्मा की कृपा और आत्मा की सच्ची शांति के अधिकारी बनते हैं।

जब जड़ प्रकृति संसार का उपकार करने में इस गहरे निष्काम भाव से लगी रहती है, तो क्या चेतन होकर मनुष्य संसार के कल्याण में नहीं लग सकता ? लग सकता है और अवश्य लग सकता है। उसे लगना भी चाहिए। परोपकार में निरत होने से केवल संसार का ही भला नहीं होता प्रत्युत् अपना कल्याण भी होता है। मनुष्य के चरित्र की परीक्षा परोपकार की कसौटी पर ही होती है। जो इसमें अपने को उत्तीर्ण कर लेता है, वह सहज रूप से भवसागर से उत्तीर्ण हो जाता है।

परोपकार का पुण्य मनुष्य को सभ्य-सुसंस्कृत, उच्च विचार और भावना वाला बना देता है। परोपकार से मनुष्य का मन निर्मल और विकाररहित बनता है। उसके जीवन में सतोगुण की वृद्धि और आत्मा में आध्यात्मिक आलोक का समावेश होता है। परोपकार की भावना जितनी उच्च-विशाल और निष्काम होती जाती है, मनुष्य उतना ही परमात्मा के सान्निध्य की ओर बढ़ता जाता है। इस आत्मिक उन्नति और विकास का सुख अनिवर्चनीय है। इसका अनुभव तो वही त्यागी पुरुष कर सकता है, जो परोपकार के यज्ञ में अपने सर्वस्व को समिधा मानकर समर्पित कर देता है।

सत्पुरुषों की पहचान का सबसे बड़ा लक्षण है—परमार्थ। कोई कितना ही सभ्य, शिष्ट और सुशील क्यों न दिखाई दे। नम्रता और विनय उसके शब्द-शब्द से टपकती चलती हो, मुख पर कितनी ही करुणा और कृतज्ञता का भाव विराजमान् क्यों न रहे, यदि उसका जीवन परमार्थपूर्ण नहीं है, उसके जीवन और वैभव का कोई अंश परोपकार एवं परमार्थ में नहीं लगता तो, उसे उस प्रकार का वास्तविक मनुष्य नहीं माना जा सकता, जैसा कि वह ऊपर से दीखता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धनाढ्यता का लक्षण धन उपार्जन अथवा संचय ही मात्र नहीं है, उसका लक्षण उदारता ही है। जो जितना अधिक उदार और परोपकारी है, वह उतना ही अधिक धनवान् है। एक पैसे का उपकार करने वाला गरीब कहीं अधिक धनवान् है, उस व्यक्ति की तुलना में जो करोड़ों का स्वामी होकर भी परोपकार के विषय में कृपणता करता है। जो परमार्थ में लीन है, तन, मन, धन से परोपकार एवं परहित में निरत है, वही सज्जन है, वही सत्पुरुष है और वही धनवान् है।

परोपकार केवल मानवीय गुण ही नहीं, वह आध्यात्मिक सद्गुण भी है। इसकी आराधना करने से लोक और परलोक दोनों का बनाव बनता है। इसी गुण पर जहाँ आत्मा का उत्थान निर्भर है, वहाँ संसार और समाज-सृजन की व्यवस्था और विकास की धुरी भी इसी पर निर्भर रहती है। आज यदि समाज के सारे लोग केवल स्वार्थी बन जाएँ और दूसरों के हित का संपादन न करें, तो कल ही समाज में घोर अनर्थ घटित होने लगे। अराजकता, संघर्ष और छीना-झपटी का बोल-बोला हो जाए, जो उद्दंड, बली और शक्तिशाली हों, वे सारे साधनों और संपत्ति पर अपना एकाधिपत्य स्थापित कर लें और जो सामान्य, साधारण अथवा अपेक्षाकृत निर्बल हों, वे बेचारे पिसकर ही रह जाएँ। परहित और परोपकार के बिना संसार का क्रम एक क्षण भी नहीं चल सकता। अस्तु, आत्मा और समाज के कल्याण के लिए यथासाध्य परोपकार के कार्य करते ही रहना चाहिए।

माता-पिता संतान को जन्म देते हैं। उनके पालन-पोषण और विकास के लिए कष्ट उठाते हैं। धन के लिए परिश्रम करते, सुख और सुविधा के लिए चिंता करते हुए वे यह सब करते हैं, निःस्वार्थ भावना से ही। यद्यपि माता-पिता को पहले से ही यही पता नहीं रहता है कि उनका पुत्र बड़ा होकर उनकी सेवा करेगा, उनके लिए सुख और आराम के साधन जुटाएगा, तब भी वे बच्चों की सेवा में हर प्रकार का त्याग एवं उत्सर्ग करते ही रहते हैं। इतना ही नहीं, संसार में कुपुत्रों का उदाहरण देखकर भी और स्वयं भी एक से बढ़कर एक कष्ट पाते हुए भी दूसरे का पालन-पोषण करते ही रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे अपनी इस सेवा के पीछे किसी प्रकार के प्रतिकार की भावना नहीं रखते। बच्चे की सेवा वे सेवा-भाव से ही करते हैं। बच्चों द्वारा कष्ट पाने के उदाहरणों को देखकर भी वे सेवा से संकोच नहीं करते। उन्हें उसमें आनंद किसी आशा के कारण नहीं होता है। वह सुख, उस परमार्थ भाव का ही होता है, जो संतान की सेवा में उनके अनजाने ही निहित रहता है। परोपकार के संबंध में इसी प्रकार माता-पिता की तरह ही निःस्वार्थ भाव रखने से उसके द्वारा अनिवर्चनीय आनंद, की उपलब्धि होती है।

परमार्थ परायणता आध्यात्मिक प्रौढ़ता का चिह्न है—पेड़ जब पुष्ट हो जाते हैं, तब माँगते किसी से नहीं, वरन् हर घड़ी देते ही देते हैं। लकड़ी, पत्ते, पुष्प, फल, छाया, सुगंध का अनुदान वे निरंतर अपरिचित रूप से दूसरों को देते रहते हैं, यही उनका स्वाभाविक धर्म बन जाता है। अध्यात्म की भूमिका में जैसे-जैसे मनुष्य विकसित होता जाता है, वैसे-वैसे उसका परमार्थ-पराग भी खिले हुए कमल पुष्प की तरह दशों दिशाओं में उड़ने लगता है। उसकी उदारता, करुणा, महानता, सदाशयता एक घड़ी चैन से नहीं बैठती, वह लुटाने के लिए व्याकुल रहती है, गाय के थन में जरा भी दूध जमा हुआ कि वह कराहने लगती है, जब तक उसे खाली नहीं कर देती, तब तक बेचैनी अनुभव करती हैं। पेड़ अपने परिपक्व फलों को बिना किसी के माँगे धरती पर टपकाते रहते हैं, ताकि आवश्यकताग्रस्तों को मधुर अनुदान अनायास ही बिना मूल्य मिल जाए। यही आध्यात्मिकता है।

जैसे-जैसे मनुष्य का आंतरिक स्तर विकसित होता जाता है, वह इस विश्व वसुंधरा को अधिक सुंदर, अधिक सुविकसित, अधिक सुसंस्कृत बनाने के लिए तत्पर दिखाई देता है। सेवा और अनुदान ही उसके प्रिय विषय और प्रिय व्यसन बन जाते हैं। अपने लिए वह स्वर्ग, मुक्ति या सिद्धि में से किसी की कामना नहीं करता, वरन् यही सोचता रहता है कि जो कुछ मुझे मिला है, उसे विश्वमानवता को अधिक सुसज्जित बनाने के लिए किस तरह उस सबको लौटा दूँ ?

देवत्व का स्वरूप है दया और दान। इस संसार में जो दुःख और दैन्य है, उसे देखना पड़ता है, उससे उसका हृदय पिघल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ता है। 'संत हृदय नवनीत समाना' सूक्ति के अनुसार उसकी पिघलती हुई करुणा एवं सदाशयता इस बात के लिए विवश करती है कि पीड़ित मानवता के घावों पर मरहम लगाने के लिए उसके पास जो कुछ बल, बुद्धि, विद्या, संपत्ति तथा स्थिति है—उसका अधिकाधिक भाग समर्पण करें। ऐसी स्थिति में वह अपना घर-परिवार थोड़े लोगों में सीमाबद्ध नहीं करता। बेटे, पोतों को ही उसकी सारी विभूतियों का लाभ मिलना चाहिए, ऐसा नहीं सोचता, वरन् सभी को अपना समझता है और मोहवश किन्हीं संबंधियों के लिए मरते-खपते रहने की संकीर्णता छोड़कर हर दर्दमंद की, हर पिछड़े व्यक्ति की सेवा-सहायता करने में तत्पर हो जाता है।

☆ परमार्थ ही सच्चा स्वार्थ

कहा जा सकता है कि परमार्थ मानव जीवन का सच्चा स्वार्थ है। 'परम' माने बड़ा, वास्तविक; 'अर्थ' माने प्रयोजन, स्वार्थ। जो वास्तविक स्वार्थ बड़ा स्वार्थ है, उसी को परमार्थ कहते हैं। धन कमाना, स्वाद चखना, अहंकार जताना, यह बहुत छोटे और क्षणिक लाभ हैं। वास्तविक चिरस्थायी लाभ वह है जिसके आधार पर आत्मा की सुख-शांति और मुक्ति का पथ प्रशस्त हो सके। शरीर वाहन है आत्मा स्वामी। वाहन की सुविधा, सुरक्षा का ध्यान तो रखा जाए, पर स्वामी की सर्वथा उपेक्षा न कर दी जाए। यह तथ्य जिसकी समझ में आ जाता है, वह आत्म कल्याण की विचारणा और क्रिया पद्धति को प्राथमिकता देता है। शरीर और परिवार के निर्वाह की भी वह व्यवस्था करता है, पर आत्मा के लक्ष्य और उद्देश्य को साधने के लिए भी वह समुचित प्रयत्न करता है। उन महान् प्रयोजनों में भी उसका समय, श्रम, पुरुषार्थ और मनोयोग कम-से-कम उतना तो लगता ही है, जितना शरीर निर्वाह में। हर दूरदर्शी और विवेकशील व्यक्ति की गतिविधि यही हो सकती है। वह जानता है कि शरीर तो कुछ दिन का साथी है।

सुख-दुःख, उत्थान-पतन का प्रतिफल तो अनंत काल तक आत्मा के सामने ही आने वाला हैं। इसलिए शरीर मोह की एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीमा होनी चाहिए और उसकी वासनाओं की पूर्ति में इतना न उलझ जाना चाहिए कि आत्मिक स्वार्थों की पूर्ण उपेक्षा ही होने लगे। उसके लिए फुरसत न मिलने, आर्थिक तंगी का बहाना करके अब तो मन बहलाया जा सकता है, पर जब शरीर वृद्ध, रुग्ण अथवा मृत हो जाता है, तब भूल समझ में आती है और सूझता है कि इस तुच्छ वाहन के मनोरंजन में बहुमूल्य मानव जीवन चला गया और जो करना चाहिए था, उसको सर्वथा भुला दिया गया। वह घड़ी घोर पश्चात्ताप की होती है। तब अपनी भूल का पता चलता है, किंतु समय बीत चुका होता है और हाथ मल-मलकर पछताने के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रहता।

अच्छा हो कि समय से पूर्व चेतें, अपने स्वरूप को समझें, आत्मा के हितसाधन की बात सोचें और परमार्थ पथ के पथिक बनें। केवल राम नाम लेने से आत्मिक उद्देश्य पूरे हो सकते हैं, इस भ्रांत धारणा को मन में से हटा देना चाहिए, इतना सस्ता आत्म कल्याण का मार्ग नहीं हो सकता। पूजा उचित और आवश्यक है, पर उसकी सफलता एवं सार्थकता तभी संभव है जब जीवन क्रम भी उत्कृष्ट स्तर का हो। अन्यथा तोता रटंत किसी का कुछ हितसाधन नहीं कर सकती। नाम जप कर लेने मात्र से परमार्थ प्रयोजन सिद्धि हो जायेगी, यह सोचते रहना—सस्ते नुसखों से मन बहलाते रहना उचित नहीं। हमें यथार्थवादी होना पड़ेगा। जीवन साधना के प्रधान अंग परमार्थ को अपनाना पड़ेगा। परम स्वार्थ का स्वरूप—आत्मनिर्माण है। जिससे लोकमंगल के लिए सेवा धर्म अपनाना, अपनी परोपकार परायण सेवा प्रवृत्ति का परिचय देना नितांत आवश्यक है। जिसकी आत्मा में विश्वमानव की सेवा करने, इस संसार को अधिक सुंदर, सुव्यवस्थित एवं सुखी बनाने की भावनाएँ उठती रहती हैं और इस मार्ग पर चलने की प्रबल प्रेरणा करती है—वस्तुतः सच्चा परमार्थी और ईश्वर भक्त वही है। उसी का नाम-जप सार्थक कहा जा सकता है।

परमार्थ का जितना तत्त्व, जितना अंश, हमारे जीवन क्रम में सम्मिलित होगा, उतनी ही आंतरिक शांति मिलेगी और उतना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त होगा। परमार्थ साधना के बिना, सेवा-धर्म का व्रत पालन किए बिना मनुष्य जन्म की सार्थकता नहीं मानी जा सकती। इसलिए हर अध्यात्मवादी को अपने शारीरिक एवं सांसारिक स्वार्थों को सीमित रखकर आत्मिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए अधिकाधिक ध्यान देते चलने का क्रम बढ़ाना पड़ता है।

परमार्थ का नाम सुनते ही लोग बहुधा यह समझकर घबरा उठते हैं कि परमार्थ की प्रेरणा देने वाले उन्हें अपने आवश्यक स्वार्थों से छुड़ाकर कुछ इस प्रकार परोपकार तथा परसेवा के कार्यों में लगा देना चाहते हैं कि उनका परिवार छूट जाए। वे जीवन में आर्थिक उन्नति से वंचित रहकर न तो कोई तरक्की कर पाएँगे और न किसी ऊँचे पद पर पहुँच पाएँगे। वे गरीब रहकर सारे सुखों से रहित हो जाएँगे।

कहना न होगा कि इस प्रकार का विचार करने वाले लोग वस्तुतः परमार्थ का वास्तविक अर्थ नहीं समझते। मनुष्य का सच्चा स्वार्थ-परमार्थ ही माना गया है। जो भी काम ऊँचा उज्ज्वल स्वार्थ लेकर किया जाता है, उसका अंतर्भाव एक प्रकार से परमार्थ ही होता है। स्वार्थ सिद्धि का परिणाम आत्मसंतोष, आत्मसुख और आत्मकल्याण ही तो हो सकता है। यही परिणाम परमार्थ का भी माना गया है। अंतर केवल इतना ही है कि स्वार्थ का सुख अस्थायी एवं अंत दुःखद होता है। किंतु परमार्थ से प्राप्त सुख स्थायी और विक्षोभरहित होता है। कोई भी बुद्धिमान्, किन्हीं ऐसे स्वार्थों द्वारा सुख क्यों न पाना चाहेगा, जिनमें परमार्थ का भी अंतर्भाव भरा हुआ हो!

आत्मा का स्वार्थ जिन विचारों और कार्यों द्वारा सिद्ध होता है उन्हीं के माध्यम से संसार का कल्याण करने वाले परमार्थ की भी सिद्धि होती है। फिर क्यों न ऐसी गतिविधि ही अपनाई जाये जिससे स्वार्थ की भी सिद्धि हो और परमार्थ का भी साधन बने। उदाहरण के लिए स्वार्थ का सबसे स्थूल रूप उपार्जन को ले लिया जाए। उपार्जन का यहाँ पर अर्थ है धन कमाना। धन कमाने के लिए लोग खेती करते हैं और नौकरी करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यों तो खेती, व्यवसाय अथवा नौकरी करना मूलतः स्वार्थ है। पर यदि इसमें ऊँची भावना का समावेश कर दिया जाए, तो इसी स्वार्थ के साथ परमार्थ का भी लाभ होने लगे। कृषक खेती करते हैंतो, सोचते हैं इससे जो उपज होगी उससे अपना काम चलेगा, बच्चों का पालन होगा, जीवन की सुख-सुविधा की प्राप्ति होगी। इसके साथ यदि यह भाव और भी शामिल कर लिया जाए कि खेती करना हमारा पुनीत कर्तव्य है, इससे राष्ट्र को, समाज को और प्राणियों को अन्न मिलेगा। इससे जो हमें लाभ होगा उससे हम संसार के एक अंश परिवार का पालन करेंगे, बच्चों को पढ़ा-लिखाकर इस योग्य बना सकेंगे कि वे समाज और संसार का कुछ हित कर सकें, अपनी आत्मा का उद्धार कर सकें।

ऐसा भाव जागते ही खेती का वह स्वार्थपूर्ण काम परमार्थ कार्य बन जाएगा। उसका आनंद उस सुख से स्थायी, उदात्त तथा अधिक होगा, जो कि केवल संकीर्ण स्वार्थ रखने पर होता। विचारों की उदात्तता मनुष्य के कार्यों को भी ऊँचा बना देती है। खेती जैसे कार्य में भी परहित की परमार्थ भावना का समावेश हो जाने पर मनुष्य उसे अधिक पवित्रता, अधिक लगन और अधिक गौरव के साथ करेगा। इससे आनंद भी आयेगा, संतोष भी मिलेगा और लाभ भी होगा। स्वार्थ में ही परमार्थ की साधना हो जाएगी।

इसी प्रकार व्यवसाय अथवा नौकरी की भी बात है। हम व्यवसाय करते हैं—इसलिए कि लोगों को वस्तुओं की सुविधा हो, राष्ट्र और देश की संपत्ति बढ़े, बहुत-से व्यक्तियों को काम मिले। व्यक्तिगत व्यवसाय को इस प्रकार सार्वजनिक सेवा-कार्य मानकर चलने पर वह स्वार्थ परमार्थ बन जाएगा। व्यवसाय में ऊँची भावना के जुड़ते ही मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार, चोर बाजारी और मिलावट की प्रवृत्ति पर आघात होगा तथा वे स्वयं ही नष्ट होने लगेंगी। ज्यों-ज्यों व्यवसायी निष्कलंक व्यवसाय का सुंदर स्वरूप देखता जाएगा, त्यों-त्यों वह उसे दृढ़तापूर्वक अपनाता चला जाएगा। ज्यों-ज्यों वह इस क्षेत्र में उन्नत बनता जाएगा त्यों-त्यों उसका भय, आशंका और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संशय दूर होता और आत्मिक सुख मिलता जाएगा। इस प्रकार स्वार्थ भी बनेगा और परमार्थ भी।

नौकरी में जब तक संकीर्ण स्वार्थ का भाव साथ बँधा रहता है, मनुष्य अपने को पराधीन, दूसरों की चाकरी करने वाला और दीन-हीन समझता रहता है। पर ज्यों ही वह उसमें ऊँचे भावों को सम्मिलित करता है, उसकी सारी दीनता चली जाती है। उसके सोचने का दृष्टिकोण इस प्रकार हो जाता है कि हम किसी एक व्यक्ति की चाकरी नहीं कर रहे हैं, हम पूरे राष्ट्र या पूरे समाज की सेवा कर रहे हैं। अपना काम पूरी जिम्मेदारी से करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। जिसका पालन पूरी तत्परता से करना है और मैं कर भी रहा हूँ। ऐसा भाव आते ही वह स्वार्थपरक कार्य भी परमार्थपरक बनकर अधिकाधिक संतोष, सुख और उत्साह देने लगेगा। मनुष्य अपने को पराधीन नहीं, वरन् स्वावलंबी अनुभव करने लगेगा। यही स्वाधीनता, यही अभय और यही आत्मगौरव तो परमार्थ का परिणाम है। ऊँचे स्वार्थ अथवा साधारण स्वार्थ में उन्नत भावों का समावेश स्वयं एक परमार्थ है, जो हर प्रकार से सरल एवं सुगम है, जो संसार का कोई भी व्यक्ति बिना कठिनाई के कर सकता है।

विचारणीय है कि स्वार्थ की सिद्धि किसलिए की जाती है ? आत्म संतोष और आत्म सुख के लिए ही न। कोई व्यक्ति यदि अपने स्वार्थ के लिए किसी दूसरे के स्वार्थ का हनन करता है, तो क्या यह आशा की जा सकती है कि उसे सुख, संतोष और शांति मिलेगी ? दूसरों को हानि अथवा कष्ट पहुँचाकर कितने ही बड़े स्वार्थ की सिद्धि क्यों न कर ली जाए, उससे शांति नहीं ही मिल सकती। सबसे पहले तो जिसे कष्ट हुआ है, वही शांति से न बैठने देगा, दूसरे शासन, समाज और लोक निंदा का भय बना रहेगा और जहाँ भय होगा, वहाँ शांति असंभव ही है। तीसरे, मनुष्य में जो परमात्मा का निष्कल एवं न्यायशील अंश है, आत्मा की विद्यमानता है, वह उसे सोते-जागते किसी भी समय चैन नहीं लेने देगी हर समय टोकती ही रहेगी कि तुमने अमुक को कष्ट पहुँचाकर जो स्वार्थ सिद्धि की है, वह ठीक नहीं है। इसके लिए लोक या परलोक में दंड का भागी बनने के लिए तैयार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहना चाहिए। ऐसी दशा में स्वार्थ की वह सिद्धि सुखदायक तो नहीं, त्रासदायक अवश्य बन जाएगी। तब कहाँ तो स्वार्थ का मंतव्य पूरा हुआ और कहाँ परमार्थ का उद्देश्य ?

स्वार्थ परमार्थ बने इसका एक सरल-सा उपाय यह है कि केवल अपने उचित स्वार्थ की सीमाओं तक ही नियंत्रित रहा जाए, उसकी परिधि इतनी न बढ़ाई जाए कि वह दूसरों की मर्यादाओं का उल्लंघन करने लगे। यह संभव किस प्रकार हो ? वह इस प्रकार कि अपने स्वार्थों में लोभ, लिप्सा और तृष्णा को स्थान न लेने देना चाहिए। स्वार्थ में जब इन विकारों का दोष आ जाता है, तब अच्छा स्वार्थ भी निकृष्ट वासनाओं में बदल जाता है। जिससे सारे पाप-संतापों का श्रीगणेश होने लगता है। मनुष्य का लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। ऊँचा स्वार्थ परमार्थ ही है। अस्तु, एक स्वार्थ और स्वार्थ-परमार्थ के दोहरा काम निकालने के लिए स्वार्थ भावना को ऊँचा उठाइए, उसे अपनी मर्यादा तक ही सीमित रखिए और उसमें लोभ, लिप्सा अथवा तृष्णा का विकार कदापि न आने दीजिये।

जब हम दूसरों के हित और भले के लिए अपने समय व साधनों का उपयोग करेंगे, तो निश्चित है कि उसका प्रभाव समाज पर होगा। समाज में उससे अच्छी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, अच्छा वातावरण बनता है, तो प्रत्यक्षतः स्वयं का भी लाभ होगा ? जब यह संभव है तब कौन कह सकता है कि हमारा सुख-शांति के परिणाम वाला स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा? इसलिए लोकसेवा, लोकहित और लोक कल्याण के परमार्थ कहे जाने वाले कार्मों को भी स्वार्थ ही समझना चाहिए। परमार्थ भी वस्तुतः स्वार्थ ही है, एक ऊँचा स्वार्थ और बुद्धिमान् व्यक्ति उसकी सिद्धि करने में कभी नहीं चूकते। परमार्थपरक स्वार्थ ही सच्चे सुख, वास्तविक संतोष और यथार्थ कल्याण का हेतु है, निकृष्ट अथवा निंदित स्वार्थ नहीं।

अब यहाँ पर एक छोटा-सा प्रश्न और उठता है। वह यह कि आखिर निकृष्ट स्वार्थ भावना से निकलकर ऊँचे स्वार्थ की परिधि में जाया किस प्रकार जाए ? उसका एक साधारण-सा उपाय यह है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि अपने व्यक्तित्व को उज्ज्वल, उन्नत और विस्तृत बनाया जाए। जब तक हम इस आत्म गरिमा में नहीं प्रतिष्ठित होते कि हम समाज के एक उत्तरदायी अंग हैं, परमात्मा के पवित्र अंश और संसार के प्राणी मात्र के सिरमौर मानव हैं, तब तक हमें अपनी निकृष्टताओं पर न तो लज्जा आएगी और न आत्म ग्लानि होगी। हम अपने व्यक्तित्व की महानता से अपनी निकृष्टताओं की तुलना करें और देखें कि कौन-कौन से दोष हमारी प्रतिष्ठा के अनुरूप हमें नहीं बनने देते हैं। जिन वासनाओं, जिन अभीप्साओं और जिन भावनाओं को हम अपने व्यक्तित्व के अनुरूप न देखें, उन्हें तुरंत ही निकालकर फेंक दें। हमारा व्यक्तित्व मूल रूप से उज्ज्वल एवं उत्कृष्ट ही है। दोष-पाप और मल ही उसे मलीन तथा निकृष्ट बना देते हैं। जिस दिन हम अपने इन विकारों को निकालकर फेंक देंगे, उस दिन ही हमारा व्यक्तित्व दूध के समान उज्ज्वल तथा निर्विकार हो उठेगा। अपने मूल व्यक्तित्व का दर्शन पाते ही हमारे निकृष्ट स्वार्थ स्वयं ही हमें छोड़कर चले जाएँगे और उनके स्थान पर परमार्थपरक ऊँचे स्वार्थ स्थापित हो जाएँगे। तब न तो जीवन में अशांति की संभावना होगी और न असंतोष का समावेश।

इसी प्रकार व्यक्तित्व को विस्तृत अथवा समाज में फैला लेने से हम स्वयं ही अपने स्वार्थ में प्रतिबंधित होकर चलने लगेंगे और कोई भी ऐसा काम न करेंगे, जिससे लोक निंदा अथवा लोकोपवाद का भागी बनना पड़े।

अपने वर्तमानकालीन व्यक्तित्व का परिमार्जन कर मूल व्यक्तित्व का दर्शन करिए। इससे निकृष्टताओं से मुक्ति मिलेगी। स्वार्थों में उदात्तता का समावेश होगा और आज के हमारे निंदित स्वार्थ कल से ही परमार्थपरक बनकर आत्म संतोष, आत्म शांति और आत्म सुख का उद्देश्य पूरा करते हुए स्वार्थ एवं परमार्थ दोनों का सुख देंगे।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृश्य जगत् की परमार्थ प्रेरणा

आत्मा के लिए भगवान् ने जितने शरीर बनाए हैं, उनमें से एक मनुष्य शरीर ही सर्वांगपूर्ण और सुंदर है। मनुष्य शरीर के एक-एक अवयव, चक्र, कोण और उपत्यिकाओं में भगवान् ने ऐसी-ऐसी शक्तियाँ भरी हैं, जिनके द्वारा वह संपूर्ण त्रैलोक्य में शासन कर सकता है। बुद्धि, विवेक, ज्ञान, श्रवण, दर्शन, घ्राण, संदेश, संप्रेषण के लिए वाणी, लेखनी आदि के ऐसे-ऐसे सुंदर साधन उसे मिले हैं, जैसे सृष्टि के किसी भी प्राणी को नहीं मिले। भगवान् की शक्तियाँ अनंत हैं, पर वह प्रकाश में नहीं आ सकतीं। मनुष्य को उसने अपना प्रतिनिधि बनाकर इस आशा से भेजा कि वह अपनी क्षमताओं का उपयोग विश्व कल्याण और प्राणि मात्र के हित में करेगा। किंतु बंदर के हाथ तलवार वाली कहावत की तरह मनुष्य ने उन ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का दुरुपयोग ही किया। बेईमान और रिश्वतखोर ऑफिसर की तरह उसने किया तो परपीड़न, शोषण और अत्याचार ढाए या फिर रोटी-बेटी, रुपया-पैसा वाले निकृष्ट जीवन में गलकर मर गया और अपने पीछे परमात्मा की दी हुई विभूति—मनुष्य शरीर को भी कलंकित कर गया।

मनुष्यों में बुद्धि, धन, बल, प्रतिभा, भावना आदि की संपदाएँ ऐसी हैं, जिन्हें उसके व्यक्तित्व का बीज कहा जा सकता है। इसी के आधार पर हम ऊँचे उठते और आगे बढ़ते हैं। बीज सड़ा-गला हो, तो उससे वंश वृद्धि न हो सकेगी। गुण, कर्म, स्वभाव की विभूतियाँ यदि स्वस्थ और समर्थ न हों, तो कोई व्यक्ति प्रगति के पथ पर दूर तक अग्रसर न हो सकेगा। ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि हमारी विभिन्न शारीरिक और मानसिक हलचलें इन विभूतियों को और पुष्ट करने के लिए ही होती हैं। भौतिक और आत्मिक संपदाओं-बीज तत्त्वों को विकसित, परिष्कृत करने से अधिकाधिक मात्रा में संपन्न होने की अभिलाषा स्वाभाविक मानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाती है—वह बनी ही रहती है और उनके लिए जाने-अनजाने प्रयास चलते ही रहते हैं।

वनस्पति-जगत् में भी यही प्रक्रिया अपने ढंग से उसी तरह चलती रहती है जिस तरह मनुष्यों में चलती है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य आत्म विस्तार है। हम बढ़ें, विकसित हों और सुदूर क्षेत्र तक फैलें, इसके लिए भाँति-भाँति के प्रयत्न-पुरुषार्थ किए जाते हैं, यहाँ तक कि युद्ध भी। आध्यात्मिक क्षेत्र में यही विस्तारवाद आत्मीयता का क्षेत्र बढ़ाकर सबमें अपने को और अपने में सबको देखने वाला तत्त्वदर्शन हृदयंगम किया जाता है। बीज तत्त्व का विकास और सत्ता का विस्तार करने के लिए हम मनुष्यों के विभिन्न क्रियाकलापों को सँजोया जाना देखते हैं। यदि यह दो प्रवृत्तियाँ न होतीं तो कदाचित् पेट और प्रजनन जैसी निकृष्ट स्तर के जीवों में पाई जाने वाली तुच्छ हलचलों के अतिरिक्त हम और कुछ महत्त्वपूर्ण सोचने या करने में समर्थ ही न हो पाते। ठीक यही बात वनस्पति-जगत् पर भी लागू होती है।

पौधे बढ़ते और विकसित होते हैं। अंततः उनकी प्रौढ़ता फलवती होती है और उन पर फल लगते-लदते हैं। यह फल मनुष्यों सहित अन्य प्राणियों के लिए आहार का काम देते हैं, पर जहाँ तक वृक्ष के लिए इन फलों का अपना उपयोग है, वह उनकी बीजसत्ता को अक्षुण्ण रखने, परिपुष्ट बनाने और सुविस्तृत करने के उद्देश्य में ही सन्निहित देखी जा सकती है। वृक्षमात्र परोपकार के लिए ही नहीं फलते, उनके अपने जीवन की सार्थकता भी फलवान् होने में ही है।

फलों में गूदा भरा होता है और गूदे के भीतर बीज रहते हैं। यह बीज एक जगह इकट्ठे नहीं रखे रहते, वरन् दूर-दूर फासले पर रहते हैं। पूरे वृक्ष पर एक ही फल नहीं लगता, वरन् उनकी बहुत बड़ी संख्या होती है। प्रकृति ने ऐसी व्यवस्था क्यों की ? इस पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि प्रगति के आधार जिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार मनुष्यों के लिए बनाए गए हैं, वैसे ही वृक्षों के लिए भी विनिर्मित किए गए हैं।

गूदे का उद्देश्य है बीज को पोषण देना—परिपुष्ट करना—प्रौढ़ावस्था तक पहुँचाना। माता के गर्भ में जिस प्रकार भ्रूण पकता-पलता है, उसी प्रकार फल के उदर में गूदे के मध्य बैठा हुआ बीज धीरे-धीरे सबल और समर्थ बनता रहता है। मानव जीवन के अधिकतर क्रियाकलाप भौतिक उपार्जन के लिए होते हैं। इससे सुविधा-सामग्री तो मिलती ही है, साथ ही वे विशेषताएँ-विभूतियाँ भी परिपक्व होती हैं, जिनके आधार पर प्रत्येक क्षेत्र में सफलताएँ पाई जा सकती हैं। इसे विकसित व्यक्तित्व की परिपुष्ट सत्ता कहते हैं।

एक वृक्ष अनेक फल और प्रत्येक फल में अनेक बीज इसलिए उत्पन्न करता है कि उसकी सत्ता को अधिकाधिक विस्तार करने का अवसर मिले। उसे सीमित दायरे में संकीर्णता की परिधि में ही आबद्ध रहकर अविकसित कहलाने का कलंक न सहना पड़े। आत्म-विस्तार बिना न तो आत्म-संतोष मिल सकता है और न आत्म-गौरव। जब मनुष्य अपूर्णता से पूर्णता की ओर, क्षुद्रता से महानता की ओर बढ़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है, तो वृक्ष भी उसी प्रकृति प्रेरणा का अनुसरण क्यों न करें।

प्रत्येक बीज में एक पूर्ण वृक्ष सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है। परिपुष्ट होने के पश्चात् उसका अगला उद्देश्य यह रहता है कि उसी जाति के नए वृक्ष उत्पन्न करे। साथ ही यह भी आवश्यक हो जाता है कि क्षेत्र की दृष्टि से समीपवर्ती सीमा बंधन को लाँघकर सुदूर क्षेत्रों तक अपनी सत्ता को सुविस्तृत बनाया जाए। फल के भीतर सारे बीज एक जगह ही इकट्ठे चिपके नहीं रहते। गूदे के भीतर वे थोड़ा-थोड़ा फासला देकर अलग-अलग जमे होते हैं। इसका उद्देश्य यह है कि उन्हें पृथक्-पृथक् रूप से सुदूर क्षेत्र में जाने का और सुविस्तृत परिधि में विस्तार करने का अवसर मिले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि गूदे में सब बीज इकट्ठे रखे होते, तो फल के पक कर गिरने पर वे सभी एक जगह ही उगते। फलतः वे सभी एक दूसरे की खुराक छीनते—फैलने की जगह प्राप्त न कर पाते और ऐसे ही सूख-मुरझाकर समाप्त हो जाते। विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि पुरखों के घर-आँगन को छोड़कर अन्यत्र भी जाने और फैलने का प्रयत्न किया जाए।

वृक्ष की सत्ता फलों के माध्यम से यही सब करती रहती है। फलने और पकने के साथ-साथ उनकी वितरण चेष्टा भी उत्साह-पूर्वक चलती है। गूदे में बीजों का स्थान अलग-अलग होता भी इसीलिए है कि उनके वितरण की व्यवस्था बन सके। आहार में प्रायः गूदा ही काम आता है। बीज कड़े होते हैं इसलिए वे फेंक दिए जाते हैं या संग्रह कर लिए जाते हैं। गूदा समाप्त हो जाने पर भी बीजों का अस्तित्व बना रहता है। यदि उन्हें पीसकर नहीं खाया गया है, तो चबाने पर भी उनमें से अधिकांश साबुत बच जाते हैं। पेट में भी कम ही पचते हैं। मल मार्ग से निकलकर वे पृथ्वी पर बिखर जाते हैं और इधर-उधर छितराते, धक्के खाते और वृद्धि करते हैं।

मनुष्य जीवन की प्रगति के भी दो आधार हैं—एक भौतिक उपलब्धियों के लिए प्रयत्न करते हुए अपने में गुण, कर्म, स्वभाव- परक बीज सत्ता को परिपुष्ट करना और दूसरा उस पुष्ट सत्ता को सुविस्तृत क्षेत्र में वितरण करके उन विभूतियों को दूर-दूर तक बखेरना-विकसित करना। प्रथम चरण को शक्ति-संचय कह सकते हैं और दूसरे चरण को सेवा साधना। बल वृद्धि का, सामर्थ्य संपादन का उद्देश्य यही हो सकता कि उनके वितरण-विस्तार का लाभ सुदूर क्षेत्रों को मिले। जो लोग शरीर या परिवार के भीतर ही अपनी प्रतिभा का लाभ सीमित किए बैठे रहते हैं उन्हें गूदे के भीतर ही सड़ जाने वाले बीज की उपमा दी जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गूदे में पककर विकसित हुए बीज सुदूर क्षेत्रों तक फैलें, इसके लिए प्रकृति ने अनेकों प्रकार की व्यवस्थाएँ की हैं। प्राणियों द्वारा उनका खाया जाना और मल-विसर्जन के साथ उनका दूर-दूर जा पहुँचना प्रत्यक्ष ही है। कई बीज फेंके या संग्रह करने पर किसी न किसी प्रकार वंश वृद्धि करने का अवसर पाने में सफल हो जाते हैं। बीजों का व्यवसाय भी होता है। अनाज की तरह अन्य बीज भी खरीदे-बेचे जाते हैं और वे यहाँ से वहाँ की यात्रा करते हैं। यह तो प्रचलित व्यवस्था हुई। प्रकृति भी इस दिशा में भारी योगदान करती है और तरह-तरह के ऐसे साधन जुटाती है, जिससे वह उत्पन्न हुई बीज संपदा किसी एक स्थान तक सीमित होकर न रह जाए, वरन् उसे सुदूर क्षेत्रों में वितरित होने का अवसर मिले।

हवा असंख्यों बीजों को अपने साथ उड़ाकर एक स्थान से दूसरे स्थानों तक पहुँचाती है। इस स्तर के हलके बीजों की वनस्पति-जगत् में कमी नहीं है। 'कुनैन' जिस सिनकोना पौधे से बनती है, उसके बीज इतने हलके होते हैं कि एक औंस में ७० हजार तोले जा सकें। आर्किडो के बीज इससे भी हलके होते हैं। इनकी बनावट भी ऐसी होती है जैसे—पक्षी के परों की; हलकापन और बनावट की विशेषता दोनों के कारण हवा उन्हें आसानी से उड़ा ले जाती है और कहीं से कहीं ले जाकर पटकती है। कुछ बड़े और भारी बीजों में सूर्यमुखी, डोंडिलिओन, सौक्य, वेलकुन, आक, सेमर, सरकंडा आदि के बीज ऐसे हैं, जो पैराशूट की तरह बने होते हैं, वे हवा का तनिक-सा सहारा पाकर लंबी उड़ान उड़ने लगते हैं। नीचे उतरने और ऊपर चढ़ने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती। आक के बीज में जो रुई चिपकी होती है उससे उनका उड़ना कितना सुहावना लगता है ? ब्लड फ्लावर, करची, व्यूमोनशिया, चाटियम जैसे पौधों के बीज भी रोंएदार होते हैं, जिनके कारण उनकी वायु-यात्रा बड़ी सरल बन जाती है। अरलू, पराय, सहजन, चीड़ के बीजों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनावट भी पक्षियों के परों जैसी होती है। वे अपनी इच्छा से नहीं उड़ पाते, पर हवा उनकी उड़ने की सारी व्यवस्था स्वयं जुटा देती है। कुछ तो पूरे फल ही उड़नशील होते हैं, वे अपने बीज परिवार को लेकर क्षेत्र विस्तार प्रयोजन पूरा करने के लिए हवा की सहायता से यात्रा करने पर उतर पड़ते हैं। ऐसे उड़ाकू फलों में होलोक, मधुलता, जमीकंद, फ्रेक्सीनस, होपियामेपल, डिपटीरोकारपस, साल आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से एलेथस की बनावट हवाई जहाज से बिलकुल मिलती-जुलती है, उसे देखकर यह असमंजस पड़ता है कि इन्हें देखकर हवाई जहाज बने या हवाई जहाज देखकर प्रकृति ने इन्हें बनाया है। आँधियाँ धूल तिनके ही नहीं, हलके बीजों को भी अपने साथ उड़ा ले जाती हैं और कहीं से कहीं उन्हें जा पटकती हैं, जड़ी-बूटियाँ प्रायः इसी प्रकार यहाँ से वहाँ जा पहुँचती हैं।

कुछ फल भी स्वार्थी मनुष्यों की तरह बड़े कृपण होते हैं। वे पके हुए बीजों को भी अपने सूखे खोखले में समेटे बैठे रहते हैं। स्वयं भले ही उससे कुछ प्रयोजन सिद्ध न हो, पर दूसरों को लाभ न मिलने पाए, ऐसी मनोवृत्ति वाले मनुष्य ही नहीं फल भी दुनिया में मौजूद हैं। लाल पोस्त, सत्यानाशी, कुत्ताफूल, हंसलता तथा धतूरा इसी प्रकार के फल हैं। हवा जब उन्हें झकझोरती है, तो खुद भी उलटने-पुलटने लगते हैं और बीजों को छोड़ने के लिए भी विवश होते हैं। स्वेच्छा से न सही बलात्कार से सही, चलना उन्हें भी प्रकृति के कानूनों पर ही पड़ता है। संग्रही कोई बनना भी चाहे तो प्रकृति उसे वैसा करने की आज्ञा नहीं दे सकती। जो दिया गया है, वह देने के लिए है—जो यह नहीं जानते, उन्हें इन फलों की तरह दुर्गति और बल प्रयोग का सामना करना पड़ता है।

पानी में उगने वाली वनस्पतियों के बीजों की लहरें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती हैं। यह बीज हलके और हवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भरे स्पंज की तरह होते हैं, जिससे वे लहरों पर आसानी से तैरते रह सकें। नदियों और समुद्रों के तटों पर उगे हुए पेड़-पौधे भी अपने बीज-जल को समर्पित करके उन्हें अन्यत्र चले जाने की खुशी-खुशी छूट देते हैं। मनुष्य ही ऐसा है, जो स्वजनों को अन्यत्र उपयोगी स्थानों पर जाने से रोककर घर की चहारदिवारी में ही बंद रखने के लिए मोहग्रस्त बना रहता है। कमलगट्टे अक्सर पानी में तैरते हुए ही कहीं से कहीं जा उगते हैं। नारियल के फलों का पानी में गिरना और सहस्रों मील दूर जन शून्य द्वीपों में जा उगना इसी प्रकार संभव हुआ है।

कई फल ऐसे हैं जिनके छिलके बहुत कड़े होते हैं। पक जाने और सूख जाने पर भी वे बीजों को बाहर नहीं निकलने देते। इस कठोर नियंत्रण की उग्र प्रतिक्रिया होती है। बीज विद्रोह कर बैठते हैं और उस भीतरी तनाव से छिलका एक विस्फोट की तरह फटता है और बीज उछलकर बाहर निकल जाते हैं। गुल मेंहदी, वुडसेरिल, नाइटजेसमिन, अरंड, कालमेघ, वज्रदंती फ्लाक्स, कंचनलता आदि फलों में अक्सर फटने और बीज उगलने की प्रक्रिया देखने को मिलती है। प्रह्लाद, विभीषण, कैकेयी, बालि आदि को अपने अभिभावकों एवं गुरुजनों के विरुद्ध इसी प्रकार विद्रोह करना पड़ा था। अनुचित प्रतिबंध के अहंकारी दुराग्रह अक्सर ऐसे ही विस्फोट उत्पन्न करते रहते हैं।

कुछ बीज ऐसे होते हैं जो हवा, पानी, मनुष्य आदि की सहायता न पाने पर स्वयं ही अपनी प्रवृत्ति-प्रेरणा से आत्म विस्तार का रास्ता अपने बलबूते बनाते हैं और जिसका भी अंचल हाथ लगे उसी को पकड़कर आगे चल पड़ते हैं। लटजीरा, गोखरू, वनऔखरा, चोरकाँटा, बुइयाठीकरी, चित्रक आदि के फल अथवा बीज अपने कानों के साथ पशुओं-पक्षियों के शरीरों एवं मनुष्यों के कपड़ों को पकड़े लेते हैं और उन पर सवारी गाँठकर कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चींटियाँ, चूहे, गिलहरी आदि संग्रही प्रकृति के प्राणी बीजों को इकट्ठा करते हैं। बिलों में से छितराकर वे फिर जहाँ-तहाँ जा पहुँचते हैं। पक्षियों के पैरों में चिपकी मिट्टी के साथ अथवा उनकी बीट के माध्यम से भी अनेक वनस्पतियाँ तथा वृक्ष लंबी यात्राएँ करते हुए पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक जा पहुँचाते हैं।

वनस्पतियों और वृक्षों की यह आत्मविस्तार की अपनी उपलब्धियों को सुदूर क्षेत्र में वितरण करने की प्रवृत्ति ठीक उसी प्रकार पाई जाती है जैसी कि प्रकृति-प्रेरणा मनुष्य को उपलब्ध है। जो जीवन विद्या का मर्म जानते हैं, वे अपनी आंतरिक विशेषताओं को बीजसत्ता की तरह परिपक्व करने के लिए अपनी हलचलों का गूदा सँजोए। साथ ही यह भी ध्यान रखे कि यह समस्त उपार्जन वितरण के लिए है, ताकि संसार की शोभा-सुषमा का विस्तार होता रहे, उसमें कमी न आने पाए।

मनुष्य की सेवा-सहायता पशु करते हैं। अब तो कुछ दिन से उनका श्रम मशीनें भी हलका करने लगी हैं। पहले जब वे नहीं बनी थीं, तब तो मनुष्य का जीवन-आधार एक प्रकार से पशुओं का श्रम ही था। वह स्वयं तो अपने दुर्बल शरीर से बहुत कम कर पाता था, जो करता था वह इतना नहीं होता था कि सुख-सुविधायुक्त जीवन जी सके। पशुओं का श्रम, दूध, बाल, चर्म आदि की सहायता से ही उसकी समृद्धि भूतकाल में बनी रही। आज भी विश्व का अर्थ—उत्पादन पशुओं के माध्यम से इतना होता है, जो विश्व उपार्जन का दो तिहाई है। एक तिहाई ही मशीनें उत्पन्न करती हैं।

जिस प्रकार पशु मनुष्य जाति के जीवनाधार रहे हैं उसी प्रकार वनस्पति न केवल मनुष्यों की वरन् पशु-पक्षियों की जीवनाधार रही है। यहाँ तक कि कीट-पतंग भी उसी के अंचल में पलते-पनपते रहे हैं। विशाल दृष्टि से देखा जाए, तो वनस्पति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही जीवन का मूल स्वरूप है। उसी को खाकर जीवधारी जीवित हैं।

जलजीवों का जीवन-क्रम भी यही है। समुद्र-सरोवरों में एक हल्के किस्म की वनस्पति होती है, वही जलजीवों का मुख्य आधार है, अकेले पापी पर ही वे जीवित नहीं रह सकते। जीवन रक्षा के लिए उन्हें भी वनस्पति चाहिए और वह जिन जलाशयों में छोटे या बड़े रूपों में होगी उसी में जलजीव जन्मेंगे-बढ़ेंगे।

वनस्पति जगत् का सर्व प्रधान और सर्वत्र उपलब्ध पौधा है—घास। यह घास पैरों तले कुचलती रहती और तुच्छ-नगण्य प्रतीत होती है, पर उसकी गरिमा पर विचार करें, तो वह आश्चर्य-जनक महत्त्व की प्रतीत होती है। घास अपने आपको जीव जगत् की रक्षा अभिवृद्धि और पोषण के लिए किस प्रकार खपाती है, यह दृष्टव्य है।

वनस्पतिशास्त्रियों का कथन है कि घास धरती के पाँचवें हिस्से में छाई हुई है। उसकी छह हजार जातियाँ अब तक ढूँढ़ी जा चुकी हैं। उसे एक प्रकार से जीवधारियों का जीवन ही कहना चाहिए। पानी की बाढ़ पर रोकने के लिए बाँध जो काम करते हैं, उससे लाखों गुना अधिक काम घास करती है। यदि घास न हो, तो वर्षा का पानी इतनी तेजी से बहे कि नदियों में विकराल बाढ़ें आएँ और जमीन का बहुत बड़ा भाग कटकर खड्ड बनने लगे और उपयोगी मिट्टी समुद्र में पहुँचकर उपजाऊ क्षेत्र घटा दें। वह मिट्टी समुद्र को उथला कर दे और भरा हुआ पानी बाहर फैलने से तटवर्ती स्थानों के डूबने का खतरा हो जाए। जमीन में पानी सोखने की शक्ति घास की जड़ों से ही पैदा होती है। यदि घास न हो तो सूखी मिट्टी ठोस या रेतीली पानी की अधिक मात्रा देर तक पचा सकने में समर्थ न हो।

हर मौसम और हर परिस्थिति में घास अपने आपको जीवित रखती है। घोर गर्मियों में जबकि यह सूख जाती है और जल गई प्रतीत होती है। तब भी उसका जड़ वाला भाग गीला और जीवित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है, यही कारण है कि वर्षा होते ही वह देखते-देखते उग आती है और चारों ओर हरियाली छा जाती है। पहाड़, मैदान, मरुस्थल, शीत प्रधान, अति उष्ण प्रदेशों में ही नहीं, अथाह समुद्र की तली में भी उसका अस्तित्व पाया जाता है। 'काई' के रूप में वह जलाशयों में भी छाई रहती है। अमरबेल की तरह बिना जड़ के भी, बिना जमीन की सहायता लिए हुए भी वह अपना अस्तित्व बनाए रह सकती है।

घास का सूक्ष्म रूप है उसका पराग। वह हवा के साथ चार हजार फुट की ऊँचाई तक उड़ जाता है और आँधी-तूफानों के साथ हजारों मील की यात्रा करके कहीं से कहीं जा पहुँचता है। मनुष्य के समान तथा जानवरों के शरीर के साथ लिपटकर भी वह छूत की बीमारी की तरह लंबी यात्राएँ करता है और जहाँ भी अवसर मिलता है, वहीं अपनी वंश वृद्धि करने में लग जाता है। पुराने-जमाने में अफ्रीका से आदिवासी, अमेरिका में मजूरी के लिए लाए गए थे। घास के पराग भी उनके साथ चले आए और वह घास, जो अफ्रीका में ही होती थी, अमेरिका में भी उगने लगी।

हम गेहूँ, जौ, चना, मक्का आदि अन्न खाते हैं। यह सब क्या है ? घास के बीज ही तो हैं। पालक, बथुआ, धनियाँ, पुदीना, मेथी आदि छोटी घास है। बड़ी घास शाक-भाजियों और खीरा, ककड़ी, खरबूज, तरबूज आदि के रूप में फलती है। ईख एक बड़े किस्म की घास ही तो है। चीनी का मिठास वस्तुतः घास का ही अनुदान है।

कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, सब घास पर ही जीवित रहते हैं। पौधों पर चिपकने वाले कृमि-कीटकों से लेकर कीड़े-मकोड़ों तक की संख्या इस पृथ्वी के जीव जगत् का नौ बटे दसवाँ भाग है। पशु, पक्षी, मनुष्य और बड़े जलचरों की संख्या एक बटे दस ही है। इनमें से अधिकांश का अधिकांश जीवन घास पर ही निर्भर है। पशु तो घास पर ही जीवित हैं। प्रकारांतर से और सबका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन भी उसी पर निर्भर रहता है। छोटे कीड़े-मकोड़े घास की पत्तियाँ जड़ें आदि खाते हैं। उन्हें चिड़ियाँ खा जाती हैं। चिड़िया या पशु मांसाहारियों के पेट में चले जाते हैं। इस प्रकार मांसभक्षी जीवों का घुमा-फिराकर मूल भोजन घास ही है। इसलिए उसे जीवधारियों का मूलभूत आधार कहा गया है। जड़ी-बूटियाँ खाने वाला यदि दो सेर घास खा ले, तो उसे उतनी ही शक्ति मिल सकती है। समझा यह जाता है कि दाल, दूध, अंडा, मांस से ही प्रोटीन प्राप्त होती है, पर लोग यह भूल जाते हैं कि घास में भी प्रोटीन की मात्रा कम नहीं है और वह अपने ढंग की सबसे निर्दोष प्रोटीन है। टूटी-फूटी मांस-पेशियों की मरम्मत का उसमें अनुपम गुण है।

घास ऊपर जितनी लंबी दीखती है उसकी जड़ें जमीन के अंदर उससे कहीं अधिक लंबी होती हैं। यही कारण है कि मिट्टी को बाँधे रहती हैं, उसे पोला रखती हैं। जिससे वह पानी, खाद और हवा सोखकर उत्पादक बनी रह सके। मिट्टी से जितना जीवन वह लेती है, उससे भी ज्यादा उसे प्रदान भी करती है। जमीन का उपजाऊपन घास पर ही निर्भर है। जहाँ घास नहीं जमेगी, वह जमीन अनुत्पादक और वीरान जैसी रहेगी।

मनुष्य शरीर भी भौतिकशास्त्रियों की दृष्टि से एक प्रकार का वृक्ष ही है। उसकी सारी आवश्यकता भूमि द्वारा उत्पन्न वनस्पतियों से ही पूरी होती है। हवा और जल को छोड़कर मुख से खाये जाने वाले पदार्थों में वनस्पति ही एक मात्र वह आधार है, जिसे 'अन्न' या आहार कहते हैं। उसके बिना किसी का भी निर्वाह नहीं हो सकता।

घास हर जगह उपलब्ध होने से उसे सस्ती समझकर उपेक्षणीय समझा भर जाता है, पर वस्तुतः उसका महत्त्व किसी भी बहुमूल्य पदार्थ से कम नहीं है। एक पौंड घास में इतनी कैलारी शक्ति रहती है कि आदमी उतने से ही डेढ़ घंटे तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लकड़ी काट सके। बीजों में इससे चार गुनी अधिक शक्ति होती है।

संसार में आय के साधन—कारखाने, व्यापार आदि को समझा जाता है, पर सच बात यह है कि मनुष्य जाति का आय का सबसे बड़ा साधन पशु है और वे घास पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार घास को आर्थिक दृष्टि से संसार का सबसे बड़ा आय-साधन भी माना जा सकता है। साफ-सुथरी जमीन को घास की ही देन कह सकते हैं। यदि वह न हो तो सर्वत्र धूल ही धूल उड़ती दिखाई पड़े या फिर चट्टानों जैसी निर्जीव स्थिति दीख पड़े।

मकान, किवाड़, फर्नीचर, फल, चूल्हा, चटाई, कपड़े, कागज, जिधर भी नजर उठाकर देखें, वहाँ घास, वृक्ष और वनस्पति का ही वरदान, अनुदान बिखरा पड़ा है। वह मनुष्य की लकड़दादी है। सृष्टि के निर्माणकाल में सबसे पहले वनस्पति का ही उद्‌भव हुआ था। एककोषीय, बहुकोषीय जीव तो उसके बहुत बाद में बने और मनुष्य तो उन प्राणधारियों की शृंखला से हजारों पीढ़ी पश्चात् जन्मा है।

घास का ही विकसित रूप है वृक्ष। गुल्म-झाड़ियाँ, पौधे और विशाल वृक्ष उसी प्रकार छोटे हैं, जिस प्रकार चतुष्पदों में छोटी चुहिया और विशालकाय हाथी। छोटा मच्छर और बड़ा सारस। इनके आकार-प्रकार, बड़े-छोटे हैं, वह वर्गीकरण तो उसी स्तर पर होगा। वनस्पति में छोटी घास और बड़े विशालकाय वृक्ष गिने जा सकते हैं। उन सबकी अपनी विशेषताएँ ऐसी हैं, जो सृष्टि की सुंदरता और संतुलन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं।

कैलीफोर्निया में पाया जाने वाला डगलस वृक्ष ३०० से ४०० फुट तक लंबा होता है, इसका तना ५० फुट व्यास तक का पाया जाता है। 'फर' नामक वृक्ष की आयु हजारों वर्ष मानी जाती है। यदि इन विशाल वृक्षों का तना खोखला कर दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाए, तो उसमें २०० बच्चों को पढ़ाने जैसा एक स्कूल आसानी से बन सकता है। अमेरिका में कई ऐसे फर के वृक्ष हैं, जिनके तने को खोखला करके उनमें बीच में सड़क निकाल दी गई है। सड़क बनाने में उनके काटने की अपेक्षा यह तरीका अधिक अच्छा समझा गया।

संत, ब्राह्मण, दानी, परोपकारी मनुष्य ही नहीं होते। गाय जैसे पशु भी उसी स्तर के वंदनीय वर्ग में आते हैं। वृक्षों में भी कुछ वृक्ष ऐसे ही हैं, जिन्हें संत या दानवीर की उपाधि दी जा सकती है।

उत्तरी आस्ट्रेलिया में एक विशालकाय गोरख इमली का वृक्ष है। यह पेड़ दो हजार वर्ष पुराना है। इसका खोखला तना किसी समय नगर-जेल की तरह काम में लाया जाता था।

ऐंडोनियम वृक्षों के तनों में पानी भरा होता है और यह कई वर्षों तक सूखा पड़ने पर भी हरे ही बने रहते हैं। दक्षिण अमेरिका के ब्राजील और पेरु के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष होता है, जिसके तने से दूध जैसा तरल पदार्थ निकलता है, जो मीठा भी होता है और स्वादिष्ट भी। वन वाले इसे देवताओं की कामधेनु समझते हैं और बड़े चाव से उसका दूध पीते हैं।

इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में और दक्षिण अमेरिका के चिली देश में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिससे पानी टपकता रहता है और उसके नीचे एक छोटा गड्ढा उस पानी से भरा रहता है। यह पेड़ अपनी पत्तियों द्वारा हवा में उड़ती हुई भाप बड़ी मात्रा में सोखता है और फिर अपनी आवश्यकता जितना जल पास में रखकर शेष को बूंदों के रूप में बरसा देता है।

अफ्रीका में एक ऐसा पेड़ पाया जाता है, जिसकी छाल को आटे की तरह पीसकर रोटी बनाई जाती है। यह अन्न की तरह ही पौष्टिक और स्वादिष्ट होती है।

वनस्पतियों का विकसित रूप ही सचेतन जंतुओं में परिणत हुआ है। विकासक्रम की शृंखला यही बताती है कि सृष्टि के आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में जीवन वनस्पति के रूप में था, फिर वह क्रमशः सचेतन प्राणियों के रूप में उन्नति करता चला गया। इसका प्रमाण अभी भी समुद्रों में उपलब्ध है। कुछ ऐसे पौधे अभी भी पाये जाते हैं, जो वनस्पति भी कहे जा सकते हैं और प्राणधारी भी। उनमें दोनों ही गुण विद्यमान हैं।

वनस्पति और जीवधारियों के बीच की कुछ जातियाँ समुद्र में पाई जाती हैं। एस्पेरिआपसिस जीव सड़ी लकड़ी से उगने वाले कुकरमुत्ते की तरह का होता है। यह पीले, भूरे और हरे रंग का लगभग तीन इंच व्यास का होता है। अमेरिका के पूर्वी तट पर यह लगभग २० प्रकार की जातियों में पाया जाता है।

हाइड्रा देखने में तैरती हुई सूखी डाली जैसा लगता है। पर छेड़ते ही उसमें हरकत शुरू हो जाती है। इसके कई मुँह होते हैं। हर मुँह पर बाल उगे होते हैं, जिनकी संख्या छह से दस तक होती है। इन बालों को वह सिकोड़ और फैला लेता है। असल में यह ही उसके हाथ हैं, जिनकी सहायता से वह आहार पकड़ता और मुँह में डालता है। तैरने में यह बाल उसके लिए पैरों का काम देते हैं। समुद्री जंतु 'केरोपहोलिया' दूर से देखने में ऐसा लगता है, मानो पत्थर पर सुंदर गुलाबी फूल खिला हो। जब वह जँभाई लेता है तो उस फूल जैसे मुँह को खुलते और बंद होते देखा जा सकता है। यह पीले, हरे और भूरे होते हैं। मुँह पर छोटी-छोटी कई जीभें उभरी होती हैं, इन्हीं से वे अपना आहार पकड़ते हैं। फ्लोरिडा, वेस्टइंडीज, कैलीफोर्निया की खाड़ी में यह कैरोपहोलिया आसानी से पाया जाता है।

प्रायः छह इंच लंबा एल्कोनियम-नन्हें असंख्य फूलों से लदी किसी सुंदर डाली जैसा लगता है। उसके सहस्रों मुख होते हैं। तने जैसा मोटा पेट बीच में होता है। वेस्टइंडीज तथा उत्तरी अटलांटिक में यह पाया जाता है।

आस्ट्रेलिया के बैरियर रीफ नामक क्षेत्र में रंग-बिरंगी घास जैसा एक जल जंतु होता है—एक्टीनेरिया। इसके हाथ-पैर सदा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिलते रहते हैं और हर घड़ी कुछ पाने-पकड़ने और खाने में ही लगा रहता है।

वनस्पति की जीवधारियों के रूप में विकसित होने की परंपरा यह दर्शाती है कि अपनी उपलब्धियों और विभूतियों को परमार्थ प्रयोजनों के लिए समर्पित कर दिया जाए, तो उससे कुछ खोता-मिटता नहीं है, वरन् नये रूप में मनुष्य का विकास होता है, उसकी विभूतियाँ बढ़ती हैं और उपलब्धियों में अभिवृद्धि होती है। बीज जिस प्रकार अपने को मिटा देने के लिए तैयार होकर ही वृक्ष बनने में समर्थ होता है। बूँद जब मिटती है तभी 'सागर' बनती है उसी प्रकार आत्म विस्तार के इच्छुकों को अपने उद्देश्य में तभी सफलता मिलती है जबकि वे स्वयं को मिटाने का साहस जुटा सकें।

परमार्थ कार्यों का साहस जुटा भर लेने की आवश्यकता है। उसके लिए न कोई विपुल साधन चाहिए, न अपरिमित-क्षमता। परमार्थ प्रयोजन के लिए स्वयं को समर्पित करने की, अपने आपको मिटा देने की सामर्थ्य हो, तो अन्य कमियाँ-त्रुटियाँ भी प्रकृति किसी न किसी प्रकार पूरा कर देती है, उदाहरण के लिए श्वास क्रिया गति और जीवन का प्रथम लक्षण है। स्थूल दृष्टि से पौधों में नाक नहीं होती, फेफड़े भी नहीं होते, पर यदि सूक्ष्मदर्शी (माइक्रास्कोप) से देखें, तो पौधे के पत्ते-पत्ते में श्वास-छिद्र देखे जा सकते हैं। इन छिद्रों से ही वे श्वास लेते हैं। यह अलग बात है कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए पौधे मनुष्य और अन्य जीवधारियों द्वारा छोड़ी हुई दूषित वायु कार्बन डाइ ऑक्साइड ग्रहण करते हैं और एवज में उनके लिए अमृत तुल्य ऑक्सीजन निकालते हैं। कार्बन डाइ ऑक्साइड मूर्च्छित और अर्द्ध चेतन रखने वाली गैस है इसी का प्रभाव है कि वृक्ष संधियोनि में अचेत और मूर्च्छित पड़े रहते हैं।

कोई नाक और मुँह दोनों बंद कर दे, तो मनुष्य मर जाता है। पौधे के किसी पत्ते में छेद कर दिया जाए या उसके दोनों तरफ कागज चिपका दिया जाए, तो पत्ता कुछ ही समय में पीला पड़कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिर जाएगा। यदि तमाम पत्ते न होते तो संभवतः पेड़ ही नष्ट हो जाता। मानना चाहिए कि प्रकृति की हर रचना परमात्मा की कृपा और सृष्टि व्यवस्था का अंग है, कोई ऊबड़-खाबड़ बनावट मात्र नहीं। कुछ पौधे जो जल के भीतर रहते हैं, साँस उन्हें भी आवश्यक होती है। योरोप के तालाबों में एक पौधा पाया जाता है, जिसके पत्तों में झिल्ली नहीं होती। उसके लिए मछलियाँ पानी में मिली हुई वायु के कण अलग कर देती हैं, इसी से वह अपना जीवन चलाता रहता है, पर श्वास के बिना जीवित वह नहीं रह सकता।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वृक्ष-वनस्पति किस प्रकार अपने जीवन अस्तित्व को परमार्थ प्रयोजनों के लिए घुलाते रहते हैं।

कुछ समय पूर्व इंडोनेशिया के यूनेस्को के तत्त्वावधान में ५५० वन विशेषज्ञों की एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी, जिसमें विश्व की घटती हुई वन संपदा पर चिंता प्रकट की गई थी। आमतौर से लोग वृक्षों का महत्त्व नहीं समझते। लकड़ी का लोभ और खेती के लिए अधिक जगह मिलने के लालच में पेड़ों को काटते चले जाते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि इन तुच्छ लाभों की तुलना में वृक्ष विनाश से होने वाली हानि कितनी अधिक भयंकर है। पैसिफिक साइंस कान्फ्रेंस ने संसार को चेतावनी दी है कि वृक्ष संपदा विनाश का वर्तमान क्रम चलता रहा, तो उसके भयानक परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

उपर्युक्त गोष्ठी में जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंगलैंड, नीदरलैंड, भारत आदि २० देशों के वन विज्ञानी उपस्थित थे। गोष्ठी में कनाडा के प्रतिनिधि डॉ० व्लादीमीर क्रजीना ने कहा—"मनुष्य को साँस लेने के लिए शुद्ध वायु मिलना चाहिए। वृक्ष हमारी इस आवश्यकता को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते हैं। संसार में बढ़ते हुए वायु प्रदूषण का समाधान करने के लिए वृक्षों की रक्षा की जानी चाहिए। यदि हम वन संपदा को गँवा बैठेंगे, तो फिर शुद्ध साँस का अभाव इतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जटिल हो जाएगा कि उसका समाधान अन्य किसी उपाय से संभव न हो सकेगा।"

अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने भी जो विचार व्यक्त किए उनसे स्पष्ट था कि वृक्ष रक्षा एवं अभिवर्धन का प्रश्न उतना उपेक्षणीय नहीं है जितना कि उसे समझा जा रहा है। उसे पशु-पालन के स्तर पर रखा जाना चाहिए। सच तो यह है कि इससे भी अधिक महत्त्व उसे दिया जाना चाहिए। पशुओं को गँवाकर उनके द्वारा मिलने वाले श्रम, दूध, मांस, चमड़े एवं गोबर से वंचित होना पड़ता है। वृक्षों को गँवाने की हानि उनसे भी अधिक है। वायु शोधन—वर्षा का संतुलन और पत्तों से मिलने वाली खाद, धरती के कटाव का बचाव, कीड़े खाकर फसल की रक्षा करने वाले पक्षियों के आश्रय के अभाव में फसलों की सुरक्षा और कृषि-कीटकों की सफाई आदि कितने ही ऐसी समस्या हैं, जो वृक्षों के घटने के साथ-साथ बढ़ते ही चले जाएँगे।

पिछले दिनों कल-कारखानों की वृद्धि को विकास का आधार माना जाता रहा है। खाद्य उत्पादन के लिए कृषि तथा सिंचाई पर भी जोर दिया जाता रहा है। बहुत हुआ तो यातायात के साधनों को बढ़ाने की बात भी आर्थिक प्रगति के लिए जोड़ दी गई। वन संपदा की महत्ता समझने की ओर जितना ध्यान देना आवश्यक था उतना दिया ही नहीं। सच तो यह है कि वनों को जमीन घेरने वाला माना जाता रहा और उन्हें काटकर कृषि करने की बात सोची जाती रही। जलाऊ लकड़ी तथा इमारती आवश्यकता के लिए भी वृक्षों को अंधाधुंध काटा जाता रहा और उनके स्थान पर नए लगाने की ओर उपेक्षा बरती जाती रही। आज हम वन संपदा की दृष्टि से निर्धन होते चले जा रहे हैं और उसके कितने ही परोक्ष दुष्परिणामों को प्रत्यक्ष हानि के रूप में सामने खड़ा देख रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'सहारा कॉन्क्वेस्ट' ग्रंथ के लेखक सेंटवार्व बेकर ने सहारा रेगिस्तान की २० लाख वर्ग मील भूमि के संबंध में लंबा और गहरा सर्वेक्षण करके लिखा है कि "यह क्षेत्र किसी समय बहुत ही हरा-भरा था, पर लोगों ने नासमझी से उसे उजाड़ दिया। इससे यह रेगिस्तान बन गया। तेज हवा, सूर्य की सीधी धूप और पाले ने अच्छी खासी उपजाऊ मिट्टी को रेत बना दिया। तेज हवाएँ, उस धूल को भी इधर से उधर उड़ाने लगीं, सिर्फ ऊसर और पथरीली जमीन ही टिकी हुई है। यह रेगिस्तानी विशाल भूखंड अब निकटवर्ती हरी-भरी जमीन को भी महासर्प की तरह निगलता चला जा रहा है। हर साल तीस वर्ग मील हरी-भरी जमीन उस रेगिस्तान की चपेट में आकर सदा-सर्वदा के लिए मृतक बन जाती है।"

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् एक बार अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट हवाई जहाज से मिश्र की भूमि से गुजरे, उन्होंने लेबनान के इतिहास प्रसिद्ध सिडार वृक्षों के वन्य प्रदेश की बड़ी प्रशंसा पढ़ी थी। पर जब उन्होंने नीचे झाँककर देखा कि वहाँ नंगे पहाड़ खड़े हैं और जहाँ-तहाँ दस-बीस वृक्ष दिख रहे हैं, तब उन्हें इसका बड़ा दुःख हुआ। संसार में अन्यत्र भी ऐसी ही मूर्खता बरती जा रही है, इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करके उन्हें और भी अधिक वेदना हुई। उनके आदेश पर राष्ट्रसंघ पर अमेरिकी प्रतिनिधियों ने दबाव डाला कि विश्व खाद्य और कृषि संगठन में वन संपदा के संरक्षण को भी महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए, वैसा हुआ भी। राष्ट्रसंघ के तत्त्वावधान में वन संपदा बढ़ाने के लिए जो प्रयत्न चल रहे हैं उन्हीं के अंतर्गत एक बड़ी आर्थिक सहायता देकर लेबनान में नए सिरे से सिडार वन लगाये गये हैं और हजारों एकड़ जमीन फिर से हरी-भरी बनाई गई है। ऐसे ही प्रयास अन्यत्र भी हुए हैं।

इजराइल में हरा-भरा क्षेत्र एक तिहाई और सूखा रेगिस्तानी दो तिहाई है। उन लोगों ने इस सूखे भूखंड को हरा-भरा बनाने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकल्प किया है और इन दिनों इस दिशा में अथक परिश्रम किया जा रहा है। पिछले दिनों ही १० करोड़ नये पौधे उन लोगों ने लगाए हैं।

आइसलैंड वाले बहुत दिनों से अपनी वन संपदा उजाड़ते चले आ रहे थे, फलस्वरूप वे अपनी उपजाऊ भूमि से हाथ धो बैठे। सन् १९४६ के बाद उनकी आँखें खुलीं और योजनाबद्ध रूप से २० लाख नए पेड़ लगाए। टस्मानिया का भी यही हाल हुआ। उन लोगों ने वृक्ष संपदा गँवाई, फलस्वरूप रेतीली आँधियों का सर्वनाशी सिलसिला आरंभ हो गया। घास-पात तक को उन्होंने अपने पेट में निगल लिया। जब जीवन-मरण का सवाल पैदा हुआ, तो उन्होंने ऊँचे चीड़ और देवदारू के वृक्ष लगाकर रेतीली हवाओं से रोकथाम की है और १५०० वर्ग किमी० उपजाऊ जमीन रेगिस्तान के मुँह में से उगलवाई है। स्काटलैंड में कुल्विन सैंड्स नामक छह मील लंबा और दो मील चौड़ा एक छोटा-सा रेगिस्तान था। उन लोगों ने इस अजगर का मुँह कुचल कर रख दिया है और अब वहाँ हरे-भरे उद्यान लहलहा रहे हैं। लीबिया ने अपने रेगिस्तानों को छोटी झाड़ियों से पाट देने का निश्चय किया है और वे उस प्रयास में भली प्रकार सफल हो रहे हैं। आस्ट्रेलिया ने अपने ७ इंच जितनी स्वल्प वर्षा वाले क्षेत्र में संसार भर से ८३ जाति के ऐसे पौधे मँगाकर वहाँ रोपे हैं, जो सूखी आब-हवा में भी पनप सकते हैं। आग की तरह तपने वाले बूमेटा रेगिस्तान का एक बड़ा भाग अब वृक्षारोपण के अभिनव प्रयासों से हरा-भरा बनाया जा चुका है। उस क्षेत्र के एक किसान डेस्मांड फाइलिस ने अपने एकाकी प्रयत्न से ६००० वृक्ष लगाए हैं, जो अब ३० फुट से भी ऊँचे हो गए हैं। इन वृक्षों ने उस क्षेत्र की भयंकर खुश्की को मनुष्यों और पशुओं के रहने योग्य बना दिया है।

मोरक्को ने अपनी कुंभकर्णी नींद त्यागकर अपनी नष्ट होती वन संपदा को सँभाला है। इन्हीं दिनों उन लोगों ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६५ हजार जैतून के, २७०० बादाम के और १,३१०० सदा बहार के बड़े वृक्ष लगाए हैं। इस कार्य के लिए उन्हें राष्ट्रसंघ से भी अनुदान मिला है।

चीन अपनी उत्तरी-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित रखने के लिए फ्रांस की प्रसिद्ध लौह प्राचीर की तरह वृक्षों की हरी दीवार खड़ी कर रहा है। यह दीवार ३००० मील लंबी और कई मील चौड़ी होगी। वहाँ बंजर प्रदेशों को वृक्षों से पाट देने का कार्यक्रम चल रहा है।

अब संसार का हर देश समझ गया है कि मनुष्य जीवन के लिए पशु संपदा से बढ़कर वन संपदा का महत्त्व है, इसलिए उसे राष्ट्रीय संपत्ति में उच्च स्थान दिया जा रहा है और इसे बढ़ाने के प्रयास को खाद्य उत्पादन स्तर का महत्त्व दिया जा रहा है।

स्काटलैंड के वनस्पति विज्ञानी राबर्ट चेंबर्स ने लिखा है—"वन नष्ट होंगे, तो पानी का अकाल पड़ेगा। भूमि की उर्वरा शक्ति घटेगी और फसलों की पैदावार कम होती चलेगी। पशु नष्ट होंगे। पक्षी घटेंगे और मछली प्राप्त करना कठिन हो जाएगा। वन विनाश का अभिशाप जिन पाँच पुराने प्रेतों की भयंकर विभीषिका बनाकर सामने खड़ा कर देगा, वे हैं—बाढ़, सूखा, गर्मी, अकाल और बीमारी। हम जाने-अनजाने में वन संपदा नष्ट करते हैं और उससे जो पाते हैं, उसकी तुलना में कहीं अधिक गँवाते हैं।

धर्मशास्त्रों में वट, पीपल, आँवला आदि वृक्षों को देव संज्ञा में गिना है। उनके प्रति किसी समय कितनी गहरी श्रद्धा रही है ? इसका परिचय इस बात से मिलता है कि अभी भी वृक्षों के साथ लड़कियों का विवाह होने की प्रथा जहाँ-तहाँ पाई जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तिरहुत में मंगली लड़की का विवाह पीपल के पेड़ के साथ कर दिया जाता है। ताकि नक्षत्र दोष का अनिष्ट पीपल पर पड़े और मनुष्य वर को किसी विपत्ति का सामना न करना पड़े।

आंध्र के कुडपवंशी ग्रामीणों में कन्या का विवाह बारह वर्ष तक कर देने का रिवाज था, पर यदि किसी कारणवश विवाह न हो सका, तो किसी फलदार पेड़ से उसका विवाह कर देते हैं और उसे सुहाग के सभी प्रतीक धारण करा देते हैं। इसके पश्चात् उसका 'पुनर्विवाह' किसी भी आयु में हो सकता है। यदि विवाह न हो तो भी उसे सुहागिन के सभी सामाजिक अधिकार मिल जाते हैं और बिरादरी के लोग विवाह न होने का लांछन नहीं लगाते।

नेपाल की नेवार जाति के लोग अपनी लड़कियों का विवाह विल्व वृक्ष के साथ करते हैं। इसके पश्चात् जब किसी पुरुष के साथ विवाह होता है, तो वह उपपति कहलाता है। उपपति को कोई स्त्री कभी भी बहिष्कृत कर देती है, उसे भृत्य जितने ही अधिकार प्राप्त होते हैं।

हिसार जिले की थुमकूड बावरिया जाति में और सरगुजा के भीलों में यह प्रथा है कि विवाह की अनिच्छुक लड़कियों का विवाह पीपल के वृक्ष से कर देते हैं और यह मान लेते हैं कि उसका कुमारी रहने का 'दोष' निपट गया।

हरियाली को मनुष्य जीवन सहचरी का स्थान मिलना चाहिए और उसके परिपोषण के लिए प्रत्येक नागरिक में व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी उत्पन्न की जानी चाहिए।

महाकवि अलेग्जेंडर स्मिथ प्रकृति को असीम प्यार करते थे और विचारशील लोगों को संबोधन करके कहते थे—"अपनी स्मृति पीछे के लिए छोड़ जाना चाहते हों, तो भवन बनाने और पदक प्राप्त करने की अपेक्षा वृक्ष लगाने पर ध्यान दो, वे इन दोनों की अपेक्षा अधिक चिरस्थायी होते हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार में सबसे पुराना वट वृक्ष ताइवान में ढूँढ़ निकाला गया है। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर अब उसकी आयु ४१२८ वर्ष है। वह ४८ मीटर ऊँचा है। तने की मोटाई का व्यास ४० फीट से अधिक है। चिजायी प्रांत के मिएन युएह ग्राम के पास की पहाड़ी पर यह उगा हुआ है। वहाँ के निवासियों ने उस महावृक्ष का नाम 'चेनी पौरिस' रखा है।

यह वृक्ष वृद्ध होने पर भी अभी सैकड़ों वर्षों तक मजे में अपना अस्तित्व बनाए रहने योग्य सुदृढ़ है।

इससे अधिक सस्ता, अच्छा, ऊँचा, चिरस्थायी एवं अतीव उपयोगी स्मारक और क्या हो सकता है ? मनुष्य अपना नाम चाहने की दृष्टि से ही सही—वृक्षारोपण को महत्त्व दे, तो भी उससे बहुत हितसाधन हो सकता है। बिहार के हजारी बाग जिले का नामकरण इसी आधार पर हुआ है कि उस क्षेत्र के हजारी किसान ने अनवरत श्रम करके उस क्षेत्र में हजार बाग लगवाने में सफलता प्राप्त की थी।

वृक्ष मनुष्य परिवार के ही अंग हैं। वे हमें प्राणवायु प्रदान करके जीवित रखते हैं, इतने अधिक मार्गों से हमारी सहायता करते हैं, जिनका मूल्यांकन करना कठिन है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयोगिता नहीं परमार्थपरायणता

अलबर्ट का मनोविज्ञान वस्तुतः मानवीय चेतना का मनोविज्ञान न होकर पाशविक वृत्तियों का तोड़ा-मरोड़ा इतिहास मात्र है। वह कहता है—"मनुष्य श्रेष्ठ पशु है। (मैन इज दि सुपर एनिमल), अर्थात् मनुष्यों में जो पाशविक वृत्तियाँ हैं, वह कोई दोष-दुर्गुण नहीं, वरन् प्राकृतिक हैं।" और इस दृष्टि से उसकी जो भी स्वाभाविक आकांक्षाएँ हैं, वह अनुचित नहीं है, भले ही उसे उसके लिए अन्य प्राणियों का भी शोषण और उत्पीड़न करना पड़ता है। जो जितना उपयोगी है वह उतने ही अधिक अधिकारों का पात्र है, भले ही इस स्वायत्तता का उपयोग वह अपने निजी सुख और स्वार्थों के लिए करता हो। यह उपयोगितावाद की संक्षिप्त व्याख्या हुई। आज योरोप ही नहीं, संसार के प्रायः सभी देशों के पढ़े-लिखे लोग इसी मान्यता का आचरण-व्यवहार कर रहे हैं, भले ही कहने-सुनने को उनके सिद्धांत चाहे कितने ही आदर्शवादी क्यों न हों।

उपयोगिता का समर्थन भी जिस ढंग से किया गया है, वह कम हास्यास्पद नहीं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, इसलिए कम शक्ति वालों का शोषण कोई पाप नहीं, एक प्राकृतिक प्रक्रिया हुई। जीव-हिंसा, पशु-उत्पीड़न और बढ़ता हुआ मांसाहार इसी दुष्ट सिद्धांत की देन है। उस मान्यता का प्रतिपादन है कि—"जो अधिक ताकतवर होता है, वही बंदर अपने समूह का मुखिया होता है।" खरगोश, हिरन, भेड़ और बकरियों की शक्ति न्यूनतम है, उन्हें भेड़िये, बाघ, शेर और चीते आदि शक्तिशाली जंतु खा जाते हैं। यदि सहयोग, सादगी, सहानुभूति और सदाचार ईश्वरीय आदेश हुए होते, तो शाकाहारी भेड़ें और बकरियाँ कमजोर न होतीं और न ही वह हिंसक-जंतुओं द्वारा भक्षण कर ली जातीं। बड़ा वृक्ष अपने घेरे में दूसरे वृक्ष को पनपने नहीं देता। हर शक्तिशाली कम शक्ति वाले को खा जाता है। यदि इन प्राकृतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धांतों को मनुष्य भी अपने व्यवहार में आचरण में लाता है, तो यह कोई दोष नहीं।

उपयोगितावाद सच पूछा जाए तो शक्तिवाद—'जिसकी लाठी उसकी भैंस' और सामंतवाद का ही दूसरा नाम है। इस सिद्धांत ने ही संसार को नास्तिक और स्वच्छंदतावादी बनाया है। भावनाओं का अंत इस सिद्धांत ने ही किया है। ठीक भी है, जहाँ केवल शक्ति और उपयोगिता को ही महत्त्व देना हुआ वहाँ परस्पर प्रेम, उदारता, सहयोग, सौजन्य, स्नेह, सामूहिकता का क्या मूल्य रहा ? जहाँ उत्कृष्टता की भावनाएँ न होंगी, वहाँ कैसे व्यवस्था रह सकती है और कैसे विश्व शांति जिंदा रहेगी। आज उपर्युक्त प्रकार की मान्यताओं के कारण ही सारा विश्व अशांति-असंतोष, कलह-क्लेश और शोषण के जाल में उलझता चला जा रहा है।

इस जड़वादी मान्यता का जो भी परिपोषण करते हों उन्हें मनुष्य शरीर की आंतरिक स्थिति पर एक बार भावनापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। हमारे शरीर का प्रत्येक कोष एक स्वतंत्र मानव बीज है, उसमें मनुष्य की सारी स्थूल और चेतन क्रियाएँ विद्यमान हैं। 'कोष' साँस लेता है, खाता है, पीता है, चलता है, डरता है, बचाव करता है, मल-विसर्जन करता है। 'अमीबा' एककोषीय जीव है। उसका नाभिक जब दो भागों में बँट जाता है, तो वह दो अमीबा बन जाते हैं और दोनों अपनी-अपनी तरह से उक्त क्रियाएँ और अनुभूति करने लगते हैं। दो विभाज्य अमीबा, दो अलग गुणों वाले अमीबा आत्मा (न्यूक्लियस) की दृष्टि से एक ही हैं। उदाहरण के लिए जब दो अमीबा अपनी शक्ति में ह्रास अनुभव करते हैं, तो वह एक दूसरे में मिलकर दो नाभिक (न्यूक्लियस) से एक नाभिक (न्यूक्लियस) वाला एक अमीबा बन जाते हैं। उस स्थिति में वह नवजात अमीबा की-सी शक्ति अनुभव करता है। इससे सिद्ध हो जाता है कि शरीर के अनेक कोषों (सेल्स) में बँट जाने पर भी उनकी आत्मिक चेतना एक ही है। मनुष्य इस बात का ध्यान रखे या न रखे, वह उपयोगितावाद जैसे खंडनात्मक तथ्य को मानें तो मानता रहे, पर लघु कोषीय जीव यह भूल करने को तैयार नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य शरीर के विचित्र अवयव एक ही कोष "स्पर्म" से पैदा होते हैं। स्थान की आवश्यकता के अनुरूप वे अपना आकार बदलकर मस्तिष्क, हृदय, जिगर, तिल्ली, नसें, मांसपेशियाँ आदि बनाते हैं, पर उन्हें पता है कि विभिन्न स्थितियों में काम की जिम्मेदारियाँ उठाते हुए भी, वह सब एक ही पिता की संतान, भाई-भाई हैं और इसीलिए वे बराबर प्रेम, दया, सहयोग, सहानुभूति, श्रम, सामूहिकता आदि का व्यवहार करते रहते हैं, इसी कारण शरीर स्थिर है।

जिस प्रकार बहुत-से कोषों (लगभग २ अरब) से मिलकर शरीर बना। उसी प्रकार बहुत-से समाज, देश और विश्व बना। स्थान की स्थिति और जलवायु की भिन्नता के कारण वर्ण-भेद, स्वभाव-भेद होते हुए भी सब एक ही आत्मा के अंग हैं, यह मानकर जो शरीर का पालन करते हैं, वह विश्व-शांति बढ़ाने और ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करने का पुण्य करते हैं। जो उससे विपरीत जड़वादी आचरण करते हैं प्रकृति उन्हें दंड देती है। सूक्ष्म न्याय प्रणाली पर सृष्टि की व्यवस्था अब तक विद्यमान है। यदि प्रेम, दया, उदारता, करुणा आदि सदगुणों का अंत हो गया होता, तो सृष्टि का भी अंत हो गया होता।

मनुष्य-शरीर मानवीय सद्गुणों का जिस रीति से परिपालन करता है, उसका वक्तव्य बड़ा ही रोचक है। आंतरिक क्रियाशास्त्र (फिजियोलॉजी) का गहन अध्ययन किया जाए, तो पता चलेगा कि व्यक्ति और समाज को सुखी-संतुलित और सुव्यवस्थित बनाने वाले जो भी गुण हैं, वह दूध से नवनीत काढ़ने की तरह शरीर से ही निकाले गए हैं।

उदाहरण के लिए सहयोग और सहानुभूति को ही ले लें। मनुष्य इतना कठोर हृदय हो सकता है कि अपने भाई, अपने पड़ोसी को कष्ट और पीड़ित अवस्था में देखकर भी चुप रह जाए, पर हमारे शरीर के सदस्य ऐसे हृदयहीन नहीं। परस्पर सहयोग और दूसरे के दुःख में हाथ बटाना ही उनका जीवन है। उदाहरणार्थ यदि एक गुर्दा खराब हो जाए, जैसा कि पथरी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीमारी के समय होता है, तो अच्छा गुर्दा दूसरे पीड़ित गुर्दे का सारा कार्य भार स्वयं सँभाल लेता है, जब तक वह ठीक न हो जाये, स्वयं कष्ट सहेगा, किंतु शरीर की साधारण क्रिया में कोई अंतर न आने देगा।

धमनियाँ (आर्ट्रीज) शरीर को रक्त पहुँचाती हैं। बड़ों के साथ छोटे-छोटे लोग भी रहते हैं और तब उनका कोई विशेष महत्त्व जान नहीं पड़ता, जैसा कि बड़ी धमनियों के साथ कुछ पतली धमनियाँ भी बनी रहती हैं। मनुष्य अपने से छोटों को कष्ट दे सकता है, उनका शोषण और उत्पीड़न कर सकता है, पर धमनियों को पता है कि छोटे जीव का भी कितना महत्त्व है इसलिए वह पतली धमनियों को भी पोषण देती रहती हैं। कभी कोई धमनी (आर्ट्रीज) कट जाए, तो उस स्थिति में पतली धमनियाँ (ॲनैस्टोमोसिस) रक्त प्रवाह के किनारे फूलकर आगे जोड़ देती हैं और रक्त परिभ्रमण क्रिया को तब तक साधे रहती हैं, जब तक घाव अच्छा न हो जाए। इससे आगे वाला हिस्सा काम करता रहता है। यदि ऐसा न भी हो तो पतली धमनियाँ (ॲनैस्टोमोसिस) आजीवन काम करती हैं।

'एनाटॉमी' के अनुसार यदि एक फेफड़ा काटकर निकाल देना पड़े तो दूसरा फेफड़ा साधारण स्थिति के सारे काम सँभाल लेता है। ये सहयोग और सहानुभूतिपरक क्रियाएँ बताती हैं कि हम जिस समाज में रहते हैं उसमें आए दिन दुर्घटनाएँ घटती हैं, उनसे कुछ लोग पीड़ित होते हैं उनके प्रति भी हमारे कर्तव्य वैसे ही हैं जैसे स्वयं अपने प्रति-व्यवस्था, विश्व-शांति और मानवता ऐसे ही अक्षुण्ण रहती है।

आज लोगों ने इन बातों को भुला दिया। स्वार्थ और प्रवंचनाएँ प्रबल हो उठी हैं। सारा समाज उन प्रवंचनाओं में धू-धू कर जल रहा है। सर्वत्र शोषण, लूट-पाट, बेईमानी, छल-कपट, कलह के बाहरी शत्रु आक्रमण कर समाज की भलाई को धराशायी करते जा रहे हैं, पर हममें मुकाबले की शक्ति भी जाग्रत् नहीं होती। शरीर के छोटे-छोटे कोषों को पता है कि जब बुराइयों, बीमारियों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तीव्रता बढ़ जाती है, तो शरीर का संबंधित अंग ही नहीं, सारा शरीर बेचैन हो उठता है। इसलिए वे सबके सब एकजुट प्रयत्न करते हुए बुराइयों के उन्मूलन में लग जाते हैं।

कई बार चमड़ी खुल जाने या चोट लग जाने के कारण कोई कीटाणु बाहर से आकर शरीर में घुस जाते हैं और लोगों को सताना, काटना, लूटना, भक्षण करना प्रारंभ कर देते हैं, तब शुद्ध रक्ताणु दौड़ पड़ते हैं। इससे पता चलता है कि अच्छे कोषों की सेना एकत्रित हो गई और बुराइयों का निष्कासन प्रारंभ हो गया। दरअसल जिस मनुष्य-समाज में बुराई के प्रति इतनी सजगता और तत्परता नहीं बरती जाती, वह समाज उसी तरह सड़ जाते, निकम्मे हो जाते हैं जैसे शरीर का कोई हिस्सा, जहाँ कीटाणु हमला कर देते हैं। ऐसे विषाक्त वातावरण को जितनी जल्दी साफ कर दिया जाता है, शरीर की तरह समाज उतनी ही शीघ्रता चैन अनुभव करता है।

कई बार बुराई की मात्रा काफी बढ़ जाती है। रक्त में हानिकारक कीटाणु (इनफेक्टिव बैसिलस) पैदा हो जाते हैं, उससे रोग और विकृति पैदा होती है उसके मुकाबले के लिए रक्त के श्वेत अणु (ह्वाइट ब्लड कॉर्पसल्स) पहुँचते हैं और शरीर रक्षा का पूर्ण प्रयत्न करते हैं, पर बेचारों की शक्ति बुराई के मुकाबले कम हुई तो हार जाते हैं और मार दिये जाते हैं। किंतु त्याग और बलिदान की उपयोगिता समझने वाले ये अणु, मरते-मरते भी कुछ न कुछ उपकार कर जाते हैं। मरे हुए श्वेत अणु प्रोटियोलाइटिक एंजाइम बन जाते हैं और शरीर के मरे हुए कोष (बैक्टीरिया) एवं नष्ट हुए श्वेत अणु को घोलकर पीब बना देते हैं और उन्हें बाहर निकाल देते हैं, इससे दर्द कम हो जाता है।

आजकल बुराइयाँ अधिक बढ़ गई हैं, इसलिए असामान्य परिस्थितियाँ पैदा की जा रही हैं। ये परिस्थितियाँ असामान्य इसलिए कही जायेंगी कि इनमें समाज के सभी विचारशील लोग अपना ध्यान निजी हितों से हटाकर पूरी तरह समाज सुधार और दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में लगाते हुए चले जाएँगे, तब समाज-शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसी तरह अच्छा हो जाएगा जिस तरह शरीर के बुरे तत्त्व नष्ट कर देने पर शरीर अच्छा हो जाता है। टी० बी० के जीवाणु (बैक्टीरिया) जब एसिड फास्ट बैसिलाई बन जाते हैं, अर्थात् एसिड्स भी उसका मुकाबला नहीं कर पाते, उस समय श्वेत अणुओं के ५ प्रकार के कोष (सेल्स) (१) पोलियोमोर्फ्स ७० से ७५% (२) लिंफोसाइड्स २० से ३० प्रतिशत, (३) मोनोसाइड्स ५ से ६ प्रतिशत और (४) बेसोफिल्स आधा प्रतिशत तैयार होते हैं। लड़ाई के दिनों में जिस तरह सेनापति परस्पर ऐसी योजनाएँ बनाते हैं कि दुश्मन को हर तरह से मात भी दी जाए, उसी तरह शारीरिक बुराई के प्रति यह संघर्ष भी बड़ा प्रेरक होता है। सर्वप्रथम पोलियोमोर्फ्स आते हैं। यदि वे अपने आपको मुकाबला करने में असमर्थ पाते हैं, तब लिंफोसाइड्स की टुकड़ी आगे बढ़कर दुश्मन को ललकारती है। यदि तब भी जीत टी० बी० के जीवाणुओं की हुई और लिंफोसाइड्स हार गए तो कई-कई इपिथेलाइड्स कोष मिलकर दैत्याकार कोष (जाइंट सेल्स) बनाकर टी० बी० के कीटाणुओं को खाते हैं। शरीर की यह सुरक्षा-शक्ति आह्वान करती है कि जब कभी सामाजिक बुराइयाँ, पाप, अपराध, अनैतिकता का कुछ ऐसा बाहुल्य हो जाए कि अग्रगण्य लोग भी उन्हें दूर न कर पाएँ, तब संगठित प्रयत्नों द्वारा उन्हें नष्ट करने के लिए अपनी सारी शक्ति जुटा देनी चाहिए।

गुर्दे के ऊपर एक स्यूप्ररीनल ग्रंथि (ग्लैंड) होती है, वह ऐड्रिनलिक एवं कार्टिको स्टराइड्स निकालती है, जो शरीर को उसी प्रकार विषम स्थिति में कार्य करने की शक्ति देती है जैसे महापुरुष अपने अनुयायियों को देकर बुराइयों का अंत कराते हैं। उदाहरण के लिए सामने कोई जंगली जानवर आ जाए, तो एड्रिनलीन रक्त चाप बढ़ाकर पैरों को अधिक कार्य करने के लिए अधिक शक्ति दे देती है। उतनी ही शक्ति मस्तिष्क को मिलती है, जिससे वह तुरंत कोई निर्णय ले सके। दौड़ते समय फेफड़े मांसपेशियों (मसल्स) को ऑक्सीजन की बहुत मात्रा अनुदान दे देते हैं। दौड़कर आने के बाद काफी देर तक तेज हाँफी चलती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहती है। इस तरह फेफड़े अपनी खोई शक्ति पुनः अर्जित कर लेते हैं। संभवतः यह व्यवस्था भगवान् ने इसलिए की कि मनुष्य यह जान ले कि औरों की भलाई में उत्सर्ग की हुई शक्ति और क्षमताएँ नष्ट नहीं होतीं, वरन् एक नई चेतना लेकर भगवान् के वरदान की तरह पुनः मिलती हैं। मनुष्य अपने उपकार का पुण्य फल उसी प्रकार प्राप्त करता है जिस तरह स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही अपने महत्त्वपूर्ण पदों का आनंद ले रहे हैं।

वस्तुतः शरीर रचना की आधारभूत शिक्षाएँ यदि संपूर्ण रूप से मनुष्य समाज में ढाल दी जाएँ, तो विश्वशांति के लिए बाह्य साधनों की खोज ही न करनी पड़े। हम समता के सिद्धांत पर धरती में जीवित हैं और एक-दूसरे के प्रति त्याग भावना से सुरक्षित हैं। केवल स्वार्थ ही स्वार्थ और अहम्मन्यता मात्र रहे होते, तो मानवीय संस्कृति का जीवित बने रहना कठिन हो जाता है। पहले यह परिस्थितियाँ नहीं थीं, पर अब उनकी मात्रा बढ़ रही है, अब हर व्यक्ति स्वार्थी होता जा रहा है। खुदगर्जी के कारण ही लोभ-लालच, बेईमानी और संग्रहवृत्ति पनप रही है। इससे सामाजिक विषमता पैदा होती है और लोगों में अविश्वास की भावनाएँ भड़कती हैं। इस स्थिति का मुकाबला त्याग और उदारता के बल पर ही किया जा सकता है।

हमारे शरीर की व्यवस्था ऐसी ही है। उसके पास संग्रह तो हैं, पर एक अच्छे सहयोग के लिए, त्याग और उदारतापूर्वक औरों की सुविधाएँ बढ़ाने के लिए हैं। हर हड्डी के पोले भाग में, प्लीहा (स्प्लीन), जिगर (लिवर) में रक्त की मात्रा संग्रहित रहती है। कभी चोट या घाव हो जाने पर यह संस्थान अविलंब रक्त पहुँचाकर उस स्थान को ठीक रखने और कमजोर न होने देने का प्रयत्न करते हैं। सामूहिकता की इसी भावना पर समाज की सुख-शांति अवलंबित है।

रक्त ही नहीं शरीर में चर्बी का भी स्टोर रहता है। चमड़ी और मांस के बीच चर्बी सुरक्षित रहती है। कई दिन तक भोजन नहीं मिले तो भी सब अंग काम करते रहते हैं। चमड़ी पीली पड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाती है, तो भी किसी की मृत्यु नहीं होने दी जाती। मृत्यु तो हृदय और मस्तिष्क को पोषण न मिलने से होती है, पर शरीर-संस्कृति जानती है। कि भावनाशील और चरित्रवान् लोगों के मिट जाने से समाज की सुख-शांति मिट जाती है इसलिए यह अपनी सुरक्षित शक्ति उनके लिए खुशी-खुशी दान कर देती है।

यह भलाई की शक्तियाँ ही मनुष्य को जीवनदान देती हैं। डॉक्टर जानते हैं कि शरीर में क्षति ग्लूकोज के टूटने से प्रसारित होती है। जब कोई मांसपेशी या कोष (सेल) काम करता है, तो ग्लूकोज लैक्टिक एसिड में परिवर्तित होकर शक्ति प्रदान करता है। जिगर का ग्लाइकोजन ग्लूकोज में परिवर्तित होता है। यह मांसपेशियों में ए० टी० पी० (एडिनो ट्राइ फास्फेट) टूटकर ए० टी० पी० (एडिनो ट्राइ फास्फेट) एवं फास्फोरस में बदलता है। यह फास्फोरस क्रियेटिंग फास्फेट से मिलता है, जो अपनी शक्ति ग्लाइकोजन से लेता है। विश्राम के समय यही ग्लाइकोजन फिर जिगर में संग्रहित हो जाता है। सामान्य स्थिति में वह रक्त में संचारित होता रहता है। हमारे साधन, सत्कार्यों में निरंतर लगते रहें और आवश्यकता पड़ने पर तो दूसरी बातों को गौण मानकर भी अपनी तमाम शक्तियाँ, प्रतिभाएँ और योग्यताएँ सामाजिक भलाई के कार्यों में लग जाएँ, यह प्रेरणा हमें उक्त क्रिया से मिलती है।

मनुष्य शरीर एक समाज है। इस समाज में अनेक कोष होते हैं, हमारे समाज में अनेक मनुष्य हैं। हम मनुष्य समाज को किस तरह सुखी-शांत और समृद्ध रखें ? किस तरह उसकी सुरक्षा रखें ? इस सबकी जानकारी हमें शरीर क्रिया प्रणाली (फिजियोलॉजी) से सीखनी पड़ेगी। हम उन नियमों पर चलकर ही मानवीय संस्कृति को जीवित रख सकते हैं।

बुद्धिवाद से भी अधिक गरिमामय

बुद्धिवाद कितना ही उपयोगी क्यों न हो, उसकी गरिमा हृदयवाद से ऊँची नहीं हो सकती। मानवी चेतना को जहाँ तक हृदयवाद को प्रधानता देकर ही चलना पड़ेगा। जहाँ विशुद्ध जड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोजनों की बात है, वहाँ एकाकी बुद्धि को भी मान्यता दी जा सकती है, पर जब प्रश्न जीवित चेतना, मनुष्यों, प्राणियों की समस्या पर विचार करना हो, तब हृदयवाद को मान्यता देने से ही काम चलेगा। मनुष्य को जड़ पदार्थ मानकर ही एकाकी बुद्धिवाद के सहारे उसकी समस्याओं का हल सोचा जा सकता है। यदि जीवधारियों की चेतना को भी महत्त्व देना है, तो उसके उत्कर्ष का प्रयोजन हृदयवाद का—परिष्कृत भाव, आदर्श को साथ लेकर ही चलना पड़ेगा।

कृषि, शिल्प, रसायन, उद्योग जैसी भौतिक प्रक्रियाएँ बुद्धिवादी शोध-प्रयोग को ध्यान में रखते हुए सुलझाई जाएँ। यहाँ तक दो मत नहीं हो सकते, पर जब यह प्रश्न सामने आए कि जीवधारियों के स्तर को कैसे ऊँचा उठाया जाए, तो उसका समाधान हृदय को प्रधानता देकर ही खोजना पड़ेगा। अन्यथा ग्रंथियों को सुलझाने की दृष्टि से किए गए प्रयत्न उलटे और अधिक उलझन पैदा करेंगे।

पशु प्रवृत्तियाँ स्वार्थपरता को आधार लेकर ही चलती है, अस्तु उन्हें अविकसित और अभावग्रस्त स्थिति में ही रहना पड़ता है। शरीर की दृष्टि से अधिक मजबूत होते हुए भी वे प्रकृति-प्रकोप का ग्रास अधिक रहते हैं। पारस्परिक सहयोग के अभाव में उनकी शारीरिक, मानसिक क्षमता की कोई कारगर सुरक्षा व्यवस्था नहीं हो पाती और न किसी प्रकार की प्रगति ही संभव होती है। आदिमकाल में वे जिस स्थिति में थे—लगभग उसी स्थिति में रह रहे हैं। प्रकृति के दबाव से शरीर रचना और अभिरुचि में थोड़ा अंतर भले ही आया हो, किंतु उनकी परिस्थितियों में कोई विशेष सुधार नहीं हो सका। इसका कारण उनकी चेतना का स्वार्थ चिंतन तक सीमित रहना ही है। मनुष्य ने प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए सृष्टि का मुकुटमणि बनने की जो अद्‌भुत सफलता पाई है, उसका मूल कारण उसकी बुद्धिमत्ता नहीं—सहृदयता है। परस्पर स्नेह-सहयोग की प्रवृत्ति ने एक दूसरे के साथ घनिष्ठतापूर्वक रह सकने की स्थिति उत्पन्न की और एक ने दूसरे के अनुभव से लाभ उठाकर अपनी ज्ञान-संपदा को आगे बढ़ाया है। बुद्धिवाद ने सहयोग बढ़ाया,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह कथन अवास्तविक है। तथ्य यह है कि मनुष्य की सहृदयता क्रमशः आगे बढ़ती गई और स्नेह-सहयोग की प्रकृति ने मिलजुल कर एक दूसरे को अपने अनुभव, अनुदानों से लाभान्वित करने का कदम बढ़ाया। भाषा, लिपि, अग्नि, कृषि, पशुपालन, औजार, उपकरण, अन्न, वस्त्र, निवास जैसी प्रगति के मूल-भूत आधारों का आविष्कार परस्पर सहयोग के आधार पर ही संभव हो सका है। बुद्धिमत्ता वस्तुतः सहृदयता की बेटी मात्र है।

वनमानुषों की आकृति-प्रकृति मनुष्यों से मिलती-जुलती है, पर वे सघन सहयोग के क्षेत्र में आगे न बढ़ सके और पिछड़ी स्थिति में पड़े रहे। चिंपांजी, गोरिल्ला, वानरों को मनुष्य का पूर्वज कहा जाता है, उनकी शरीर रचना और मन संस्थान मानव प्राणी से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। फिर भी उन्हें वनवास का दंड मिला, इसका कारण सहृदयता की पुण्य प्रवृत्ति से वंचित रहने का पाप ही कहा जा सकता है। कुछ नर बालक—जहाँ-तहाँ वन्य पशुओं द्वारा पालित किये गये पाये गये हैं, उनमें पूरी तरह उन पालनकर्ता पशुओं जैसी ही प्रवृत्ति और बुद्धि मिली है। इससे स्पष्ट है कि बुद्धि कोई स्वतंत्र तत्त्व नहीं, सहयोग, संपर्क की प्रतिध्वनि-मात्र है। बच्चे अपने अभिभावकों की भाषा में ही बोलना आरंभ करते हैं, इससे स्पष्ट है। उच्चारण स्वतंत्र नहीं, वरन् पूर्णतया परावलंबी है। जो बच्चे बहरे होते हैं, उन्हें गूँगा भी रहना पड़ता है। शब्दों को वे सुन नहीं सकते, तो फिर नकल बनाकर बोलना आरंभ कैसे करें ?

मनुष्य समाज की एक अविच्छिन्न इकाई है। परिस्थितियों का दास—वातावरण ही उसे उठाता-गिराता है, आदि प्रतिपादन विभिन्न प्रकार से किए जाते रहते हैं। उन्हें तथ्य ही मानना चाहिए। मान्यताएँ, अभिरुचियाँ, आस्थाएँ, आकांक्षाएँ, प्रवृत्तियाँ किसी के मन में अनायास ही नहीं उठ पड़तीं, वे समीपवर्ती वातावरण से ग्रहण की जाती हैं। मनुष्य के भले-बुरे होने का श्रेय अथवा दोष संबद्ध परिस्थितियों को दिया जाता है। स्वाध्याय और सत्संग की महिमा इसी आधार पर गाई गई है कि उन माध्यमों से आदर्शवादी रीति-नीति अपनाने की प्रेरणा मिलती है। कुसंग से पतन वाला तथ्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी सर्वमान्य है। अपवाद तो किसी भी क्षेत्र में पाए जा सकते हैं, पर सर्वमान्य प्रक्रिया यही है कि उत्कर्ष और अपकर्ष का—स्वभाव और रुझान का बहुत बड़ा आधार संबद्ध जन-समूह से मिलने वाली प्रेरणा ही रहती है। इन तथ्यों पर जितनी अधिक गंभीरता से विचार किया जाए, उतनी ही अच्छी तरह यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य की प्रगति मनःस्थिति और गतिविधि का निर्माण पारस्परिक सहयोग के आधार पर ही विनिर्मित होता है।

यह सहयोग कहाँ से, कैसे, क्यों उत्पन्न हुआ ? इस तथ्य पर किया गया गहनतम चिंतन हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि सहृदयता ही उदार सहयोग के लिए प्रेरित कर सकती है। आदर्शवादी प्रवृत्ति ही दूसरों के साथ सेवा, सहयोग, स्नेह एवं अनुदान भरा उदार व्यवहार करने की प्रेरणा देती है। शुद्ध स्वार्थ ही यदि मूल प्रकृति रही, तो उस संघर्ष में हर किसी को अपने ही लाभ को प्रधानता देनी पड़ेगी, ऐसी दशा में संघर्ष प्रधान रहेगा और सहयोग कभी नहीं पनपेगा। मत्स्य न्याय से एक दूसरे को खाते तो रहेंगे, पर कोई किसी के सुख-दुःख में भाग न लेगा। समुद्र में रहने वाली बहुसंख्यक और विशालकाय मछलियों में यदि सहयोग रहा होता और वे एक दूसरे के सुख-दुःख में शामिल रहने की आवश्यकता समझ गई होतीं, तो मनुष्य को समुद्र में पैर धरने की भी हिम्मत न पड़ती। मछलियाँ सहज ही छक्के छुड़ा देतीं। शहद की मक्खियों का उदाहरण सामने है, उनके छत्ते में हाथ डालने का साहस बड़ी कठिनाई से ही किया जाता है। जिन पशुओं में आपत्ति के समय एक होने की जितनी भी अधिक भावनाएँ होती हैं, उन्हें छेड़ना किसी भी आक्रमणकारी के लिए महँगा पड़ता है।

यों सहयोग का एक सामयिक आधार, पारस्परिक आदान-प्रदान भी होता है, पर उसकी कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं होती। दोनों पक्ष काम चलाऊ समझौते के आधार पर अपना श्रम अथवा धन एक दूसरे को देते रहते हैं, फलतः सुविधाओं का परिवर्तन चल पड़ता है। अर्थशास्त्र की धुरी यही है। किंतु अधिक सघन सहयोग जिसके आधार पर अपनी सुविधाओं का त्यागकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों को लाभान्वित करने की आकांक्षा रहती है, वही मनोभाव है जिसे स्नेह अथवा सहृदयता के नाम से पुकारा जाता है। माता अपनी संतान को इसी भाव से पालती है। मित्र मित्र के लिए इसी वृत्ति से प्राण निछावर करते हैं। संत, सुधारक, सैनिक और शहीद इसी भावना से प्रेरित होकर स्वयं कष्ट उठाते हुए समाज की सुख-शांति के लिए बढ़े-चढ़े त्याग-बलिदान प्रस्तुत करते हैं। महामानवों में यही प्रवृत्ति समुन्नत स्तर पर होती है। सेवाभावी और दानवीरों द्वारा जो लोकमंगल के लिए सराहनीय सत्साहस प्रदर्शित किए जाते हैं, उसमें आदर्शों के लिए लोकमंगल के प्रति पीड़ित मानवता के प्रति उदार सहृदयता ही उल्लास भरी भूमिका प्रस्तुत करती है।

मानवजाति की भूतकालीन प्रगति इसी प्रवृत्ति का सहारा पाकर आज की स्थिति तक बढ़ती आई है। उसमें जब कभी जितना भी व्यवधान पड़ा है, वह संकीर्ण स्वार्थ द्वारा ही डाला गया है। उदारचेता महामानव ही इस विश्व की सच्ची विभूतियाँ हैं, क्योंकि उन्हीं के उत्कर्ष ने समाज को अनुकरणीय और प्रभावोत्पादक प्रेरणाएँ दी हैं। कोई व्यक्ति अपनी क्षमता को स्वार्थ में खर्च कर डालते हैं। कोई व्यक्ति या परिवार सुख-साधनों का उपयोग कर सकता है, पर जब वह उन्हें अपने लिए खर्च करने का तप-संयम एवं अपरिग्रह का साहस करके परमार्थ में अपनी विभूतियों का समर्पण करता है, तो समस्त समाज में आशा भरा नव-जीवन संचार होता है। उस अनुदान से लोकमंगल के कितने ही महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूरे होते हैं। सबसे बड़ी बात यह होती है कि उससे आदर्शवादी अनुकरण की लहरें उमड़ती हैं और अन्य असंख्यों को उसी मार्ग पर चलने की उमंग उत्पन्न करती हैं। यही वह प्रचलन है जिसके आधार पर व्यक्ति, समाज एवं युग को समुन्नत ही नहीं, धन्य बनने का भी अवसर मिलता है।

इस विश्व में जो कुछ श्रेष्ठ है, उसे सहृदयता की ही प्रतिक्रिया समझा जाना चाहिए। उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व की आस्था विकसित हुए बिना कोई मनुष्य न तो आत्म-संयम के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए तैयार होगा और न अपनी उपलब्धियों को सेवा प्रयोजनों में प्रयुक्त करने के लिए सहमत होगा। आपाधापी ही ऐसी दिशा में एकमात्र नीति बन जाएगी। तब स्वार्थों का संघर्ष दिन-दिन विकट होता जाएगा। स्वार्थवादी बुद्धिमत्ता विकसित होते-होते एक दूसरे को फाड़ खाने की स्थिति उत्पन्न करेगी। सर्वत्र आशंका और अविश्वास का वातावरण छाया रहेगा। छल और आक्रमण की संभावना हर दिशा में छाई हुई दृष्टिगोचर होगी, तो कोई चैन और आनंद का अनुभव कहाँ से कर सकेगा ? हिंस्र पशुओं के बीच घिरे हुए छोटे वन-जीव निरंतर आतंकित रहते हैं, उसी स्थिति में स्वार्थी समाज के हर सदस्य को रहना पड़ेगा। बुद्धिवाद का परिणाम स्वार्थसाधन के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता, क्योंकि प्रत्यक्ष लाभ उसी में है। परमार्थ में तो भौतिक दृष्टि से अपनी हानि ही होती है। उदारता बरतने से अपने को तो घाटा ही पड़ता है। ऐसी दिशा में उसे कोई क्यों अंगीकार करेगा। परमार्थ की विडंबनाएँ भी यश पाने और उस आधार पर दूसरों को प्रभावित करके परोक्ष लाभ उठाने की वृत्ति से होती रहती है। पर उस छद्म-कौतुक से कोई ठोस प्रयोजन सिद्ध नहीं होते।

आदर्शवादी परंपराओं के प्रचलन का आधार एकमात्र सहृदयता ही हो सकती है। बुद्धि से भी समाज हित की दुहाई देकर परमार्थ प्रयोजनों का समर्थन तो किया-कराया जा सकता है, पर वैसा करने की प्रेरणा उत्पन्न करना असंभव है। विशुद्ध बुद्धिवादी को विशुद्ध स्वार्थी ही बनना पड़ता है और विशुद्ध स्वार्थ साधन की मनोवृत्ति व्यक्ति का पतन और समाज का स्तर गिराने में कितनी भयंकर सिद्ध हो सकती है, इसे आज सर्वत्र छाई हुई अगणित विभीषिकाओं के रूप में हम सहज ही जान सकते हैं। यदि यही क्रम चलता रहा, तो हमें पिशाच बनकर सामूहिक आत्महत्या के लिए अग्रसर होना होगा अथवा पशु-प्रवृत्ति अपनाकर आदिमकाल की अविकसित स्थिति में पहुँचकर वनमानुषों की तरह रहना पड़ेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहृदयता का महत्त्व बुद्धिमत्ता से घटकर नहीं, बढ़कर ही माना जाना चाहिए और यह अनुभव किया जाना चाहिए कि मानवी आदर्शों को, प्रगति के चिरस्थायी आधारों को, सुख-शांति को, संतोष और आनंद को एकमात्र इसी आधार पर जीवित रखा जा सकता है कि सहृदयता की महान् प्रवृत्ति को अधिकाधिक विकसित करने के लिए उससे भी कहीं अधिक प्रयास किया जाए, जैसा कि बुद्धिमत्ता को विकसित करने के लिए किया जा रहा है। बुद्धि के लिए स्थापित शिक्षा-संस्थानों की तुलना में भाव-संवर्धन के चेतना केंद्रों को, धर्म संस्थानों को, अध्यात्म के प्रयोग-प्रयत्नों को अधिक ही बढ़ावा दिया जाए—कम नहीं। विश्वास, सहानुभूति, सहिष्णुता, सहकारिता, चरित्रनिष्ठा, नम्रता, सज्जनता, उदारता एवं सेवा-साधना जैसी सत्प्रवृत्तियाँ, सद्भाव-संवर्धन के साथ ही जुड़ी हुई हैं। कहना न होगा कि मानव चेतना भौतिक पदार्थों से नहीं, सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों का खाद पानी पाकर ही जीवित रह सकती है, विकसित हो सकती है। इसी पर विश्वमंगल का सारा आधार टिका हुआ है।

गांधी जी कहते थे—"हृदय, बुद्धि और श्रम तीनों के समन्वय में ही मानव जाति का हित है।" अकेले बुद्धिवाद की प्रतिष्ठा अवांछनीय है। सहृदयता भावनात्मक है। बुद्धि और हृदय का समन्वय इतना सघन होना चाहिए कि उसे सत्कर्म के सत्प्रवृत्तियों के रूप में सर्वत्र बिखरा हुआ देखा जा सके। इस समन्वय पर ही सर्वजननीन, सार्वभौम कल्याण निर्भर है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणि परिवार में सहयोग-सद्भाव बढ़ाया जाए

पशु-पक्षी भी मनुष्य के समान ही जीवधारी हैं। उन्हें भी परमेश्वर ने पैदा किया हुआ है। उनका पोषण भी हमारी ही तरह धरती माता से मिलता है। सब प्राणियों का एक पिता है—परमेश्वर और एक ही माता है—धरती। इसलिए थोड़ा विशाल दृष्टि से देखें, तो प्रतीत होगा कि सभी प्राणी आपस में भाई-भाई ही हैं। विकसित-अविकसित का अंतर तो मनुष्य-मनुष्य के बीच भी पाया जाता है, इससे उनके सम्मान एवं अधिकार में कोई अंतर नहीं आता। मानवमात्र के प्रति जिस प्रकार उदार व्यवहार और सद्भाव बरतने की आवश्यकता समझी जाती है, उसी प्रकार उस ममता, आत्मीयता का विकास क्रमशः समस्त जीव-जगत् में होना चाहिए। आत्मा का समग्र विकास और विस्तार मनुष्यों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए वरन् उसे प्राणिमात्र तक व्यापक होना चाहिए।

पशु-पक्षियों को पालतू और प्रशिक्षित बनाने का प्रयास किया जाए, तो वे हमारे लिए बाधक न रहेंगे, वरन् सहयोगी के रूप में काम करके हमारी समृद्धि और शांति में सहायता प्रदान करेंगे। उन्हें नष्ट करने पर उतारू न रहकर, यदि मानवी प्रयत्न अन्य प्राणियों को प्रशिक्षित करने में लग जाएँ, तो न केवल प्राणिमात्र के बीच सद्भावना का विस्तार हो सकता, वरन् विश्वव्यापी चेतना तत्त्व को अधिक गति से विकास की दिशा में बढ़ चलने का अवसर भी मिल सकता है। प्राणियों को प्रशिक्षित करने के लिए जहाँ भी प्रयत्न हुए हैं, वहाँ आशाजनक सफलता मिली है।

संसार के विभिन्न भागों में विभिन्न आकृति-प्रकृति के वानर पाए जाते हैं। अफ्रीका का गुयेरेजा कोलोवस बंदर शरीर में तो तीन फुट ही होता है, पर उसकी पूँछ शरीर से भी अधिक लंबी अर्थात् साढ़े तीन फुट होती है। हाथी जो काम सूँड़ से लेता है, लगभग वैसा ही वह पूँछ से लेता है। दक्षिणी अमेरिका के हाडलर वानर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर बहुत तीखा होता है, दो मील दूर तक उसकी आवाज सुनी जाती है और क्रोध, हर्ष, पीड़ा, कामोन्माद आदि की अनुभूतियाँ, उसकी वाणी से सहज ही पहचानी जा सकती हैं। दक्षिणी अमेरिका के अमेजान क्षेत्र में पाए जाने वाले सिवाइड्स वानर गिलहरी और उल्लू की आकृतियों के सम्मिश्रण से बने हुए अपने ढंग के अनोखे प्रतीत होते हैं।

निशाचर डोरोकोलिस, लंबी टाँग वाला साकी, देखने में सुंदर और अकल का पुतला केपूचिन मनुष्य के साथ कुत्ते की तरह ही घुल-मिल जाता है। वह बर्तन धोना, कपड़े सुखाना, झाड़ू लगाना, बिखरी चीजों को सँभालकर रखना, पंखा झलना, घर की रखवाली जैसे छोटे-मोटे घरेलू काम करने में मालिकों की सहायता करता है। ड्राइंग का अभ्यास करा दिया जाए, तो वह खड़िया हाथ में लेकर सीखी हुई आकृति बिलकुल सही बना देता है। वूली बंदर पर भेड़ जैसी ऊन होती है। मकड़ी की तरह हाथ-पैर और पूँछ के सहारे यह एक डाली से दूसरी डाली पर उलटी-सीधी चाल से चढ़ता-उतरता और उछलता रहता है, इसलिए इस वानर का नाम स्पाइडर मंकी पड़ा है। गले की अतिरिक्त थैली में ढेरों फालतू आहार भरकर फिरते रहने वाले बंदर बोर्नियो में अधिक होते हैं। पूर्वीय गोलार्ध में पाए जाने वाले मैकेक और रहसीस जीवनीशक्ति और संतुलित मानसिक क्षमता वाले होते हैं। अंतरिक्ष उड़ान में एक समय इन्हीं का उपयोग किया गया था। कुत्ते के जैसे मुँह वाला वेवून अरब देशों में पाए जाते हैं, वे पेड़ पर चढ़ने की अपेक्षा जमीन पर रहने में सुख, सरलता अनुभव करते हैं।

जर्मन प्राणिशास्त्री कोलर ने अपने पालतू चिंपांजी 'सुलतान' की बुद्धिमत्ता बढ़ाने के लिए उसे कितनी ही गुत्थियाँ सुलझा सकने और अड़चनों का सही हल निकालने के लिए प्रशिक्षित किया था। वह अलमारी खोलकर अपने काम की चीजें निकालता और फिर उसे बंद कर देता था। लंबे बाँस के सहारे ऊँची टँगी हुई चीजें उतारना उसे अच्छी तरह आता था। ऐसे ही वह और भी कई बुद्धिमानी के काम करता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैडम कोट्क का पालतू चिंपांजी रंगों के भेद-उपभेद समझता था और प्रायः तीस तरह के हलके गहरे रंगों का वर्गीकरण कर लेता था। रेखागणित की आकृतियों को पहचान लेने में भी उसने कुशलता प्राप्त करली थी। क्यूबा में मादाम अब्बू के पास एक विनोदी चिंपाजी था। वह जब पुरुषों को पास आते देखता, तो अपनी मादा को फौरन छिपा लेता; किंतु कोई स्त्री पास आती, तो मादा को प्रसन्नतापूर्वक फिरने देता।

गोरिल्ला वनमानुषों में अग्रणी है। उसकी ऊँचाई छह फुट होती है, किंतु दोनों हाथों को मिलाकर लंबाई नौ फुट तक जा पहुँचती है। वजन ४०० से ६०० पौंड। यह दो-ढाई इंच मोटी लोहे की छड़ आसानी से तोड़-मरोड़कर फेंक सकता है। इसकी पकड़ में किसी जानवर का कोई अंग आ जाए, तो उसे एक ही झटके में उखाड़कर फेंक सकता है। संसार प्रसिद्ध फिल्म 'किंग कांग' में प्रमुख करतब एक भीमकाय गोरिल्ला का है। इस फिल्म को अत्यधिक ख्याति मिली।

इस जाति का दूसरा वानर चिंपांजी अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान् होता है, उसकी हर क्रिया से बुद्धिमत्ता और विचारशीलता टपकती है। अकारण उसे बेतुकी हरकतें करते नहीं पाया जाएगा। परिवार भी उसका व्यवस्थित रहता है। एक नर के साथ कई मादाएँ सुख और सुरक्षापूर्वक जीवनयापन करती हैं। पालतू चिंपैंजी के साथ कभी पेचीदगी भरी स्थिति उपस्थित कर दी जाए, तो वह सहज ही सुलझा लेता है।

जर्मनी में कुछ समय पूर्व एक विश्वविख्यात घोड़ा था—'क्लेवर हार्स'। वह जर्मनी भाषा में पूछे गए गणित के छोटे-छोटे प्रश्नों का उत्तर टाप के खटके मार कर देता था और दर्शक उसकी गणितज्ञ बुद्धि को देखकर चकित रह जाते थे। अमेरिका और फ्रांस में भी इस तरह के कई घोड़े हो चुके हैं। इनकी बुद्धिमत्ता जाँचने के लिए पशु मनोविज्ञानी थार्नडाइक ने गंभीर अध्ययन किए हैं कि बुद्धि पर मनुष्य की ही बपौती नहीं है, वह बीज रूप में दूसरे जीवों के भीतर भी मौजूद है और यदि उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयुक्त अवसर मिले, तो वे भी अपनी बुद्धिमत्ता को बड़ी हद तक विकसित कर सकते हैं।

तंजानिया (अफ्रीका) में पशु अभियंता मि० जार्ज के मकान के पास ही पेड़ पर गिलहरी ने एक घोंसला बना रखा था। संसर्ग के प्रभाव से इस गिलहरी ने अपने में ऐसी आदतें उत्पन्न कर ली थीं जिसमें देखने वालों को बड़ा कौतूहल होता था। शराब का चस्का उसे लग गया था। वह चुपके से आती और घर में रखी शराब की बोतलों के कार्क खोलकर मद्यपान का आनंद लेती। यह गिलहरी प्रायः अपना भोजन इस परिवार से ही प्राप्त करती थी। अस्तु, उसे समय और स्वाद का अभ्यास हो गया था। नियत समय ही वह भोजन करती। उसे जो वस्तुएँ खाने की शिक्षा दी गई थी उन्हें ही चुनकर ग्रहण करती। उसने 'कमोड' में ही टट्टी जाना सीख लिया था। जब भी उसे मल त्यागना होता, नियत स्थान पर जाकर अपनी हाजत पूरी करती। इधर-उधर मल-विसर्जन करते उसे कभी नहीं देखा गया।

मास्को के एक इंजीनियर अनातोली वाइकोव ने दो कबूतरों को मशीनों के अच्छे और खराब पुर्जे पहचानने और उसका अंतर बता सकने की शिक्षा दी। इस पहचान का आधार त्रुटिपूर्ण पुर्जों से अलग ढंग के ऐसे कंपनों का निकलता था, जो बहुत ही संवेदनशील मशीनों से पहचाने जा सकते थे। कबूतर उस अंतर को समझने में अभ्यस्त हो गए और अपने पालने वालों की अच्छी सहायता करने लगे।

वाइकोव ने लिखा है—"प्रशिक्षित कबूतर जिस बारीकी से यांत्रिक खराबी को पकड़ सकते हैं, उतनी जानकारी देने वाले निर्दोष उपकरण बहुत ही कठिनता से बनाए जा सकेंगे।"

शिशुमार नामक जाति का मत्स्य जल का बहुत ही प्रेमी और सहयोगी प्रकृति का होता है। प्रयत्न करने पर वह मनुष्य के साथ हिल-मिल जाता है और खुशी से पालतू बनकर रहने लगता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जापानी मत्स्य विशेषज्ञ मसाइकी नहाजमा का कथन है कि—"यदि शिशुमार थल चर होते, तो वे मनुष्य के लिए कुत्तों से भी अधिक स्नेही, सहयोगी सिद्ध होते।" वे अपने परिवार के साथ बहुत ही सज्जनता भरा व्यवहार करते हैं।

शिशुमार कोई तीस तरह की ध्वनियाँ अपने मुख से निकाल सकते हैं और उनके आधार पर अपनी मनःस्थिति का दूसरों को परिचय दे सकते हैं। शिकार पकड़ने के लिए दौड़ते समय वे कुत्ते की तरह भौंकते हैं। सफल होने पर बिल्ली की भाँति म्याऊ-म्याऊ करके खुशी जाहिर करते हैं। पेट भरने पर वे डकार लेते हैं। चटाख की ध्वनि के साथ होंठ चाटते हैं। विरोधियों को डराने के लिए पटाखा चलने जैसी आवाज करते हैं।

सिखाने पर वे कई तरह के खेल करते हैं। सीटी बजाने पर उसका जवाब सीटी बजाकर देते हैं। शिशुमार को सिटासियन वंश का ह्वेल जातीय समझा जाता है। दिशा बोध और शब्दज्ञान की उसे अच्छी जानकारी होती है। २५ गज दूरी से फेंकी हुई वस्तु को वह इस तेजी से पकड़ सकता है, मानो उस वस्तु के साथ ही वह उड़कर आया हो। समुद्री खोज के लिए गहरे सागर तल में बने हुए अमेरिका खोज केंद्र—सी लैब-२ के लिए एक कुशल कार्यकर्ता के रूप में पालतू शिशुमार 'टैफी' ने असाधारण सहायता की थी। थके हुए गोताखोरों को उनकी कमर में बँधी रस्सी मुँह से पकड़कर जहाज तक पहुँचा देने में भी पालतू शिशुमार बड़ा कौशल दिखाते हैं। वे मनुष्य की तरह हँस भी सकते हैं।

ब्रिटिश नौसेना से रिटायर होकर नीरेफौक के विचिंगहम नामक स्थान में फिलिप वेयरे ने अपने आठ एकड़ के खेत में घरेलू चिड़ियाघर बनाया। उसका उद्देश्य पशु-पक्षियों की प्रकृति का अध्ययन और उनकी नसलों को सुंदर-सुविकसित बनाने का मार्ग खोजना था। अपने विषय में रुचिपूर्वक तन्मय हो जाने के कारण वेयरे ने दुर्लभ पशु-पक्षी प्राप्त किए और उनकी प्रकृति के बारे में नई-नई जानकारियाँ प्राप्त की। चिड़ियाघर की ख्याति फैली, तो दर्शकों के झुंड भी अपने कौतुहल की तृप्ति के लिए वहाँ आने लगे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और टिकिट की आमदनी से चिड़िया घर का खर्च चलने में सहायता मिलने लगी।

रीछ और भेड़िये किस प्रकार सज्जन बनाए जा सकते हैं और बिदकने वाले पशुओं को विश्वस्त एवं स्नेही कैसे बनाया जा सकता है ? इस प्रयोग में उन्होंने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है।

वेयरे की तत्परता ने उन्हें संसार के अनुभवी प्राणि विशेषज्ञों की पंक्ति में ला बिठाया है। वे ऐंग्लिवाँ टेलीविजन कंपनी में प्राणि विशेषज्ञ की भूमिका में कितने ही कौतुहलवर्धक कार्यक्रम देते रहते हैं। 'विंड इन दी रिज़' नामक प्रख्यात फिल्म में उन्होंने प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक प्राणियों के विकास और विनाश का महत्त्वपूर्ण चित्रण किया है। "प्राणिमात्र के साथ मनुष्यों को अधिक अच्छा व्यवहार करना चाहिए।" योरोप में इस आंदोलन के सूत्रधार भी वेयरे हैं। उनकी पत्नी 'पैट' इस कार्य में उनका भरपूर सहयोग करती हैं।

मत्स्य विशेषज्ञ स्टेटर ने विभिन्न प्रकार के संगीत के मछलियों पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का पर्यवेक्षण किया है। कुछ ध्वनियाँ तो मछलियों को इतनी प्रिय लगीं कि वे उन्हें सुनकर उछलने-कूदने और नाचने लगतीं। कुछ ध्वनियाँ उन्हें बिलकुल पसंद न आईं और वे जब बजतीं तो उपेक्षापूर्वक मुँह मोड़कर अन्यत्र चली जातीं। संगीत की विभिन्न ध्वनियों ने उनके शरीर पर भी भिन्न और विचित्र प्रभाव डाले। एक प्रकार के संगीत ने तो उनका वजन और विस्तार बढ़ाने में बहुत सहायता की। एक ध्वनि के कारण उनकी प्रजनन क्रिया दूनी हो गई तथा पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अंडे दिए।

डॉ० फ्रेंक वाडन ने मछलियों को रंग पहचानना सिखाया और यातायात के नियमों का अभ्यास कराया, वे अपने मालिक और दर्शक का अंतर करना सीख गई। मिनो जाति की मछलियाँ यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझने लगी कि किस प्रकार की आवाज सुनकर उन्हें क्या आचरण करना चाहिए ?

प्रो० जे० पी० फ्रोलोफ ने मछलियों को संगीत सुनने का शौकीन बनाने में सफलता प्राप्त की है। वे तालाब में बिजली के तार डालते और संगीत के रिकार्ड बजाते रहे। आरंभ में मछलियों ने थोड़ा ही ध्यान उस ओर दिया, किंतु धीरे-धीरे उसकी पूरी शौकीन हो गई, जैसे ही संगीत की ध्वनि होती, वे चारों ओर से वहीं इकट्ठी हो जाती और ध्वनि केंद्र को लपकने का प्रयत्न करतीं।

उन्होंने एक तालाब में कुछ मछलियाँ पाली। भोजन नियत समय पर दिया जाता और चारा डालने से पूर्व घंटी बजाई जाती। थोड़े दिन में घंटी और चारे का संबंध वे समझ गई और जब भी समय-कुसमय घंटी बजती, तभी वे चारे के लिए दौड़कर इकट्ठी हो जातीं।

पशु-पक्षियों को अपने ही प्राणि परिवार का सम्मानित सदस्य समझकर उन्हें सुखी-समुन्नत और प्रशिक्षित बनाने की दिशा में यदि हमारी प्रवृत्ति मुड़ सके तो न केवल जीव जगत् का उपकार होगा, वरन् मानवी उदारता और सद्भावना का एक सुखद अध्याय प्रारंभ होगा। विश्व चैतना में सदाशयता की वृद्धि करने के प्रयास करके मनुष्य घाटे में नहीं, वरन् नफे में ही रहेगा। नए सहयोगियों का नया सद्भाव पाकर मानवी प्रगति में नया उभार ही आएगा।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवेतर प्राणियों का संसार—
पारिवारिक जीवन

काम, प्रेम, गृहस्थ और दांपत्य आदि के लिए जीवों का जगत् बड़ा विचित्र है, कई जीवों में जोड़ों की घनिष्ठता ऐसी प्रगाढ़ होती है कि एक के न रहने पर दूसरे का दुःख शरीरांत से ही छूटता है। कबूतर के बारे में यजुर्वेद में उद्धरण देते हुए बताया गया है—**"मित्रवरुणाभ्यां कपोतान्"** मित्रता, प्रेम और दांपत्यनिष्ठा हममें कपोतों जैसी हो। सारस भी ऐसा ही पक्षी है, जोड़े में कोई एक बिछुड़ जाये, तो दूसरा बहुत दुखी हो जाता है। पंडुक नर मर जाता है, तो उसकी मादा उसके शव में शरीर कूट-कूटकर विलाप करती है। उसका वह आर्तनाद देखकर मनुष्य के भी आंसू आ जाते हैं और ऐसा लगता है कि मनुष्य में भी ऐसी निष्ठा होती, तो उसका जीवन कितना सुखमय होता ?

थोड़ी-सी बात में गाल फुला लेना और सप्ताहों मन में क्रोध भरे रहने की बेवकूफी केवल मनुष्य ही करता है। अन्य जीव नहीं। सृष्टि के प्रायः सभी जीव प्रबल प्रतिरोध या आक्रमण की स्थिति में ही क्रोध व्यक्त करते हैं, अन्यथा उनका जीवन बड़ा हल्का-फुल्का और विनोदप्रिय होता है। मनुष्येतर जीवों का यह मनोविनोदी स्वभाव देखते ही बनता है। पेंगुइन पक्षी अपनी पत्नी से मनोविनोद के लिए अपनी चोंच उसकी चोंच में डालकर बड़ी देर तक विचित्र क्रियाएँ करके उसका मन प्रसन्न रखता है। कछुआ अपनी मादा की आँख को खुजलाता और पीठ पर हल्की चपत-सी लगाकर खेल करता है। मैडम अब्लू नामक क्यूबा की एक महिला के पास एक चिंपांजी था, वह बड़ा ही मजाकिया स्वभाव का था। नर जाति के इस चिंपांजी की विशेषता यह थी कि वह हमेशा अपनी मादा के साथ ही रहता, कोई स्त्री पास आ जाए तो कोई बात नहीं, पर किसी आदमी के पास पहुँचते ही वह अपनी पत्नी को छिपा लिया करता था। ऐसा करते समय वह मुस्कराता भी था। लोग इसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनोद का घंटों आनंद लिया करते थे, पर वह मानो खेल-खेल में ही मनुष्य के प्रति अविश्वास और व्यंग व्यक्त किया करता था। पराई इज्जत पर हाथ साफ करने की मानवीय दुष्प्रवृत्ति के नाम पर चिंपांजी का यह व्यंग अयुक्त संगत नहीं कहा जा सकता।

बया को खेल-कूद और मनोविनोद की जिंदगी विशेष प्रिय है, वह इधर-उधर से, कहीं से रुई या डोरा ढूँढ़ लाता है, फिर उससे झूला बनाकर स्वयं भी झूलता है, पड़ौसियों और बच्चों को भी झुलाता है, बीच-बीच में बया उनको सिखाती और समझाती भी है। नृत्य का भी आनंद लेती है। पेंगुइन पक्षी बर्फ में फिसलने का एक विशेष खेल खेलता है। बत्तखों की जल-क्रीड़ा देखते ही बनती है। कोयल का गाना और मैनाओं की मनुष्य की भाषा की नकल करना भी कम मनोरंजक नहीं। आश्चर्य की बात यह है कि नृत्य आदि उत्सवों में अधिकांश विनोदी कार्य नर को ही करने पड़ते हैं। गौरैया दिन में कई बार खेल-खेल में नकली युद्धाभ्यास करती है। कई चिड़ियाएँ नटों जैसे करतब दिखाकर अपने अन्य साथियों को हँसाती हैं।

और तो और आतिथ्य और मैत्री भाव के लिए भी पशु-पक्षियों का संसार मानवीय क्षेत्र से अधिक सुंदर और विश्वस्त है। सजातीयों से प्रेम तो सभी कर लेते हैं, अपने परिवार का आदर-सत्कार कर लेना बड़ी बात नहीं। हृदय की विशालता और सौजन्य की रक्षा तब होती है, जब मनुष्य अपने परिश्रम से उत्पन्न किए धन और वस्तुओं को केवल आत्मीयता और मैत्री के सुख के लिए दूर से आए अतिथियों को खिला-पिलाकर अथवा देकर प्रसन्न होता है। यह सत्प्रवृत्ति ही मनुष्य को संकीर्णता से निकालकर विराट् के साथ संबंध स्थापित करने में सहायता करती है, पर आज का मनुष्य तो इन सद्गुणों को भी भूलता जा रहा है।

शुतुरमुर्ग अपने लंबे डीलडौल और लंबी दौड़ान के लिए तो प्रसिद्ध है ही, सहृदयता और मित्रभाव के लिए भी लोग उसका उदाहरण देते हैं, इसकी मैत्री प्रायः जेबराओं के साथ होती है। अन्य चौपाये भी यदि इसके निवासस्थान के आस-पास आ जाएँ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो यह उनसे भी बड़ी जल्दी घनिष्ठता स्थापित कर लेता है, उसमें न तो उसका कोई स्वार्थ है, न भय। आत्म-संतुष्टि के लिए ही वह मित्रता करता है और जिसके साथ मैत्री करता है, उसको अंत तक निबाहता भी है। मनुष्यों की मित्रता अधिकांश स्वार्थ और मतलबगर्जी की होती है, मित्र के लिए आत्मोत्सर्ग वाली दृढ़ता एकाध मनुष्य में ही होगी, पर शुतुरमुर्ग जिसके साथ दोस्ती करता है, उसे न केवल उसकी असहाय अवस्था में उसके भोजन, पानी का प्रबंध करता है, वरन् वैसे भी उसे कुछ न कुछ खिलाता रहता है। जेबराओं से विशेष मैत्री का कारण यह है कि जेबरा स्वयं भी उसे अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खाने को देते हैं और उनके प्रत्युपकार के लिए, वह अपनी ऊँची गरदन से आस-पास के क्षेत्र की चौकसी रखता है, कोई शिकारी या आक्रमणकारी हिंसक जीव दिखाई दे जाये, तो जेबरा अपने मित्रों को तुरंत आगाह करेगा और उसे किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाएगा।

कई प्राणी बुद्धि, भावना और कुशलता तीनों ही दृष्टि से काफी आगे बढ़े-चढ़े होते हैं। कई बार तो वे मनुष्य को चुनौती देते हैं। उनकी बुद्धिमत्ता, व्यवस्था और सृजनात्मक शक्ति देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। इस स्तर के प्राणियों में 'वीवर' प्रख्यात है।

'वीवर' एक प्रकार का जल और थल निवासी—एक प्रकार का बड़ा चूहा है, जो पहले केवल उत्तरी अमेरिका में पाया जाता था, पर अब उसकी नस्ल प्रायः सभी ठंडे मुल्कों में फैल गई है। उसकी लंबाई पूँछ समेत ३ से ४ फुट और वजन में ५० से ६० पौंड तक होते हैं। उसकी आयुष्य १५-२० वर्ष तक होती है। शरीर पर बहुत ही मुलायम और चमकीली ऊन होती है।

वीवर की समाज भावना और गृहनिर्माण कला अद्‌भुत है। वे अपना या अपने परिवार का ही ध्यान नहीं रखते, वरन् सुख-दुःख में अपने क्षेत्रवासियों की भी पूरी सहायता करते हैं। रोगी, दुर्बल, आपत्तिग्रस्त या भोजन कमाने में असमर्थ साथियों को वे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देते। अपनी सुविधाओं के साधनों में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यस्त नहीं रहते, वरन् यह भी तलाश करते हैं कि किसी साथी को कोई कष्ट तो नहीं है। प्रसव काल आने पर मादा वीवर की सहायता करने अनेक सहेलियाँ आ जाती हैं और उस समय की आवश्यकताओं को देखते हुए जच्चा की समुचित सहायता करती हैं। अपने बच्चों की तरह पड़ोसिन के बच्चों का भी ये मादाएँ ध्यान रखती हैं और उन्हें न कुछ असुविधा होने देती हैं और न उच्छृंखलता बरतने देती हैं।

किसी शत्रु के आक्रमण होने अथवा प्राकृतिक विपत्ति आने पर सूचना पाते ही साथियों को सावधान कर देते हैं और भाग निकलने में पहले कमजोरों को अवसर देते हैं।

आत्म निर्भरता के प्रतीक—

ब्राजील में एक ऐसी चींटी पाई जाती है, जो कृषि पर निर्भर रहती हैं। सामान्य चींटियों की तरह दूसरों की कमाई पर निर्भर नहीं रहतीं। यह कुछ पेड़ों से गिरी पर टूटी हुई पत्तियाँ ले आती हैं और उन्हें अपने बिल में रखती हैं। किसान जिस तरह अपने खेत को अच्छी तरह जोतता, घास-फूस निकालकर बीज बोता है, उसी प्रकार ये चीटियाँ भी इन पत्तों का भली प्रकार निरीक्षण करती हैं, कहीं कोई कीड़ा या रोगाणु तो नहीं हैं। यदि पत्ता अच्छा हुआ, तो वे इसमें एक विशेष प्रकार की फफूँद बोती हैं। पैदा की हुई फफूँद से ही इनका आहार चलता है। चींटी में स्वावलंबन के साथ गुण-दोष विवेचन की क्षमता आश्चर्यजनक है।

यदि कोई बँटवारा करना चाहे तो जिम्मेदार चींटियाँ उसके लिए नया बिल ढूँढ़ देती हैं। उसे बिदा करते समय उन्हें यह ध्यान रहता है कि कहीं इसे आहार के अभाव में भूखों न मरना पड़े, इसलिए ये फफूँद का एक कण भी उसे देती हैं। इस कण को लेकर चींटी दूसरे बिल में जाती है और वहाँ अपनी फफूँद की कृषि जमाकर सुखपूर्वक रहने लगती है। तुच्छ जीव में मनुष्य से बढ़कर विवेक भी कम विस्मय बोधक नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रिस के शिष्य डॉ० लिंडावर ने मधुमक्खियों का बहुत दिन तक अध्ययन किया और बताया कि उनकी प्रवृत्तियाँ मानवजीवन की गतिविधियों से विलक्षण साम्य रखती हैं। जिस प्रकार घर के मुखिया के आदेश पर घर के सब काम व्यवस्थापूर्वक चलते हैं, उसी प्रकार मधु-मक्खियों में एक रानी मक्खी होती है, छत्ते की सारी व्यवस्था का भार उस पर ही होता है। छत्ते के सब निवासी उसके निर्देशों का अच्छी प्रकार पालन करते हैं। इन मक्खियों में विभाग बँटे हुए होते हैं, कुछ मजदूर होती हैं, जिनका काम छत्ते को बनाना, टूट-फूट जोड़ना, छत्ते में कोई मर जाए, उसे वहाँ से ले जाकर श्मशान तक पहुँचाना, यह सब काम मजदूर करते हैं। कुछ सैनिक मक्खियाँ होती हैं, इनका काम है रानी मक्खी और छत्ते की बाहरी आक्रमणकारियों से सुरक्षा। मनुष्यों की फौज में कुछ सिपाही कायर और डरपोक हो सकते हैं, किंतु ये दुश्मन के संघर्ष में अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करतीं। ये उनसे मृत्युपर्यन्त लड़ती हैं। कुछ मक्खियों का काम फूलों से पराग लाना और उससे शहद बनाना होता है। इस तरह जिसको जो काम मिला होता है, वह वही काम दत्तचित्त करती रहती हैं।

छत्ते में दूसरी रानी मक्खी पैदा हो जाती है, तो उसके लिए परिवार अलग कर दिया जाता है। रानी मक्खी अपने लिए उपयुक्त स्थान की खोज में चलती है, पर वह एक दिन में नहीं मिल जाता। रानी मूर्ख नहीं होती, वह यद्यपि नन्हा-सा कीट ही है। कुछ समय के लिए वह किसी पेड़ पर बसेरा डाल लेती है और अपने सभासदों को आदेश देती है कि वे ऐसा स्थान ढूँढें जहाँ जल की समुचित मात्रा उपलब्ध हो, पराग के लिए फूल और घना जंगल हो तथा स्थान ऐसा हो जहाँ नींव जमाने में दिक्कत न हो। आमतौर पर यह जहाँ पहले छत्ते लगे होते हैं, उन स्थानों पर ही नया छत्ता बनाते हैं, उससे मोम की दीवार वृक्ष से चिपकाने में सुविधा रहती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान के चुनाव में कई बार इनमें मतभेद हो जाता है। यदि दो-चार मक्खियों में ही विरोध रहे तब तो वे स्वयं अपनी भूल मानकर छत्ते में मिल जाती हैं, पर यदि मतभेद इतना हो कि दो दलों में विभक्त होने की स्थिति आ जाए तो रानी मक्खी अपनी समझदारी से काम लेती है, वह जिस पक्ष को उचित मानती है, उसे लेकर नए स्थान में चली जाती हैं और बाद में अपने विशेष दूत भेजकर अपने बिछुड़े साथियों को भी वहाँ बुला लेती हैं। इस स्थिति में विरोधी पक्ष चुपचाप चला आता है और अपने दल में सम्मिलित होकर काम करने लगता है। डॉक्टर लिंडावर के अनुसार मक्खियों में इससे भी विलक्षण मानसिक गतिविधियाँ चलती हों तो कोई आश्चर्य नहीं।

यह दो उदाहरण इसलिए दिए गए हैं कि मनुष्य यह न मान ले कि न्याय, नीति, ईमानदारी, विकास आदि की बौद्धिक क्षमताएँ केवल उसे ही मिली हैं, जीवों में कई जीव अति सभ्य संसार में रहने का दावा कर बैठे, तो उनकी बात को असत्य सिद्ध करना कठिन हो सकता है। यह उदाहरण इस बात के प्रतीक है कि संसार के संपूर्ण जीवों में व्याप्त आत्म-चेतना एक ही है। सबमें एक ही प्रकार की न्यूनाधिक नई-नई प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। मनुष्य केवल इसलिए अपवाद है कि उसमें प्रत्येक जीवन की संभावनाएँ विलक्षण रूप से भरी गई हैं। वह अपने आप में एक स्वतंत्र सत्ता है, इसलिए उसे यह सोचने-समझने का अवसर मिलता है कि हमारे जन्म का उद्देश्य क्या है ? उस उद्देश्य को कैसे सार्थक किया जा सकता है ?

प्रो० जे० बी० एस० हाल्डेन का कथन है—"एक लाख वर्ष पूर्व कोई ऐसा एकाकी मनुष्य का जोड़ा था, जो अकेला एक ही था, उसी से आज के संपूर्ण मनुष्यों का आविर्भाव हुआ है। हम सब मनुष्य दूर के रिश्ते में सगे भाई हैं और सगे भाइयों जैसा व्यवहार ही हमें करना चाहिए।" और आगे तत्त्वदर्शन की ओर बढ़ें तो डॉ० हाल्डेन के ही मतानुसार, "आज से लगभग ७००० लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी में कोई एक प्राणी था, चाहे तो वह प्रोटोजोआ (एककोषीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जंतु) था या फिर कोई आत्म-चेतनासंपन्न प्राणी, उसी से सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों का आविर्भाव हुआ।" इस तरह हमें मात्र मनुष्यों में ही भाई चारे का संबंध नहीं देखना चाहिए, वरन् संपूर्ण प्राणियों में एक ही आत्म-चेतना का परिष्कार देखना चाहिए। संपूर्ण प्राणियों के प्रति मैत्री, करुणा और आत्मभाव-तत्त्वदर्शन का वह सिद्धांत है, जो हमें शीघ्र ही ईश्वर से मिला देता है, जब सब अपने ही भाई-बंधु, नाती-पोते, पिता-बाबा, माँ-बहन, बुआ-भतीजे हैं, तो किसके साथ छल-कपट, अनीति और अन्याय किया जाए ?

सारा संसार एक परिवार

अपने परिवार के लिए हम अपनी आजीविका का ६६ प्रतिशत भाग लगाते हैं और थोड़ा-सा अपने लिए रखते हैं, क्योंकि हमें अपने प्रियजनों की सेवा से सुख, संतोष मिलता है। यदि इस दायरे को बढ़ाकर हम प्राणिमात्र के प्रति आत्मभावना और समता का विस्तार कर लें और उसे समिष्टभाव से निष्ठापूर्वक पूरा करते रहें, तो यह निश्चय है कि हमारे सुख-संतोष और आनंद की सीमा भी बढ़ी हुई होगी। प्रेम का पूरा आनंद एक-दो के साथ प्रेम-भाव से ही नहीं मिल सकता, उसका जितना अधिक विस्तार कर सकते हैं, अर्थात् घृणास्पद से भी यदि प्रेम करने का स्वभाव विकसित कर पाएँ, तो अपने जीवन में बहुत अधिक आनंद और आह्लाद की अनुभूति कर सकते हैं।

इस विचारणा का आधार यह है कि संपूर्ण जीव जगत् एक ब्रह्म से स्फुरित हुआ है। इसी का नाम तत्त्वदर्शन है। सनातन धर्म और संस्कृति का विकास इस तत्त्वदर्शन से होने के कारण ही वह अकाट्य है। हमारे भारतीय धर्म ग्रंथ कहते हैं—"प्रारंभ में एक ही ब्रह्म था, उसकी यह इच्छा हुई—**'एकोऽहं बहुस्याम'** मैं एक हूँ बहुत हो जाऊँ। उसकी इच्छाशक्ति ही का विस्तार अनेकानेक ब्रह्मांड और अनेक जीव-जंतुओं में दिखाई देता है। संपूर्ण विविधता में भी वह एक ही अविनाशी अक्षर तत्त्व समाया हुआ है—**'बहुनामहं एकमैव'** संसार में जो कुछ दिखाई देता है, उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबमें एक मैं ही चेतन रूप में व्याप्त हूँ। जब हम इस बात को समझ लेते हैं, तब हमें प्राणियों के साथ व्यवहार के लिए ही एक नया दृष्टिकोण नहीं मिलता, वरन् मनुष्य जीवन की वर्तमान गतिविधियों को भी हम दोषपूर्ण देखने लगते हैं और यह मानने को विवश होते हैं कि हमारे जीवन में जो अभाव अशक्ति और अज्ञान है, उसे भौतिक पदार्थों से दूर नहीं किया जा सकता, वरन् आत्मा को विराट्-परमात्मा बनाकर ही हम कष्टों से मुक्ति और सच्चे आनंद की उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

योगवासिष्ठ, गीता आदि ग्रंथों में संपूर्ण जीवों में एक ही शक्ति और चेतनसत्ता के विद्यमान होने के वैज्ञानिक रहस्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। पैंगलोपनिषद् में ब्रह्म के द्वारा सृष्टि रचना पर बड़ा सूक्ष्म प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि एक ही तत्त्व किस प्रकार विभिन्न जीव पदार्थों में अस्तित्व धारण करता चला गया। पैंगल ऋषि-महर्षि याज्ञवल्क्य के पास जाते हैं और तप करते हैं। १२ वर्ष तक तप करने से जब उनकी आत्मा शुद्ध हो जाती है, तब वे महर्षि से कहते हैं—**'परम रहस्य कैवल्य-मनुब्रूहीतिहीति प्रपच्छ'** भगवन् आप मुझे परम रहस्यकारी 'कैवल्य' का उपदेश करें। महर्षि याज्ञवल्क्य ने उन्हें बताया कि सृष्टि के आदि में केवल सत् ही था। वही नित्य, मुक्त, अविकारी, सत्य, ज्ञान, आनंद से पूर्ण सनातन एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म है, उसी से लाल, श्वेत, कृष्ण गुणवाली प्रकृति उत्पन्न हुई और यह चराचर जगत् बन गया।

शेर बहुत हिंसक जंतु है, किंतु समझ, सौंदर्य और वात्सल्य जैसे गुण उसमें भी विद्यमान हैं। वे अपने पारिवारिक जीवन में बहुत निष्ठावान् होते हैं। आजन्म गृहस्थ जीवन की मर्यादाओं का पालन करते हैं और सभी पत्नियां एक बार प्रणयसूत्र में आबद्ध होने के पश्चात् अपने पति के साथ संबद्ध बनी रहती हैं। शेर और शेरनी का कदाचित् ही कभी तलाक होता है। बच्चों को वे दोनों मिल-जुलकर बड़े लाड़-चाव से पालते हैं। प्रसिद्ध जीवशास्त्री श्री सलीम आलिम ने अनेक जीवों के अध्ययन के बाद बताया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रिटेन में पाए जाने वाले अधिकांश छोटे पक्षी एक पत्नीव्रत जीवन-यापन करते हैं। यूरोप में पाया जाने वाला स्टारलिंग, जो एक प्रकार से मैना की आकृति का पक्षी हैं, दिसंबर के महीने में इसके विनाश के दिन होते हैं, कई बार तो आधे स्टारलिंग तक मर जाते हैं, उनमें से कईयों के जोड़े बिछुड़ चुके होते हैं। इस आघात को सहन करना और प्रेमविहीन जीवन-यापन करना स्टारलिंग के लिए कठिन पड़ता है, इन दिनों उनका बिलखना देखकर भावुक मनुष्यों से भी ऊँची इनकी मनःस्थिति प्रतीत होती है।

हमारे देश में पाए जाने वाला बया पक्षी दांपत्य-जीवन में निष्ठावान् नहीं रहता और इस भूल का दंड भुगतता है। वह कई-कई विवाह करके अपने घोंसले में बहुधा कई-कई धर्म-पत्नियाँ ले आता है और फिर उसकी पत्नियों में परस्पर द्वेष-भाव, मार-पीट, काट-कलह होती है, उस मार-धाड़ में उसकी भी काफी मरम्मत होती रहती है और बया अपनी भूल पर पछताता रहता है।

यह उदाहरण जहाँ यह बताते हैं कि मनुष्य जैसी बुद्धिशीलता, चतुरता संसार के सब प्राणियों में होने से वे सब एक ही जाति के जीव हैं, सब आत्मा के अंश हैं और उन्हें एक ही सार्वभौम नियम का पालन कर सुखी रहने और तोड़ने पर दुःख पाने को बाध्य होना पड़ता है।

डॉ० जे० बी० हक्सले चिड़ियों के जीवन के अध्ययन में बड़ी रुचि रखते थे। एक विलायती पक्षी क्रीमटी का विवरण देते हुए उन्होंने लिखा—"यह चिड़िया बसंत आगमन पर विवाह की तैयारी करती है। नर एक स्थान पर बैठकर गाना गाता है। वह पेड़ों की टहनियाँ आदि एकत्रित करके रखता है और यह दिखाने का प्रयत्न करता है, मानो उसे उपार्जन, संरक्षण एवं गृहस्थ निर्माण की कला की समुचित सामर्थ्य उपलब्ध है। मनुष्य को भी तो विवाह से पूर्व अपनी क्षमता की ऐसी ही परीक्षा कर लेनी चाहिए, यदि उसमें उतनी योग्यता न हो, तो विवाह की जिम्मेदारी वहन करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य मादा क्रीमटी नर के पास से गुजरती है और उसकी योग्यता परख लेती है, तभी उसका प्रणय स्वीकार करती है। कई दिन मादा परखती रहती है, कहीं उसे झूठे प्रलोभन तो नहीं दिए जा रहे हैं। जब पूरा विश्वास हो जाता है, तभी नर-मादा दोनों मिलकर घोंसला बनाने की तैयारी करते हैं। अंडे सेने का काम भी दोनों मिल-जुलकर बारी-बारी से करते हैं।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जो यह बताते हैं कि संसार में जो भी शरीर और प्रकृति है। चेतना सबमें एक है, मनुष्य की यदि कुछ विशेषता है तो यही कि वह उसमें विवेक भी है और वह अपनी चेतना को समझने और उसे संपूर्ण प्राणियों की आत्मचेतना के साथ जोड़ते हुए विश्व-विराट् की अनुभूति की क्षमता से संपन्न है, यदि वह इस उद्देश्य को पूरा कर लेता है, तो इसी नर शरीर से नारायण जैसी पूर्णता में परिणत हो सकता है।

❐ ❐

पता-
गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराञ्चल) २४९४११
फोन ०१३३४-२६०६०२ फैक्स २६०८६६
E-mail : Shail@del2.vsnl.net.in
Website: www.gayatripariwar.org

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org